श्री ऋषभदेव विधान
(वृहत्)

रचयित्री
गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 467
ISBN-978-93-84003-78-4

श्री ऋषभदेव विधान

(वृहत्)

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, दिव्य शक्ति
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी पावन प्रेरणा से निर्मित 108 फुट उत्तुंग श्री ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अन्तर्गत श्री ऋषभदेव के योग निरोध की तिथि पौष सुदी पूर्णिमा (23 जनवरी 2016) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com
Website : www.jambudweep.org , www.encyclopediaofjainism.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2542	मूल्य
1100 प्रतियाँ	पौष सुदी पूर्णिमा, 23 जनवरी 2016	100/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादकः–
कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–
जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस बीसवीं सदी में नारियों में सर्वप्रथम ग्रंथ लेखन का कार्य करके 400 ग्रंथों का लेखन करके साहित्य भंडार को समृद्ध करने में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने 63 वर्ष के दीक्षित जीवन में निरन्तर श्रुत की आराधना करने वाली पूज्य माताजी की लेखनी अभी भी रुकी नहीं है तथा 82 वर्ष की अवस्था में भी लेखन कार्य करके नित्य नयी कृतियाँ उनकी लेखनी से प्रसूत हो रही हैं, जिनमें विभिन्न स्तोत्र पाठ, स्वाध्याय के ग्रंथ एवं पूजा विधान आदि हैं। भक्ति मार्ग को प्रशस्त करने वाली पूजाओं में भी पूज्य माताजी उस अनुयोग संबंधी संपूर्ण विषयवस्तु को गागर में सागर की तरह समाहित करने में अत्यन्त निष्णात हैं। माताजी द्वारा रचित अनेक छोटे–बड़े विधानों को करके लोग भक्ति सरिता में अवगाहन करके आनंद की अनुभूति करते हैं।

श्रावकों के षट्कर्तव्य आचार्यों ने बताए हैं—

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां, षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान गृहस्थों को प्रतिदिन करते रहना चाहिए जिससे उनका गृहस्थ धर्म सार्थक माना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित करके नित्य नई कृतियाँ पाठकों तक पहुँचाने का सौभाग्य दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों को प्राप्त होता है जो हमारे लिये गौरव की बात है। मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पूज्य माताजी ने यह ऋषभदेव विधान (वृहत्) रचकर सभी भक्तों को 108 फुट उत्तुंग ऋषभदेव की भक्ति करने का सौभाग्य प्रदान किया है।

पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें और आगे भी इसी तरह अपने ज्ञान से भक्तों को सिंचित करती रहें। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यह जिनेन्द्र देव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भगवान ऋषभदेव इस कर्मयुग के प्रथम तीर्थंकर थें। इन्होंने अयोध्या में जन्म लेकर प्रजा को असि, मषि आदि षट् क्रियाएं बताकर जीवन जीने की कला सिखाईं। पुनः राज्य संचालित करके प्रयाग में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली और एक हजार वर्ष की तपस्या के पश्चात् इन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। उसके पश्चात् इन्होंने दिव्यध्वनि से जगत के जीवों को संबोधन प्रदान किया और आयु के अंत में कैलाश पर्वत से कर्मों का नाश करके मोक्ष प्राप्त किया।

जैन समाज सर्वोच्च साध्वी दिव्यशक्ति, चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका परम पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी की पावन प्रेरणा से 99 करोड़ महामुनियों की निर्वाणस्थली मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर 108 फुट उत्तुंग श्री ऋषभदेव की विशालकाय जिनप्रतिमा का निर्माण पूर्ण होकर वीर निर्वाण संवत् 2542 (माघ शुक्ला तृतीया से दशमी (11 से 17 फरवरी 2016) में इस प्रतिमा का अन्तर्राष्ट्रीय पंचकल्याणकप्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव हो रहा है। इस उपलक्ष्य में पूज्य माता जी ने ऋषभदेव के चरणों में नूतन प्रति श्री ऋषभदेव विधान (वृहत्) रचकर अर्पण किया है। इस विधान की रचना के पूर्व पूज्य माता जी ने श्री ऋषभदेव भगवान की भक्ति में श्री ऋषभदेव विधान लघु एवं दीर्घ तथा ऋषभदेव समवसरण विधान रचकर प्रदान किया है। इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण में श्री ऋषभदेव स्तोत्र छन्द सहित (एकाक्षरी से अष्टाक्षरी तक में निबद्ध) संस्कृत एवं ऋषभदेव स्तुति पद्य में भी दिया है। जैसे -

श्री छन्द- (1 अक्षरी)

ऊँ, मां। सोऽव्यात्।1।।

स्त्री छन्द- (2 अक्षरी)

जैनी, वाणी। सिद्धिं, दद्यात् ।।2।।

मंगलाचरण के पश्चात् पूजा नं. 1 में श्री ऋषभदेव की पूजा है इसमें प्रथम कोष्ठक में 46 गुणों के 46 अर्घ्य, 18 दोष रहित के 18 अर्घ्य, सरस्वती माता का 1 अर्घ्य, केवलज्ञान महालक्ष्मी का 1 अर्घ्य, गोमुख यक्ष का 1 अर्घ्य, चक्रेश्वरी यक्षी का 1 अर्घ्य एवं 48 विध संकट निवारक 48 अर्घ्य, सब मिलाकर 116 अर्घ्य एवं 3 पूर्णार्घ्य हैं।

पूजा नं. 2 श्री गणधर पूजा में द्वितीय कोष्ठक में चौरासी गणधर गुरु सेवित 84 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य हैं।

पूजा नं. 3 सर्वसाधु में तृतीय कोष्ठक में 7 अर्घ्य, श्री भरत स्वामी का 1

अर्घ्य, श्री बाहुबली स्वामी का 1 अर्घ्य, श्री अनंतवीर्य आदि 98 सिद्ध परमेष्ठी का 1 अर्घ्य, श्री ऋषभदेव के पौत्र-923 सिद्ध परमेष्ठी का 1 अर्घ्य, सब मिलाकर 40 अर्घ्य एवं 4 पूर्णार्घ्य हैं।

पूजा नं. 4 आर्यिका पूजा में चतुर्थ कोष्ठक में 3 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं। पूजा नं. 5 से 14 तक सहस्रनाम मंत्र पूजा में पंचम कोष्ठक से त्रयोदश कोष्ठक तक 100-100 अर्घ्य एवं चतुर्दश कोष्ठक में 108 अर्घ्य सब मिलाकर 1008 अर्घ्य एवं 10 पूर्णार्घ्य हैं।

पूजा नं. 15 में श्री ऋषभदेव सिद्ध भगवान पूजा में पंचदश कोष्ठक में 8 अर्घ्य एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं इस प्रकार कुल मिलाकर इस विधान में 15 पूजा 116+ 84+ 40+ 3+1008+8=1259 अर्घ्य, 21 पूर्णार्घ्य एवं 16 जयमालायें हैं। इस विधान की अंतिम पूजा की जयमाला में पूज्य माता जी ने बहुत ही सुन्दर भाव लिखे हैं-

प्रभु आपने जीने की कला सबको सिखाई।
असि मसि कृषि वाणिज्य आदि क्रिया बताई।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
जिनधर्म निधि पाय मैं धनवान हो गया।।

इसके बाद इस श्री ऋषभदेव वृहत् विधान में बड़ी जयमाला भी दी है जिसमें पूज्य माता जी ने गर्भकल्याणक से लेकर मोक्षकल्याणक तक का बहुत सुन्दर वर्णन किया है–

प्रभु गर्भकल्याणक महाउत्सव विधि करें।
माता पिता की भक्ति से पूजन विधी करें।।
हे नाथ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठे।
इन्द्रासनों के कम्प से आश्चर्य हो उठे।।

इस विधान की प्रशस्ति में पूज्य माता जी ने लिखा है कि वीर नि. संवत् 2519 में शरद पूर्णिमा के दिन भगवान ऋषभदेव विधान की रचना की थी पुनः इस विधान को वृहत् रूप देते हुए वीर नि. सं. 2542 में मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर यह रचना पूर्ण की है। यह विधान सभी भव्य जीवों के लिए मंगलकारी होवे एवं सभी प्रकार की सिद्धि को देने वाला होवे, ऐसी मंगल भावना व्यक्त की है।

प्रशस्ति के बाद श्री ऋषभदेव भगवान की, श्री ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या की एवं श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के श्री ऋषभदेवगिरि की मंगल आरती है। आरती के पश्चात् ऋषभदेव एवं मांगीतुंगी से सम्बन्धित कुछ भजन भी दिए हैं।

यह विधान करने, कराने वाले सभी महानुभावों के लिए सुख शान्ति एवं समृद्धि को प्रदान करे, यही मंगल भावना है एवं विधान रचयित्री परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की भगवान से मंगल प्रार्थना है।

दो शब्द

—आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश भयोपशान्त्यैः शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमान में पीछीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीण हो जाते हैं तो उनकी पूजा, भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.–6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है–

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पापसंघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, दिव्यशक्ति आदि अनके उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर का शीघ्र ही श्रुतज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

हार्दिक उद्‌गार

–ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नमः श्री वर्धमानाय, निर्धूत कलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्विद्या दर्पणायते।।

बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज हुए हैं। जिनकी चर्या चतुर्थकालीन सम मुनियों के समान थी। इनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम पाकर, स्वनाम को सार्थक करते हुए परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करके, ग्रंथों का खूब स्वाध्याय करके, अपने ज्ञान को परिपक्व करके 'सहस्रनाम मंत्र' की रचना से अपनी लेखनी का शुभारम्भ करके अब तक छोटे–बड़े सभी ग्रंथों को मिलाकर 400 ग्रंथों की रचना की है।

आज के वैज्ञानिक युग में पारस एवं जिनवाणी टी. वी. चैनल के माध्यम से लोग घर बैठे पूज्य माताजी के मुखारविन्द से प्रतिदिन ज्ञानामृत का पान करते हैं। जब वे हस्तिनापुर आकर पूज्य माताजी का दर्शन करते हैं, तो गद्‌गद् होकर कहते हैं कि माताजी हम तो आपके शुद्ध शास्त्रीय, आगमानुसार प्रवचन सुनकर धन्य हो गए।

वास्तव में पूज्य माताजी ने भगवान महावीर की दिव्यध्वनि से निकली द्वादशांग वाणी को जिन्हें पूर्वाचार्यों ने ग्रंथरूप में लिपिबद्ध किया है उसी को आत्मसात करके, जन–जन के हिताय प्रवचन के द्वारा तथा ग्रंथों के द्वारा प्रदान कर रही हैं। अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट न्याय के ग्रंथ का अनुवाद करके पूज्य माताजी ने एक महान् कार्य किया है। विद्वद्‌वर्ग, युवावर्ग, बालवर्ग सभी के लिए पूज्य माताजी ने समयसार, नियमसार की टीका, कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज आदि विधान, प्रतिज्ञा, परीक्षा, जीवनदान आदि उपन्यास एवं बालविकास के 4 भाग, जैसी पुस्तकें लिखकर सर्वांगीण ज्ञान का प्रचार प्रसार किया है। जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर एवं विश्व की सबसे बड़ी 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की भक्ति में लिखा गया यह विधान अत्यन्त चमत्कारिक विधान है।

मेरा परम सौभाग्य है कि पूज्य माताजी की कुल परम्परा में जन्म लेकर, उन्हें गुरुरूप में पाकर और उनसे ज्ञानामृत को प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य किया है। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु के प्रति भक्ति को करते हुए अपनी नारी पर्याय को सफल करूँ यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना करते हुए, ज्ञान की भण्डार पूज्य माताजी के चरणों में कोटि–कोटि नमन करती हूँ।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त–परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)
जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना
माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती
आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्‌खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।
डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्‌गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्‌घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।
शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेदशिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण—जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा—हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?—भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., अमर चंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्री देवेन्द्र कुमार जैन पुत्र स्व. श्री कुन्थलाल जैन (दरियाबाद निवासी) रमेश पार्क, लक्ष्मीनगर, दिल्ली।

श्री ऋषभदेव विधान (वृहत्) में कुल पूजा, अर्घ्य एवं पूर्णार्घ्य की संख्या

पूजा नं.	अर्घ्य	पूर्णार्घ्य
(1) श्री ऋषभदेव पूजा	116	3
(2) श्री गणधर पूजा	84	1
(3) सर्व साधु पूजा	40	4
(4) आर्यिका पूजा	3	2
(5) सहस्रनाम मंत्र पूजा (पूजा नं. 5 से 14 तक)	1008	10
(6) श्री ऋषभदेव सिद्ध क्षेत्र भगवान पूजा	8	1
कुल पूजा-15	कुल अर्घ्य 1259	कुल पूर्णार्घ्य 21

श्री ऋषभदेव विधान (वृहत्) मण्डल का नक्शा

प्रथम कोष्ठक में-116
द्वितीय कोष्ठक में-84
तृतीय कोष्ठक में-40
चतुर्थ कोष्ठक में-3
पंचम कोष्ठक में-100
षष्ठम कोष्ठक में-101 से 200
सप्तम कोष्ठक में-201 से 300
अष्टम कोष्ठक में-301 से 400
नवम कोष्ठक में-401 से 500
दशम कोष्ठक में-501 से 600
एकादश कोष्ठक में-601 से 700
बारस कोष्ठक में-701 से 800
तेरस कोष्ठक में-801 से 900
चतुर्दश कोष्ठक में-901 से 1008
पञ्चदश कोष्ठक में-8
कुल अर्घ्य-1259

कुल पूजा-15, अर्घ्य-1259, पूर्णार्घ्य-21, जयमाला-16

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
(1)	मंगलाचरण-श्री ऋषभदेव स्तोत्र (संस्कृत)	1
(2)	श्री ऋषभदेव स्तुति पद्य	3
(3)	पूजा नं.1-श्री ऋषभदेव पूजा	5
(4)	पूजा नं.2-श्री गणधर पूजा	39
(5)	पूजा नं.3-सर्व साधु पूजा	63
(6)	पूजा नं.4-आर्यिका पूजा	73
(7)	पूजा नं. 5 से 14 तक सहस्रनाम मंत्र पूजा	81 से 234
(8)	पूजा नं. 15-श्री ऋषभदेव सिद्ध भगवान पूजा	252
(9)	बड़ी जयमाला	263
(10)	प्रशस्ति	265
(11)	श्री ऋषभदेव भगवान की मंगल आरती	267
(12)	श्री ऋषभदेव जनमभूमि अयोध्या की मंगल आरती	268
(13)	श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के श्री ऋषभदेवगिरि की मंगल आरती	269
(14)	भजन - विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा.....	270
(15)	भजन - सारे जग में तेरी धूम.....	271
(16)	भजन - सबसे बड़ी मूर्ति का निर्माण हो गया....	272

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

श्री ऋषभदेव विधान

(वृहत्)

मंगलाचरण

श्री ऋषभदेव स्तोत्र

श्रीछन्दः—(1 अक्षरी)

ॐ, मां। सोऽ-व्यात्।।1।।

स्त्रीछन्दः—(2 अक्षरी)

जैनी, वाणी। सिद्धिं, दद्यात्।।2।।

केसाछन्दः—(3 अक्षरी)

गणीन्द्र!, त्वदंघ्रिं। नमामि, त्रिकालं।।3।।

मृगीछन्दः—(3 अक्षरी)

श्री-जिनैः, संततं। मे मनः, पूयताम्।।4।।

नारीछन्दः—(3 अक्षरी)

श्री-देवो, नाभेयः। वंदेऽहं, तं मूर्ध्ना।।5।।

कन्याछन्दः—(4 अक्षरी)

पूः साकेता, पूता जाता। त्वत्सूतेः सा, सेंद्रैर्मान्या।।6।।

व्रीडाछन्दः—(4 अक्षरी)

महासत्यां, मरुदेव्यां। सुतोऽभूस्त्वं, जगत्पूज्यः।।7।।

लासिनीछन्दः—(4 अक्षरी)

युगादिजो, जिनेश्वरः। ददातु मे, शिवश्रियं।।8।।

सुमुखीछन्दः—(4 अक्षरी)

नाभिनृपः, तेऽस्ति पिता। आदिजिनः, पातु मम।।9।।

सुमतिछन्दः—(4 अक्षरी)

सुखकारी, भवहारी। पुरुदेवो, वस मेऽन्तः।।10।।

समृद्धिछन्दः—(4 अक्षरी)

ज्ञानसिंधुं, सर्वबंधुं। सर्व सिद्ध्यै, नौमि नित्यं।।11।।

पंक्तिछन्दः—(5 अक्षरी)

हाटकवर्णं, सद्गुण-पूर्णम्।
सिद्धिवधूस्त्वां, सा स्म वृणीते।।12।।

शशिवदनाछन्दः—(6 अक्षरी)

मुनिनुतपादः, त्रिभुवननाथः।
विगलितमोहः, निजसुखमाप्नोत्।।13।।

मदलेखाछंदः—(7 अक्षरी)

देवेन्द्रैः परिपूज्यो, योगीन्द्रैरनुचिन्त्यः।
चक्रेशैरभिवंद्यो, वंदे तं वृषभेशम्।।14।।

अनुष्टुप्छन्दः—(8 अक्षरी)

आषाढेऽसितपक्षे स्याद्, द्वितीया तिथिरुत्तमा।
सर्वार्थसिद्धितश्च्युत्वा, मातुर्गर्भे समागतः।।15।।
नवम्यां चैत्रकृष्णे त्वं, जन्म प्राप्य प्रजापतिः।
ब्रह्मा सृष्टा विधाताभूद्, युगादौ तीर्थनायकः।।16।।
चैत्रकृष्णे नवम्यां हि, स्वयंभूर्दीक्षितोऽभवत्।
फाल्गुनेऽसितपक्षेऽभू-देकादश्यां सुकेवली।।17।।

माघकृष्णे चतुर्दश्यां, कैलाशे गिरिमस्तके।
निर्वृतिं परमां लब्ध्वा, सिद्धिकांतापति-र्बभौ।।18।।

आयुश्चतुरशीत्यामा, लक्षपूर्व-प्रमाणकः।
इक्ष्वाकुवंशभास्वान् यो, पुरुदेवो पुनातु मे।।19।।

द्विसहस्रकरोत्तुंगो, वृषभो वृषलाञ्छनः।
जीयात् त्रैलोक्यनाथोऽसौ, स्याद्वादामृतशासनः।।20।।

शार्दूलविक्रीडितछन्दः—(19 अक्षरी)

यः क्रोधादिरिपून् विजित्य सहसा, स्वात्मोत्थ-सौख्यामृतं।
पायं पायमहर्निशं भवभयात्, स्वात्मानमुद्धृत्य वै।।
त्रैलोक्याग्रपदे धृतश्च, निवसत्यद्याप्यनंतावधि।
दिश्यात् श्रीऋषभो स एष भगवान्, मे ज्ञानमत्यै श्रियं।।21।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री ऋषभदेव स्तुति

-शंभुछंद-

हे आदिनाथ! हे आदीश्वर! हे ऋषभ जिनेश्वर! नाभिललन!
पुरुदेव! युगादि पुरुष ! ब्रह्मा, विधि और विधाता मुक्तिकरण।।
मैं अगणित बार नमूँ तुमको, वन्दूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
स्वात्मैक परम आनन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करूँ।।1।।

आषाढ़ वदी दुतिया तिथि थी, मरूदेवी गर्भ पधारे थे।
श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ चैत्र वदी नवमी तिथि थी, भगवान यहाँ जब थे जन्में।
तब मेरू सुदर्शन के ऊपर, अभिषेक किया था इन्द्रों ने।।2।।

वो घड़ी धन्य थी धन्य दिवस, धन धन्य अयोध्या नगरी थी।
श्री नाभिराज भी धन्य तथा, तब धन्य प्रजा भी सगरी थी।।
प्रभु ने असि मसि आदिक किरिया, उपदेशी आदि विधाता थे।
थे युग के आदिपुरुष ब्रह्मा, श्रावक मुनि मार्ग विधाता थे।।3।।

थे कनक वर्ण धनु पंच शतक, तनु वे युग के अवतारी थे।
आयू चौरासी लाख पूर्व, धारक वृष लक्षण धारी थे।।
सब परिग्रह ग्रंथी को तजकर, निर्ग्रंथ दिगम्बर रूप धरा।
वह चैत्र वदी नवमी शुभ थी, जिस दिन प्रभु ने कचलोच करा।।4।।

षट् मास योग में लीन रहे, लंबित भुज नासादृष्टी थी।
निज आत्म सुधारस पीते थे, तन से बिल्कुल निर्ममता थी।।
फिर ध्यान समाप्त किया प्रभु ने, आहार विधी बतलाने को।
भवसिंधू में डूबे जन को, मुनिमार्ग सरल समझाने को।।5।।

षट् मास भ्रमण करते-करते, प्रभु हस्तिनागपुर में आये।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस तभी, आहारदान दे हर्षाये।।
रत्नों की वर्षा हुई गगन से, सुरगण मिल जयकार किया।
धन-धन्य हुई वैशाख सुदी, अक्षय तृतिया आहार हुआ।।6।।

जब आप क्षपक श्रेणी चढ़कर, घाती पर ध्यान चक्र छोड़ा।
एकादशि फाल्गुन कृष्णा थी, केवलश्री से नाता जोड़ा।।
त्रिभुवन में ज्ञान लता फैली, भविजन को छाया सुखद मिली।
फिर माघ कृष्ण चौदश के दिन, मुक्तिश्री प्रभु को स्वयं मिली।।7।।

क्रोधादिक रिपु को जीत प्रभो, स्वात्मा से जनित सुखामृत को।
पीकर अत्यर्थतया निशदिन, भवदधि से निकाला आत्मा को।।
त्रिभुवन के मस्तक पर जाकर, अब तक व अनंते कालों तक।
ठहरेंगे वे वृषभेश! मुझे, शुभ ''ज्ञानमती'' श्री देवें झट।।8।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
(मंडल के ऊपर पुष्पांजलि क्षेपण करें)

पूजा नं.-1

श्री ऋषभदेव पूजा

अथ स्थापना

तर्ज–ऐ माँ तेरी सूरत से अलग...

जिनवर की शरण में आये हैं, तन मन धन अर्पण कर देंगे।
भगवान-भगवान तेरी भक्ती के लिये, जीवन भी समर्पण कर देंगे।।टेक.।।

इस नगरि अयोध्या की, धनपति ने रचना की।
माता के आंगन में, रत्नों की वर्षा की।।
आदीश्वर तीर्थंकर प्रभु का, शिर नत कर वंदन कर लेंगे।।भग.।।

श्री ऋषभदेव का हम, आह्वानन करते हैं।
निज हृदय कमल में प्रभु, स्थापन करते हैं।।
हम सन्निधीकरण विधी करके, प्रभुपद का अर्चन कर लेंगे।।भग.।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रद! श्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रद! श्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रद! श्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–शंभु छंद

पुरुदेव सुयश सम उज्ज्वल जल, लेकर झारी भर लाये हैं।
निज समरस सुख पाने हेतु, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव गुणों सम अतिशीतल, चंदन घिस कर ले आये हैं।
निज की शीतलता पाने को, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।

श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव सौख्य सम खण्ड रहित, उज्ज्वल तंदुल ले आये हैं।
निज सुख अखण्ड पाने हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव गुणों सम अति सुगंध, पुष्पों को चुनकर लाये हैं।
निज गुण सुगंधि पाने हेतू, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव पुष्टि सम नानाविध, पकवान बनाकर लाये हैं।
निज आत्म तृप्ति पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव ज्ञान सम ज्योतिर्मय, कर्पूर जलाकर लाये हैं।
निज ज्ञान ज्योति पाने हेतू, हम आरति करने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव गुणों की सुरभि सदृश, वर धूप सुगंधित लाये हैं।
निज आत्मसुरभि पाने हेतू, अग्नी में धूप जलाये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव सुखामृत सदृश मधुर, रसभरे बहुत फल लाये हैं।
निज मोक्ष सुफल हेतू, भगवन्! फल आज चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव गुणों के सम अनर्घ्य, यह अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
निज तीन रत्न पाने हेतू, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं।।
श्री ऋषभदेव के चरण कमल, हम मन वच तन से नित ध्यावें।
निज आत्मसिद्धि को पा करके, परमानंदामृत सुख पावें।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद

सरयू नदी का जल भरें, हम स्वर्ण भृंग में।
त्रयधार दे धारा करें, प्रभु पादकमल में।।
तिहुंलोक में सुख शांति हो, यह भावना करें।
हो मन पवित्र मेरा यही याचना करें।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला वकुल गुलाब सुरभि पुष्प चुन लिये।
प्रभु पाद पंकरूह में कुसुम अंजली किये।।
धन धान्य सौख्य संपदा स्वयमेव आ मिले।
भक्ती से शक्ति हो प्रगट शिवयुक्ति भी मिले।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

छ्यालीस गुणों के 46 अर्घ्य–

–सोरठा–

जिनवर गुणमणि तेज, सर्वलोक में व्यापता।
हो मुझ ज्ञान अशेष, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

श्री आदिनाथ के जन्म समय से, दश अतिशय सुखदाता हैं।
उनके तनु में नहिं हो पसेव, यह अतिशय गुण मन भाता है।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।1।।

ॐ ह्रीं निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माता की कुक्षी से जन्मे, औदारिक तनु मानव का है।
फिर भी मलमूत्र नहीं तुममें, यह अतिशय पुण्य उदय का है।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।2।।

ॐ ह्रीं मलरहितसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तन में श्वेत रुधिर पयसम, यह अतिशय तीर्थंकर के हो।
अतएव मात सम त्रिभुवन जन, पोषण करते उदारमन हो।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।3।।

ॐ ह्रीं क्षीरसमरुधिरत्वसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शन-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संहनन सुवज्रवृषभ-नाराच कहाता शक्ति धरे।
यह अन्य जनों को सुलभ तथापी, तुममें अतिशय नाम धरे।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रऋषभनाराचसंहननसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तनु में एक एक अवयव, सब माप सहित अतिशय सुन्दर।
यह समचतुरस्र नाम का ही, संस्थान कहा त्रिभुवन मनहर।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।5।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शन-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में उपमारहित रूप, अतिसुन्दर अणुओं से निर्मित।
सुरपति निज नेत्र हजार बना, प्रभु को निरखे फिर भी अतृप्त।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।6।।

ॐ ह्रीं अनुपमरूपसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव चंपक की उत्तम सुगंधि, सम देह सुगंधित प्रभु का है।
यह अतिशय अन्य मनुज तनु में, नहिं कभी प्राप्त हो सकता है।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।7।।

ॐ ह्रीं सौगन्ध्यसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ एक हजार आठ लक्षण, प्रभु तनु का अतिशय कहते हैं।
यह तीन जगत में भी उत्तम, अतएव इन्द्र सब नमते हैं।।

मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रशुभलक्षणसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु में अनंत[1] बल वीर्य रहे, जन्मत ही यह अतिशय प्रगटे।
अतएव हजार हजार बड़े, कलशों से न्हवन भि झेल सकें।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।9।।

ॐ ह्रीं अनंतबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्दर्शन-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित सुमधुर वाणी प्रभु की, जन मन को अतिशय प्रिय लगती।
त्रिभुवन हितकारी भावों से, यह अद्भुत वचन शक्ति मिलती।।
मैं पूजूँ इस अतिशययुत को, वे तीर्थंकर पदधारी हैं।
उन त्रिभुवन गुरु की पूजा ही, भव भय संकट परिहारी है।।10।।

ॐ ह्रीं प्रियहितमधुरवचनसहजातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्दर्शनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

केवलज्योति प्रगट होते इक[2], दश अतिशय होते हैं।
चारों दिश में सुभिक्ष होवे, चउ चउ सौ कोसों में।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञानफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान प्रगट होते ही जिनवर, गगन गमन करते हैं।
बीस हजार हाथ ऊपर जा, अधर सिंहासन पर हैं।।

---

1. ''अणंतबलविरियं'' तिलोयपण्णत्ति अ.-4।

2. भगवान का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में ही रहता है फिर भी सभा में सबको अपनी-अपनी तरफ मुख दिखते हैं। यह ''चतुर्मुख'' नाम का अतिशय है।

घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।12।।

ॐ ह्रीं गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के गमन शरीर आदि से, प्राणी वध नहिं होवे।
करुणासिंधू अभय दाता को, पूजत निर्भय होवें।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटीपूर्व वर्ष आयू में, कुछ कम ही वर्षों में।
केवलि का उत्कृष्ट काल यह, बिन भोजन है तन में।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव मनुज तिर्यंच आदि उपसर्ग नहीं कर सकते।
केवलि प्रभु के कर्म असाता, साता में ही फलते।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की गोल सभा में, चहुंदिश प्रभु मुख दीखे।
चतुर्मुखी ब्रह्मा यद्यपि ये, पूर्व उदङ् मुख तिष्ठे।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक पुद्गल तनु भी, छाया नहीं पड़े हैं।
केवलज्ञान सूर्य होकर भी, सबको छाँव करे हैं।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।17।।

ॐ ह्रीं छायारहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों की पलकें नहिं झपकें, निर्निमेष दृष्टि है।
जो पूजें वे भव्य लहें तुम, सदा कृपादृष्टि हैं।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।18।।

ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में जितनी विद्या हैं, सबके ईश्वर प्रभु हैं।
जो भवि पूजें वे सब विद्या, अतिशय प्राप्त करे हैं।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।19।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केश और नख बढ़ें न प्रभु के, चिच्चैतन्य प्रभू हैं।
दिव्यदेह को धारण करते, त्रिभुवन एक विभू हैं।।
घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुःख से छूटूँ।।20।।

ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यग्ज्ञान फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम दिव्यध्वनी[1] त्रय संध्या, मुहूर्त त्रय त्रय खिरती।
चारकोश तक सुनते भविजन, सब भाषामय बनती।।

---

1. तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में इस दिव्यध्वनि को केवलज्ञान का अतिशय मानकर केवलज्ञान के ग्यारह अतिशय गिनाये हैं और देवोपनीत अतिशय तेरह ही माने हैं। अन्यत्र ग्रंथों में केवलज्ञान के दश और देवकृत चौदह अतिशय माने हैं। यहाँ तिलोयपण्णत्ति के आधार से लिया है।

घातिकर्म के क्षय से अतिशय, प्रगटे उनको पूजूँ।
मुझमें केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दु:ख से छूटूँ।।21।।

ॐ ह्रीं अक्षरानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्यध्वनिकेवलज्ञानातिशय गुणमंडिताय अतिशायिसम्यग्ज्ञान-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

प्रभु के श्रीविहार में दश दिश, संख्यात कोश तक असमय में।
सब ऋतु के फल फलते व फूल, खिल जाते हैं वन उपवन में।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादिशोभिततरूपरिणाम-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंटक धूली को दूर करे, जनमन हर सुखद पवन बहती।
प्रभु के बिहार में बहुत दूर तक, स्वच्छ हुई भूमि दिखती।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।23।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलकंटकादि-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव पूर्व के बैर छोड़, आपस में प्रीति से रहते।
इस अतिशय पूजत कलह, वैर ईर्ष्यादि दोष निश्चित टलते।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।24।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभाव-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथिवी दर्पण तल सदृश स्वच्छ, अरु रत्नमयी हो जाती है।
जहं जहं प्रभु विहरण करते हैं, वह भूमि रम्य मन भाती है।।

तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।25।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमही-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर मेघ कुमर सुरभित शीतल, जल कण की वर्षा करते हैं।
इंद्राज्ञा से सब देववृंद, प्रभु का अतिशय विस्तरते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।26।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टि-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाली जौ आदिक धान्य भरित, खेती फल से झुक जाती है।
सब तरफ खेत हों हरे-भरे, यह महिमा सुखद सुहाती है।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।27।।

ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालि-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्-चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन मन परमानन्द भरें, जहं जहं प्रभु विचरण करते हैं।
मुनिजन भी आत्म सुधा पीकर, क्रम से शिवरमणी वरते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।28।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानन्दत्व-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकुमार जिन भक्तीरत, सुख शीतल पवन चलाते हैं।
जिन विहरण में अनुकूल पवन, उससे जन व्याधि नशाते हैं।।

तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।29।।

ॐ ह्रीं अनुकूलविहरणवायुत्व-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुँये सरोवर बावड़ियाँ, निर्मल जल से भर जाते हैं।
इस चमत्कार को देख भव्य, निज पुण्य कोष भर लाते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।30।।

ॐ ह्रीं निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादि-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश धूम्र उल्कादि रहित, अतिस्वच्छ शरदऋतु सम होता।
जिनवर भक्ती वन्दन करते, भविजन मन भी निर्मल होता।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।31।।

ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलाकाश-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन ही रोग शोक संकट, बाधाओं से छुट जाते हैं।
जहं जहं प्रभु विहरण करते हैं, सर्वोपद्रव टल जाते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्व-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायि-सम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेन्द्र चार दिश मस्तक पर, शुचि धर्मचक्र धारण करते।
उनमें हजार आरे अपनी, किरणों से अतिशय चमचमते।।
तीर्थंकर जिनका यह माहात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूँ रुचि से मुझको यह, परमानन्दामृतदायी है।।33।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रमस्तकोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टय-देवोपनीतातिशयगुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिश विदिशा में छप्पन सुवर्ण, पंकज खिलते सुरभी करते।
इक पाद पीठ मंगल सुद्रव्य, पूजन सुद्रव्य सुरगण धरते।।
प्रभु के विहार में चरण तले, सुर स्वर्ण कमल रखते जाते।
इन तेरह सुरकृत अतिशय को, हम पूजत ही सम सुख पाते।।34।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरदेवचरणकमलतलस्वर्णकमलरचना-देवोपनीतातिशय-गुणमंडिताय अतिशायिसम्यक्चारित्रफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

वर प्रातिहार्य सु आठ में, तरुवर अशोक विराजता।
मरकत मणी के पत्र पुष्पों, से खिला अतिभासता।।
वृषभेश की ऊँचाई से, बारह गुणे तुंग फरहरे।
इस युत प्रभु की अर्चना, कर शोक सब मन का हरें।।35।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शीश पर त्रय छत्र शोभें, मोतियों की हैं लरें।
प्रभु तीन जग के ईश हैं, यह सूचना करती फिरें।।
क्या चन्द्रमा नक्षत्रगण, को साथ ले भक्ती करें।
इस कल्पनायुत छत्रत्रययुत, की सदा अर्चा करें।।36।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल फटिक मणि से बना, बहुरत्न से चित्रित हुआ।
जिननाथ सिंहासन दिपे, निज तेज से नभ को छुआ।।
इस पीठ पर तीर्थेश, चतुरंगुल अधर ही राजते।
इस प्रातिहार्य समेत जिन को, जन पूजते निज भासते।।37।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर मुनीगण देव देवी, चक्रि नर पशु आदि सब।
निज निजी कोठे बैठ अंजलि, जोड़ते सुप्रसन्न मुख।।
इन बारहों गण से घिरे, वृषभेश त्रिभुवन सूर्य हैं।
इस प्रातिहार्य समेत जिन को, जजत जन जग सूर्य हैं।।38।।

ॐ ह्रीं द्वादशगणपरिवेष्टितमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभन-फलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आइये जिन शरण में, मानों कहे यह दुंदुभी।
सब देवगण मिलकर बजाते, बहुत बाजे दुंदुभी।।
इस प्रातिहार्य समेत जिन को, वाद्य ध्वनि से पूजते।
सुरगण बजावें वाद्य उनके, सामने बहु भक्ति से।।39।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगण गगन से कल्पतरु के, पुष्प बहु वर्षा करें।
यह वर्ण वर्ण सुगंध खिलते, पुष्प जन मन भा रहें।।
इस प्रातिहार्य समेत जिन को, सुमन अर्घ्य लिये श्री
अतिशय सुयश सुख प्राप्तकर, सब अशुभ अपयश से बचूँ।।40।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कोटि भास्कर तेज हरता, 'प्रभामण्डल' नाथ का।
जन दर्श से निज सात भव को, देखते उसमें सदा।।
इस प्रातिहार्य समेत जिन को पूजहूँ अतिचाव से।
निज आत्मतेज अपूर्व पाकर, छूटहूँ भव दाव से।।41।।

ॐ ह्रीं भामण्डलमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर यक्षगण चौसठ चंवर, जिनराज पर ढोरें सदा।
ये चन्द्रसम उज्ज्वल चंवर, हरते सभी मन की व्यथा।।
इस प्रातिहार्य समेत जिन को, पूजहूँ श्रद्धा धरे।

जो जजें चामर ढोरकर, वे उच्च पद के सुख भरें।।42।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडिताय वरप्रातिहार्यशोभनफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय अर्घ्य

नाराच छंद

तीनलोक तीनकाल की समस्त वस्तु को।
एक साथ जानता अनंत ज्ञान विश्व को।।
जो अनन्तज्ञान युक्त इन्द्र अर्चते जिन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनन्तज्ञान हेतु मैं।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक औ अलोक के समस्त ही पदार्थ को।
एक साथ देखता अनन्त दर्श सर्व को।।
जो अनन्त दर्श युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनन्त दर्श हेतु मैं।।44।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधहीन जो अनन्त सौख्य भोगते सदा।
हो भले अनन्तकाल आवते न ह्यां कदा।।
वे अनन्त सौख्य युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा तिन्हें अनन्त सौख्य हेतु मैं।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतसौख्यगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अनन्त वीर्यवान अंतराय को हने।
तिष्ठते अनन्तकाल श्रम नहीं कभी उन्हें।।
जो अनन्त शक्ति युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।

पूजहूँ सदा तिन्हें अनन्तवीर्य हेतु मैं।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणसमन्विताय तथैवफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य–शंभु छंद

दश अतिशय जन्म समय से ग्यारह, केवलज्ञान उदय से हों।
देवों कृत तेरह अतिशय हों, चौंतिस अतिशय सब मिल के हों।।
वर प्रातिहार्य हैं आठ कहें, आनंत्य चतुष्टय चार कहें।
ये छ्यालिस गुण वृषभेश्वर के, हम पूजें वांछित सर्व लहें।।1।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशत्गुणसमन्विताय सर्वातिशायिफलप्रदाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अट्ठारह दोष रहित के 18 अर्घ्य

–सोरठा–

दोष अनंतानंत, त्रिभुवन जन में व्याप्त हैं।
आप किया उन अंत, कुसुमांजलि से पूजहूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भुजंगप्रयात छंद

क्षुधा व्याधि पीड़ा करे सर्व जन को।
ये आहार संज्ञा हरें घातिहर जो।।
प्रभो केवली के असाता उदय भी।
फलें सौख्य में मैं जजूँ नित उन्हें ही।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना से पिपासित सभी हैं।
प्रभो आपने स्वात्म अमृत पिया है।।
इसे नाशने हेतु प्रभु को जजूँ मैं।
सदा साम्य पीयूष रुचि से चखूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं तृषामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा दोष भीती सभी को सतावे।
प्रभू ने सभी भय डराकर भगाये।।
जजूँ सात भय नाश हेतू तुम्हीं को।
भजूँ सात उत्तम पर स्थान ही को।।3।।

ॐ ह्रीं भयमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाक्रोध अग्नी दहे सर्व जग को।
प्रभू ने महाशांति से नाशा उसको।।
इसी क्रोध आश्रित सभी दोष आते।
जजूँ आपको क्रोध को मूल नाशें।।4।।

ॐ ह्रीं क्रोधमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिता से अधिक दुःख चिन्ता करे है।
तनू स्वास्थ्य को हर महा दुख भरे है।।
इसे मूल से आपने नष्ट कीना।
जजूँ मैं न चिन्ता कभी हो हृदय मा।।5।।

ॐ ह्रीं चिंतामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा जर्जरी देह करके सुखावे।
इसे नाशकर मूल से सौख्य पावें।।

प्रभो केवली आपको ही जजूँ मैं।
इसे नाश के स्वात्म सुख को भजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं जरामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा राग संसार में ही भ्रमावे।
प्रभो आपमें राग मुक्ती दिलावे।।
तथापी तुम्हीं ने सभी राग नाशे।
जजूँ भक्ति से तो अशुभ राग भागे।।7।।

ॐ ह्रीं रागमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोह सम्राट् से सब दुःखी हैं।
इसे मूल से प्रभु उखाड़ा सुखी हैं।।
इसी मोह को नाश हेतू जजूँ मैं।
महा ध्वांत हर ज्ञान ज्योती भजूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं मोहमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करोड़ों भरे रोग इस देह में हैं।
प्रभू रोग को नाश करके सुखी हैं।।
विविध भांति के रोग नित कष्ट देते।
तुम्हें पूजते ये मुझे छोड़ देते।।9।।

ॐ ह्रीं रोगमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामल्ल मृत्यू ने त्रैलोक्य जीता।
इसे जीत तुम मुक्ति लक्ष्मी गृहीता।।
जजें आपको सर्व दुख के जयी हों।
वही लोक में शीघ्र मृत्युंजयी हो।।10।।

ॐ ह्रीं मृत्युमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पसीना न तन में प्रभू आपके हो।
प्रभो केवली आपके ये नहीं हो।।
इसे मूल से जो हरें वीतरागी।
उन्हीं को जजूँ मैं बनूँ सौख्यभागी।।11।।

ॐ ह्रीं स्वेदमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! एक क्षण में त्रयी लोक लोका।
नहीं खेद श्रम रंच भी आपको था।।
विषादो महादोष जीता तुम्हीं ने।
नशे दोष मेरा जजूँ अर्घ से मैं।।12।।

ॐ ह्रीं विषादमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामद कहें आठविध या असंख्ये।
उन्हीं से लहें नीचगति जीव सब ये।।
हरें मान उनको सभी इन्द्र वंदे।
जजूँ आपको सर्व मद को विखंडे।।13।।

ॐ ह्रीं मदमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रती दोष से प्रीति हो इष्ट पर में।
इसे नाश निज में धरी प्रीति प्रभु ने।।
प्रभू केवली प्रीति नाहीं किसी में।
तथापी जगत् हित करो नित जजूँ मैं।।14।।

ॐ ह्रीं रतिमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुतूहलमयी विश्व को देख करके।
करें जो भि विस्मय हरें पूर्ण सुख वे।।
सभी कर्मकृत फेर आश्चर्य कैसा।।
जजूँ भक्ति से सौख्य हो आप जैसा।।15।।

ॐ ह्रीं विस्मयमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निद्रा के वश वो स्वयं को न देखें।
निजातम दरश पूर्ण को रोक ले ये।।
इसे नष्टकर सर्व जग को विलोका।
जजूँ मैं दरश प्राप्त होवे प्रभू का।।16।।

ॐ ह्रीं निद्रामहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतों दफे जन्म धर-धर दुःखी मैं।
न हो जन्म फिर से करूँ यत्न वो मैं।।
तुम्हीं ने पुनर्जन्म नाशा जगत में।
अतः पूजहूँ तुम चरण नाथ अब मैं।।17।।

ॐ ह्रीं जन्ममहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष से आकुलित चित्त होवे।
इसे नाशकर आपने कर्म धोए।।
यही दोष मुझको सदा दुःख देता।
जजूँ आपको ये भगे शीघ्र भीता।।18।।

ॐ ह्रीं अरतिमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य–शंभु छंद

इन दोष अठारह ने जग में, सबको दुःख देकर वश्य किया।
इनसे बच सका नहीं कोई, इन त्रिभुवन में अधिपत्य किया।।
जो इनको जीते वे 'जिनेन्द्र', सौ इन्द्रों से वंदित जग में।
मैं पूजूँ उनको अर्घ्य चढ़ा, हर दोष भरें गुण वे मुझमें।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टादशमहादोषरहिताय तथैवदोषनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

सरस्वती माता का अर्घ्य

जलादी लिये स्वर्ण पुष्पों सहित मैं।
करूँ अर्घ अर्पण सरस्वति चरण में।।
जजूँ तीर्थंकर दिव्यध्वनि को सदा मैं।
करूँ चित्त पावन नहा ध्वनि नदी में।।1।।

ॐ ह्रीं ऋषभदेवतीर्थंकरमुखकमलविनिर्गतसर्वभाषामयदिव्यध्वनि-स्वरूपासरस्वतीमात्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान महालक्ष्मी का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल लाऊँ।
जिनगुण लक्ष्मी की पूजा कर, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।
केवलज्ञान महालक्ष्मी को, नित पूजूँ हरषाऊँ।
सुख संपति सौभाग्य प्राप्त कर, शिवलक्ष्मी को पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं ऋषभदेवसमवसरणस्थितकेवलज्ञानमहालक्ष्म्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोमुख यक्ष का अर्घ्य

–दोहा–

दोहा-समवसरण में भक्तियुत, तीर्थंकर के पास।
यक्ष यक्षिणी नित रहे, उन्हें बुलाऊँ आज।।

–चाल शेर–

श्री आदिनाथ के निकट जो भक्ति से रहें।
'गोवदन' यक्ष नाम जिनका सूरिवर कहें।।
जिननाथ के शासन के देव आइये यहाँ।
निज यज्ञ भाग लीजिये सुख कीजिये यहाँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीऋषभदेवस्य शासनदेव गोमुखयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् पुष्पांजलिः।

इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चक्रेश्वरी यक्षी का अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

वृषभदेव के समवसरण में, 'चक्रेश्वरी' सुयक्षी।
सम्यग्दर्शन गुण से मंडित, खंडे सर्व विपक्षी।।
महायज्ञ पूजा विधान में, आवो आवो माता।
यज्ञभाग मैं अर्पण करता, करो सर्व सुख साता।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य शासनदेवि चक्रेश्वरी यक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् पुष्पांजलिः।
इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अड़तालिसविध संकट निवारक 48 अर्घ्य

दोहा

वर्तमान के बहुत विध, कष्ट स्वयं हो दूर।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भरपूर।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

शेर छंद

जब मेघ अतीवृष्टि से भूजलमयी करें।
नदियों की बाढ़ में बहें जन डूबकर मरें।।
जो भक्त आप पूजतें वे पुण्य योग से।
अतिवृष्टि अपने देश से वे दूर कर सकें।।1।।

ॐ ह्रीं अतिवृष्टि-उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

नहिं मेघ बरसते सभी जल के लिये तरसें।
पशु पक्षी मनुज प्यास से निज प्राण को तजें।।

ऐसे समय में आप की पूजा ही मेघ सम।
अमृतमयी जलवृष्टि से तर्पित करें जन मन।।2।।

ॐ ह्रीं अनावृष्टि-उपद्रवनाशनसमर्थाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्भिक्ष हो अकाल हो असमय में जन मरें।
भगवन्! तुम्हारी भक्ति से जन पाप परिहरें।।
होवे सुभिक्ष सब तरफ जब पुण्य घट भरें।
तब मेघ भी समय समय वर्षा सुखद करें।।3।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनाशनकराय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन से भरी तिजोरियाँ ताले लगा दिये।
डाकू लुटेरे चोर आये लूट ले गये।।
बहु श्रम से कमाया गया धन हानि जो होती।
प्रभु भक्ति से हानी न हो धन रक्षणा होती।।4।।

ॐ ह्रीं चोरलुंटकादि-उपद्रवनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो राज्यकर के हेतु ही अधिकारी राज्य के।
छापा या टैक्स आदि से धन लूट ले जाते।।
इस विध से राज्य भय से घिरें निर्धनी बनें।
प्रभु के चरणकमल भजें फिर से धनी बनें।।5।।

ॐ ह्रीं आयकरादिराज्यभयोपद्रवनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार श्रम करें फिर भी न धन बढ़े।
दारिद्र से उन सामने संकट बड़े बड़े।।
परिवार के पोषण में भी असमर्थ हो रहें।
वृषभेश की पूजा करें धन सम्पदा लहें।।6।।

ॐ ह्रीं दारिद्रदुःखविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु में ज्वरादि रोग हो पीड़ाएँ हों घनी।
बहु औषधि लेते भी व्याधियाँ हो चौगुनी।।
भगवान ऋषभदेव की जो अर्चना करें।
ज्वर शूल आदि रोग को वे क्षण में परिहरें।।7।।

ॐ ह्रीं ज्वरशूलरोगादिनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब पीलिया कुष्ठादि जलोदर भगंदरा।
नाना प्रकार रोग शोक हों भयंकरा।।
तुम नाम के जपे समस्त रोग नष्ट हों।
हे नाथ! आप भक्ति से जन पूर्ण स्वस्थ हों।।8।।

ॐ ह्रीं कामलाकुष्ठजलोदरभगंदरादिव्याधिनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध के नेत्र रोग हों अंधा करें यदि।
औषधि व शल्य चिकित्सा से हो न लाभ भी।
ऐसे समय में जो मनुष्य प्रभु शरण गहें।
हो नेत्र ज्योति स्वच्छ मन प्रसन्नता लहें।।9।।

ॐ ह्रीं नानाविधनेत्ररोगविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्राण को भी घातती कैंसर महाव्याधी।
अति कष्टदायि वेदना से हो न समाधी।।
तब भक्त आप मंत्र को जपते जो भाव से।
सब वेदना व व्याधि भी लगती हैं देह से।।10।।

ॐ ह्रीं प्राणघातिकैंसरमहाव्याधिविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृद् रोग से पीड़ित मनुज न पावते साता।
बहुधन करें खर्चा परन्तु बढ़ती असाता।।
जिनराज पादकमल की लेते यदी शरण।
हों पूर्ण स्वस्थ नहीं हो अकाल में मरण।।11।।

ॐ ह्रीं हृदयरोगपीड़ानिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों की जो निन्दा करें घृणा करें कभी।
वे हों कुरूप निंद्यरूप पावते तभी।।
मन में सदा दुःखी रहें यदि आप को यजें।
होवें सुरूप कामदेव सर्वसुख भजें।।12।।

ॐ ह्रीं कुरूपादिकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छन्द

स्त्री पुत्रादि स्वजन परिजन, जो अपने को अतिप्रिय होवें।
वे दूर बसें या मर जावें, तब इष्ट वियोग दुःखद होवे।।
उस समय चित्त संतप्त किये रोते विलाप करते प्राणी।
होते प्रसन्न क्षण भर में ही यदि मिल जावे प्रभु की वाणी।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणघातक-इष्टवियोगजदुःखनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु हों या प्रतिकूल स्वजन भार्या आदिक शत्रू सम हों।
इनका वियोग कैसे होवे ऐसी चिन्ता प्रतिक्षण मन हो।।
ऐसे अनिष्ट संयोगों से संतप्त हृदय प्रतिदिन रोवे।
जिनवर की पूजा करने से निश्चिन्त प्रसन्नमना होवें।।14।।

ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोगमहादुःखशातनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घर में या व्यापारों में भी मन के प्रतिकूल क्रियायें हों।
मानस पीड़ा होवे प्रतिदिन आकुलता हो व्याकुलता हो।।
प्रतिक्षण मनपीड़ा से तनु में, नानाविध रोग प्रगटता हो।
प्रभु की पूजा से आधि नशे, मन में अतिशय प्रफुल्लता हो।।15।।

ॐ ह्रीं सर्वमानसिकताविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से प्रिय भी वचन कहें फिर भी जन-जन अति क्रोध करें।
या जिह्वा में हो रोग विविध या गूँगे हों बहु दुःख भरें।।

इस विध वाचनिक कष्ट जो भी नश जाते प्रभुवर भक्ती से।
वचसिद्धि मिले सब जन वश हों, पूजा का फल मिलता विधि से।।16।।

ॐ ह्रीं सर्ववाचनिककष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुद्गल के परमाणु से निर्मित है काया अस्थिर है।
फिर भी इसमें कुछ पीड़ा हो आत्मा भी होता अस्थिर है।।
नानाविध कायिक कष्टों से छुटकारा पाते भाक्तिक जन।
हे नाथ! आपकी पूजा से सब मिट जाते जग के क्रन्दन।।17।।

ॐ ह्रीं नानाविधकायिककष्टशातनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वायुयान से गगन गमन करते ऊपर में उड़ जाते।
यदि अकस्मात् दुर्घटना हो ऊपर से नीचे गिर जाते।।
प्रभु नाम जपें तत्क्षण ही तब तनु में किंचित् नहीं चोट लगे।
मरणान्तक पीड़ा से बचते, दीर्घायु हों दुःख दूर भगें।।18।।

ॐ ह्रीं सर्ववायुयानदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रेल में बैठे अतिशीघ्र बहुतेक कोश यात्रा करते।
यदि एक्सीडेंट आदि होवे तो आकस्मिक मृत्यु लभते।।
जिनराज भक्ति का ही प्रभाव ऐसी बहुविध दुर्घटनाओं में।
परिपूर्ण सुरक्षित बच जाते, या एक्सीडेंट टलें क्षण में।।19।।

ॐ ह्रीं सर्वलोहपथगामिनीदुर्घटनादिभयनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस कार आदि यात्रा साधन सुख देते आज सभी को भी।
संघट्टन आदि बहुत विध की दुर्घटनाएँ होती हैं फिर भी।।
यदि नाम मंत्र जपते उस क्षण दुर्घटना से बच जाते हैं।
यदि मरें कदाचित् फिर भी वे शुभ स्वर्ग सौख्य पा जाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वचतुष्चक्रिकादुर्घटनादिसंकटमोचनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चलें तिपहिए, वाहनादि, उनके संघट्टन आदि विविध।
गिरने पड़ने से एक्सीडेंट, आदिक दुर्घटनाओं से नित।।
नाना आतंक दिखें जग में, प्रभु भक्ती से टल जाते हैं।
सब विध अकालमृत्यु टलती, भाक्तिक दुःख से बच जाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनादिकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो पहिये के साइकिल आदिक, वाहन से चलते अकस्मात्।
बस ट्रक आदिक के टक्कर से, गिर जाते बहुविध कष्ट प्राप्त।।
प्रभु नाम मंत्र के जपते ही, किंचित् नहिं चोट लगे तन में।
अपमृत्यु आदि भय टल जाते, मानव दीर्घायु हों जग में।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनांतकनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू पर कंप कभी होता, बहुतेक मनुज मर जाते हैं।
घर ग्राम आदि भी नश जाते, बहुते पशु भी मर जाते हैं।।
प्राकृतिक कोप भूकम्प आदि दुर्घटनाएँ भी टल जाती हैं।
जो भक्त आपको जजते हैं, उनकी रक्षा हो जाती है।।23।।

ॐ ह्रीं भूकम्पदुर्घटनादिनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नदियों में बाढ़ यदि आवे, कितने ही ग्राम डूब जाते।
कितने नर नारी पशु पक्षी, जल में डूबे तब मर जाते।।
इन आकस्मिक जल संकट से, भाक्तिक जन ही बच सकते हैं।
जिनदेवदेव का ही प्रभाव, ये संकट भी टल सकते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं नदीपूरप्रवाहसंकटमोचनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नदी, समुद्र, नहर आदिक, में अकस्मात् गिर जाते हैं।
तुम नाम मंत्र जपते तत्क्षण, वे सहसा ही तिर जाते हैं।।

जिनदेव भक्ति की महिमा ही, भवसागर भी तिर सकते हैं।
प्रभु आदीश्वर की भक्ति से, हम भी सब संकट हरते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं नदीसमुद्रादिपतनकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिच्छू आदिक विषधर जंतु, सर्पादिक काले नाग यदी।
हालाहल विष उगले डस लें, नहिं बचा सकें कोई वैद्य यदी।।
ऐसे भय यदी भयंकर भी, जीवन नाशक आ जाते हैं।
आदीश्वर जिनकी भक्ती से, निर्विष हो जीवन पाते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं वृश्चिकसर्पादिविषधरविषनिर्णाशनाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टापद व्याघ्र सिंह आदिक, हिंसक पशुओं ने घेरा हो।
जीवन बचने की आश न हो, संकट का घोर अंधेरा हो।।
भय से भयभीत हुए प्राणी, यदि नाममंत्र प्रभु का जप लें।
तत्क्षण ही क्रूर जन्तुगण भी, शांती भावों से मिलें जुलें।।27।।

ॐ ह्रीं अष्टापदव्याघ्रसिंहादिक्रूरहिंसकजंतुभयनिवारकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाथी, घोड़े, गौ, बैल आदि पशुगण यदि हमला करते हैं।
सींगों वाले भयभीत करें, दौड़ें मारें वध करते हैं।।
ऐसे प्राणीगण से भी नर, नहिं बाधा किंचित् पाते हैं।
जो मन में चिंते नाममंत्र, वे निर्भय हो बच जाते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं गजाश्वगोवृषभादिप्राणिगणभयविनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाराच छंद

जो विषाक्त गैस फैलती शरीर नाशती।
मानवों पशुगणों के प्राण को संहारती।।

श्री जिनेन्द्रदेव के पदाब्ज की समर्चना।
सर्वगैस आदि कष्ट दूर होयं रंच मा।।29।।

ॐ ह्रीं विषाक्तवाष्पक्षरणादिसंकटवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज जो रसोईघर में गैसपात्र जल रहे।
जो कभी फटें व अग्नि से अनेक को दहें।।
प्राण कष्टदायि चुल्लिकादि दुःख वारते।
जो जिनेन्द्र को जजें समस्त पाप टारते।।30।।

ॐ ह्रीं वाष्पचुल्लिकादिदुर्घटनाकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज बम फटें कहीं अनेक प्राणी मारते।
उग्रवादि लोग भी अनेक को संहारते।।
ग्राम सद्म भी बड़े बड़े हि बम गिरे नशें।
आप पाद पूजते समस्त आपदा नशें।।31।।

ॐ ह्रीं बमविस्फोटकादि-आकस्मिकसंकटनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उग्रवादि लोग आज मानवों को मारते।
बेकसूर प्राणियों के प्राण को संहारते।।
मानसीक वेदना धरें अनेक नित्य ही।
नाम मंत्र आप का हरे अनेक भीति ही।।32।।

ॐ ह्रीं आतंकवादिजनकृत-आकस्मिकमरणादिभय-विनाशकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुपुत्र या कुपुत्रियाँ सदैव दुख दें।
मात पिता उनसे दुखी जन्म भार मानते।।
आप भक्ति से वही सपूत बन के सौख्य दें।
मात पिता धन्य हों जिनेन्द्र भक्ति पुण्य से।।33।।

ॐ ह्रीं कुसंतानकष्टनिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानसीक कष्ट देह व्याधि आदि दुःख से।
कूप में गिरें विषादि खाय के मरा चहें।।
तुच्छयोनि हेतु आत्मघात है सुबुद्धि हो।
आप नाम के जपे हि पूर्ण आयु लाभ हो।।34।।

ॐ ह्रीं कूपनदीपतनविषादिभक्षणनिमित्तापघातभावनिवारणाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु हो अकाल में न पूर्ण आयु पा सकें।
कर्म की उदीरणा से बहुविधे निमित्त बनें।।
नाथ पाद को जजें अपूर्व पुण्य को भरें।
दीर्घ आयु हो यहाँ समस्त कष्ट को हरें।।35।।

ॐ ह्रीं नानाविधदुर्घटनादि-अकालमृत्युनिवारणाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत औ पिशाच व्यंतरादि कष्ट दें घने।
डाकिनी व शाकिनी ग्रहादि भी निमित बनें।।
दुःख हो पिशाचग्रस्त आप वश्य ना रहें।
नाथ पाद पूजते समस्त कष्ट को दहें।।36।।

ॐ ह्रीं भूतपिशाचव्यंतरादिबाधानिवारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोल छन्द

किंचित् श्रम से धन ही धन हो, सब व्यापार सफल होते।
पुण्य उदय से हों उद्योगपती, सब जन के प्रिय होते।।
जिनपूजा का ही माहात्म्य, जो धन से घर भण्डार भरें।
भाक्तिक जन प्रभु पूजा कर, शीघ्र स्वात्मनिधि प्राप्त करें।।37।।

ॐ ह्रीं बहुविधव्यापारसफलताकारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृहलक्ष्मी अनुकूल रहे, पतिव्रत से घर को मोहे।
पति की अनुगामी बन करके, दान धर्म से नित सोहे।।

ऐसी पत्नी मिलती जिसको, वे पुण्यात्मा कहलाते।
ऋषभदेव की पूजा का फल, इस भव परभव में पाते।।38।।

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासिनी धर्मपत्नीप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र पौत्र संतति मिलती नित, कुलदीपक संतान मिले।
मात पिता की कीर्ति बढ़ाकर, धर्मनिष्ठ हों स्वस्थ भले।।
भरत, बाहुबलि, राम सदृश सुत, ब्राह्मी सीता सम कन्या।
ऋषभदेव तीर्थंकर को नित, पूजत पाते जगवंद्या।।39।।

ॐ ह्रीं पुत्रपौत्रादिकुलदीपकसंततिप्रापकपुण्यदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीर्घ आयु पाते वे भविजन, जो प्रभु चरण कमल जजते।
अशुभ भाव से दूर रहें नित, जिनवर के गुण में रमते।।
मनुज देव योनी को पाते, सम्यग्दर्शन महिमा से।
अतः जजूँ मैं भक्तिभाव से, उत्तम आयु मिले जिससे।।40।।

ॐ ह्रीं दीर्घायुप्रापकपुण्यप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों ओर फैलती कीर्ती, सद्गुण से निज को भरते।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित से, आत्मा को शोभित करते।।
कई जन्म से पुण्य योग से, ऐसा योग सुलभ होवे।
ऋषभदेव की पूजा करते, यश सौरभ प्रसरित होवे।।41।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्कीर्तिसौरभव्यापकपुण्यप्रापकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्यमान्यता प्राप्त करें सब, जन जन के अति प्रिय होते।
सब जन उनके गुण गाते ऐसी महिमा से खुश होते।।
जिनवर भक्ती का प्रभाव यह, सब जन संतर्पित करते।
और अधिक क्या जिनभक्ती से तीर्थंकर भी बन सकते।।42।।

ॐ ह्रीं राज्यमान्यतादिप्रशंसनगुणप्रापकपुण्यदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन जन भी आज्ञा पालें, ऐसी गरिमा को पाते हैं।
इस भव में इन्द्रादि सदृश, अतिशायी वैभव पाते हैं।।
ये सब ऋषभदेव पूजन का, उत्तम फल जग में माना।
भक्त बने भगवान स्वयं, ऐसा आश्चर्य जगत् जाना।।43।।

ॐ ह्रीं आज्ञापालनविभवप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत समय में रोग वेदना, आर्तरौद्र दुर्ध्यान न हों।
क्रोध मान माया लोभादिक, राग द्वेष दुर्भाव न हों।।
देव शास्त्र गुरु पंचपरम गुरु, इनका ही बस ध्यान प्रभो।
महामंत्र का मनन श्रवण हो, अंत समाधी मरण प्रभो।।44।।

ॐ ह्रीं अन्त्यसमाधीमरणफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण ये, रत्नत्रय शिवदाता हैं।
निश्चय औ व्यवहार मार्ग ये, परमानन्द विधाता हैं।।
ऋषभदेव तीर्थंकर प्रभु की, भक्ति करें जो भव्य सदा।
वे ही तीन रत्न पा लेते, त्रिभुवन लक्ष्मी लें सुखदा।।45।।

ॐ ह्रीं व्यवहारनिश्चयरत्नत्रयप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा सुमार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप भी।
त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य ये, दशवर धर्मधरें यति ही।।
इन धर्मों को पाते वे ही, जो जिनपूजा नित करते।
ऋषभदेव के चरणकमल की, भक्ति से शिवपद लभते।।46।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशधर्मप्रदायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धी विनय आदि, सोलह सुभावना मानी हैं।
तीर्थंकर पद की जननी ये, सर्वश्रेष्ठ जिनवाणी हैं।।
तीर्थंकर पदकमल चर्चते, सदा भावना भाते हैं।
तीर्थंकर प्रकृती को बांधे, त्रिभुवनपति बन जाते हैं।।47।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिसोलहकारणभावनाफलप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहिरात्मा अन्तरआत्मा परमात्मा जीव त्रिविध मानें।
स्वपर भेदविज्ञानी मुनिवर, शुद्धात्मा को पहचानें।।
सतत ध्यान कर शुद्ध बनें वे, जो जिनचरणकमल षट्पद।
निजशुद्धात्मतत्त्वप्राप्ती हितु, मैं भी नित्य जजूँ जिनपद।।48।।

ॐ ह्रीं अन्तरात्मस्वरूपनिजशुद्धात्मध्यानकारिपदप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

अतिवृष्टि अनावृष्ट्यादि कष्ट, जो मानव को दुःख देते हैं।
श्रीऋषभदेव की पूजा से, भविजन सब दुःख को मेटे हैं।।
नीरोग बनें दीर्घायु हों, सब सुख सम्पति भर लेते हैं।
यह जिनपूजन का ही प्रभाव, बहुयश सौरभ को देते हैं।1।।

ॐ ह्रीं अतिवृष्टि-अनावृष्ट्यादि-विविधसंकटनिवारकाय श्रीऋषभदेव-तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-शंभु छन्द-

हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।
भक्ती से प्रभु के चरणों में, गुणमाल चढ़ाने आये हैं।।

है धन्य अयोध्यापुरी जहाँ, श्री आदिनाथ ने जन्म लिया।
जिन अजितनाथ अभिनंदन सुमती, प्रभु अनंत ने धन्य किया।।
कैलाशगिरी से वृषभदेव जिन, मोक्षधाम को पाये हैं।।हे0।।1।।

सम्राट् भरतचक्री ने दीक्षा ले, शिवपद को प्राप्त किया।
इक्ष्वाकुवंशि[1] नृप चौदह लाख हि, लगातार शिवधाम लिया।।
ये पुरी विनीता के जन्में, परमात्मधाम को पाये हैं।।हे0।।2।।

बाहुबलि कामदेव ने जीत, भरत को फिर दीक्षा धरके।
प्रभु एक वर्ष थे ध्यान लीन, तन बेल चढ़ी अहि भी लिपटे।।
फिर केवलज्ञानी बनें नाथ, हम गुण गाके हर्षाये हैं।।हे0।।3।।

श्री अजितनाथ आदिक चारों, तीर्थंकर सम्मेदाचल से।
शिवधाम गये इन्द्रादिवंद्य, हम नित वंदें, मन वच तन से।।
धनि धन्य अयोध्या जन्मस्थल, शिवथल वंदत हर्षाये हैं।।हे0।।4।।

चक्रीश सगर आदिक यहाँ के, कर्मारि नाश शिव लिया अहो।
श्री रामचन्द्र ने इसी अयोध्या, को पावन कर दिया अहो।।
मांगीतुंगी से मोक्ष गये, इन वंदत पुण्य बढ़ाये हैं।।हे0।।5।।

युग की आदी में आदिनाथ, पुत्री ब्राह्मी सुंदरी हुई।
पितु से ब्राह्मी औ अंकलिपी, पाकर विद्या में धुरी हुई।।
पितु से दीक्षा ले गणिनी थीं, इनके गुण सुर नर गाये हैं।।हे0।।6।।

इनके पथ पर अगणित नारी, ने चलकर स्त्रीलिंग छेदा।
आर्यिका सुलोचना ने ग्यारह, अंगों को पढ़ जग संबोधा।।
दशरथ माँ पृथिवीमती आर्यिका, को हम शीश नमाये हैं।।हे0।।7।।

सीता ने अग्निपरीक्षा में, सरवर जल कमल खिलाया था।
पृथ्वीमति गणिनी से दीक्षित, आर्यिका बनी यश पाया था।।
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण लवकुश, सब दुःखी हृदय गुण गाये हैं।।हे0।।8।।

सीता ने बासठ वर्षों तक, बहु उग्र उग्र तप तप करके।
तैंतिस दिन सल्लेखना ग्रहण, करके सुसमाधि मरण करके।।
अच्युत दिव में होकर प्रतीन्द्र, रावण को बोध कराये हैं।।हे0।।9।।

जय जय रत्नों की खान रत्न-गर्भा रत्नों की प्रसवित्री।
जय जय साकेतापुरी अयोध्या-पुरी विनीता सुखदात्री।।
जय जयतु अनादिनिधन नगरी, हम वंदन कर हर्षाये हैं।।हे0।।10।।

1. अयोध्या में भरत को आदि लेकर चौदह लाख इच्छ्वाकुवंशीय राजा बिना व्यवधान के लगातार मोक्ष गये हैं। हरिवंशपुराण सर्ग 13, श्लोक 13।

बस काल दोष से इस युग में, यहाँ पांच तीर्थंकर जन्म लिये।
सब भूत भविष्यत् कालों में, चौबिस जिन जन्मभूमि हैं ये।।
हम इसका शत शत वंदन कर, अतिशायी पुण्य कमाये हैं।।हे0।।11।।

जय जय तीर्थंकर भरत सगर, जय रामचन्द्र लव कुश गुणमणि।
जय जयतु आर्यिका ब्राह्मी माँ, सुंदरी व सीता साध्वीमणि।।
हम केवल 'ज्ञानमती' हेतू, तुम चरणों शीश झुकाये हैं।।हे 0।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-2

गणधर पूजा

-अथ स्थापना-गीता छंद-

गणधर बिना तीर्थेश की, वाणी न खिर सकती कभी।
निज पास में दीक्षा ग्रहें, गणधर भि बन सकते वही।।
तीर्थेश की ध्वनि श्रवण कर, उन बीज पद के अर्थ को।
जो ग्रथें द्वादश अंगमय, मैं जजूँ उन गणनाथ को।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-भुजंगप्रयात

पयोराशि का नीर निर्मल भराऊँ।
गुरू के चरण तीन धारा कराऊँ।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि[1] को मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधीत चंदन लिये भर कटोरी।
जगत्तापहर चर्च हूँ हाथ जोरी।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले श्वेत अक्षत लिये थाल भरके।
धरूँ पुंज तुम पास बहु आश धर के।।

1. समुद्र

जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केतकी पुष्प की माल लाऊँ।
सभी व्याधि हर आप चरणों चढ़ाऊँ।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मिष्ट पक्वान्न अमृत सदृश ले।
परमतृप्ति हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें मैं।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगाती भली है।
जजत ही तुम्हें ज्ञानज्योती जली है।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरु धूप खेते उड़े धूम्र नभ में।
दुरित कर्म जलते गुरूभक्तिवश तें।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्नास नींबू बिजौरा लिये हैं।
तुम्हें अर्पते सर्व वांछित लिये हैं।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिये थाल में अर्घ है भक्ति भारी।
गुरू अर्चना है सदा सौख्यकारी।।
जजूँ गणधरों के पदाम्भोज को मैं।
तरूँ शीघ्र संसार वाराशि को मैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गणधर पदधारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

चौरासी गणधर गुरुसेवित 84 अर्घ्य

दोहा

गणधर गुरु से वंद्य नित, तीर्थंकर वृषभेश।
पुष्पांजलि से पूजते, नशते विघ्न अशेष।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

श्री ऋषभदेव के तृतीय पुत्र, मां यशस्वती के नंदन हो।
तज पुरिमतालपुर नगर राज्य, मुनि बने जगत अभिनन्दन हो।।
सब ऋद्धि समन्वित गणधर गुरु, हे 'ऋषभसेन' तुमको वंदन।
तुम प्रथम तीर्थंकर के पहले, गणधर हम करते नित्य यजन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभसेनगणधरगुरुवंदितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीकुंभ' गणीश्वर द्वादशगण, के प्रमुख नाथ के गुण गाते।
सब गुणरत्नों से भरित आप, नित आत्म सुधारस आस्वादें।।

सब विघ्न विनाशें भक्तों के, इसलिये भक्ति से हम पूजें।
गणधरगुरु से वंदित प्रभु की, पूजा कर भवदुख से छूटें।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंभगणधरगुरुवंदितचरणाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री दृढ़रथ' गणधर ऋषभदेव के समवसरण के षट्पद हो।
भक्ती से निजपरमानंदामृत पीते आप तृप्ति युत हो।।
सम्पूर्ण शास्त्र के ज्ञाता हो, फिर भी जिनवर के दास बने।
हम पूजें ऋषभदेव जिन को, पूरे हों वांछित कार्य घने।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीदृढ़रथगणधरगुरुसेवितांघ्रियुगलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री शतधनु' गणधर सप्त ऋद्धि-धारी श्रुत वारिधि पारंगत।
निज शुद्ध बुद्ध परमात्मतत्त्व, ध्याते फिर भी प्रभु गुण में रत।।
उन प्रभु आदीश्वर के गुण को, मैं भी गाऊँ नित भक्ति करूँ।
जल आदिक अर्घ्य चढ़ा करके, निज सम्यग्दर्शन शुद्धि करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशतधनुगणधरगुरुसेवितपादपंकजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीवृषभेश्वर के समवसरण, में कहे 'देवशर्मा' गणधर।
ये भक्त जनों के कष्ट हरें, इनको जो पूजें रुचि धरकर।।
इनसे वंदित चरणकमल जिन, उन प्रभु को अर्चूं श्रद्धा से।
श्रीऋषभदेव जिनराज शरण, जो पावें छूटें विपदा से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशर्मागणधरगुरुवंदितांघ्रियुगलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीदेवभाव' गणधर स्वामी, मनपर्ययज्ञानी जगत्राता।
व्यवहार रत्नत्रय के बल से, निश्चय रत्नत्रय को साधा।।
श्रीऋषभदेव सा गुरु पाया, निज ज्ञानज्योति से आलोकित।
उन प्रभु के चरणकमल पूजूँ, निज को पाऊँ निज से शोभित।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवभावगणधरगुरुवंदितचरणाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीनन्दन' गणधर गुरु को नित, बंदूँ आनन्दित होकर के।
वे ज्ञानानन्द स्वभावी थे, प्रतिक्षण आत्मा को ध्याकर के।।
वे ऋषभदेव के शिष्य बने, उस भव से ही शिवधाम लिया।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर के, गुरु के गुरु को शिर नमित किया।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दनगणधरगुरुसेवितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसोमदत्त' गणधर गुणधर, सम्पूर्ण परिग्रह के त्यागी।
निज को निज में निज के द्वारा, नित ध्याते निजगुण अनुरागी।।
श्रीऋषभदेव के निकट रहें, अविरत जिनभक्ती में रत थे।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ा करके, मेरे भव-भव के फंद कटें।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसोमदत्तगणधरगुरुनमितांघ्रिकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसूरदत्त' गणधर स्वामी, संयतमुनि नग्न दिगम्बर थे।
अट्ठाइस मूलगुणों से युत, बहुविध उत्तर गुणधारी थे।।
ये ऋषभदेव के चरणकमल, में नित नमते उनको वंदूँ।
गणधरगुरु को तीर्थंकर को, पूजत ही पापअरी खंडूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसूरदत्तगणधरगुरुवंदितचरणारविंदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीऋषभदेव के सन्निध में, गणधर गुरु 'वायूशर्मा' थे।
सब कर्म धूलि को उड़ा-उड़ा, अगणित गुणयुत शुचिधर्मा थे।।
संयमबल से त्रयविध अवधी, पाकर निरवधि गुण रत्नाकर।
उनको उनके गुरु को पूजूँ, पा जाऊँ अनवधि सुखसागर।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीवायुशर्मागणधरगुरुपूजितांघ्रियुगलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीयशोबाहु' गणधर गुणधर, निजगुण के यश को फैलाया।
जिसमें धर्मामृत भरा हुआ, इस अतुल तीर्थ में नहलाया।।

भाक्तिक जन इसमें नहा नहा, निज पाप मलों को धोते थे।
उन तीर्थ तीर्थंकर को यजते, सब वांछित पूरे होते थे।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीयशोबाहुगणधरदेवाभिवंदितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवाग्नी' गणधर ने तप बल, से सर्व ऋद्धियाँ पाई थीं।
ध्यानानल में सब कर्म जला, कर सर्वसिद्धियाँ पायी थीं।।
श्रीऋषभदेव के चरणकमल, के भ्रमर बने थे जग त्राता।
उन गुरु को भगवत् चरणों को, मैं पूजूँ मिले सर्व साता।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवाग्निगणधरगुरुचुंबितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

बुद्धि ऋद्धि में अवधि ज्ञान है ऋद्धि जो।
अणु से महास्कंध पर्यंते मूर्त को।।
जाने गणधर 'अग्निदेव' सब ऋद्धियुत।
उनके गुरु को भी मैं पूजूँ सिद्धिकृत।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीअग्निदेवगणधरगुरुपूजितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज लोक के भीतर चिंतित वस्तु को।
जाने मूर्तिक द्रव्य मनःपर्यय ज्ञान वो।।
इन ऋद्धीयुत 'अमितगुप्त' गणनाथ को।
उनके गुरु तीर्थंकर प्रभु को नित जजों।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअमितगुप्तगणधरदेववंदितांघ्रिकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशे केवलज्ञान जो।
सब ऋद्धीयुत पाते जो इस ऋद्धि को।।
उन 'मित्राग्नी' गणधर को मैं नित जजूँ।
श्रीऋषभदेव को पूजूँ निज आतम भजूँ।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीमित्राग्निगणधरगुरु-अभिनंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द संख्यातों अर्थ अनंतों से युते।
अनंत लिंगों साथ बीजपद जानते।।
बीजऋद्धि युत भी 'हलभृत' गणनाथ हैं।
उनके गुरु तीर्थंकर त्रिभुवन नाथ हैं।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीहलभृतगणधरगुरुनमितचरणांभोजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दरूप बीजों को मति से जो धरें।
मिश्रण बिन बुद्धी कोठे में जो भरें।।
गणधरदेव 'महीधर' जिनवर भक्त थे।
उनके गुरु तीर्थंकर प्रभु को हम जजें।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीमहीधरगणधरगुरुपूजितपादाम्बुजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उपदेश सुपाय एक पद को ग्रहें।
उसके ऊपर या पहले के पद लहें।।
उभय ग्रहें या त्रयविध पदानुसारिणी।
गुरु 'महेन्द्र' की जिनभक्ती भव हारिणी।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीमहेन्द्रगणधरगुरुचुंबितपादारविंदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रोत्रेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाहिरे।
अक्षर अनक्षरात्मक वच सुन उत्तरें।।
गुरु 'वसुदेव' संभिन्नश्रोतृ ऋद्धि धरें।
उनके गुरु तीर्थंकर के गुण उच्चरें।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीवसुदेवगणधरगुरुनमितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य जो।
संख्यातों योजन नाना रस स्वाद को।।

जो जाने दूरास्वादन ऋद्धी धरें।
देव 'वसुंधर' जिनभक्ती से भव तरें।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीवसुंधरगणधरगुरुनमितपादाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य भी।
संख्यातों योजन स्पर्श को जानहीं।
'अचलगुरु' दूरस्पर्श ऋद्धि आदिक सहित।
उनके गुरु ऋषभेश्वर हैं त्रिभुवन महित।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलगणधरगुरुमहितचरणजलजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य भी।
संख्यातों योजन सुगंध को जान हीं।।
'मेरू' गणधर दूरघ्राण ऋद्धी धरें।
उनके गुरु को पूजत हम समसुख भरें।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीमेरूगणधरगुरुवंदितपादसरोरुहाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णेन्द्रिय उत्कृष्ट विषय के बाहिरे।
संख्यातों योजन मनुष्य पशु अक्षरे।।
पृथक्-पृथक् सुन लेय 'मेरुधन' गणधरा।
उनके गुरु को जजूँ सदा वे सुखकरा।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीमेरूधनगणधरगुरुवंदितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र से बाह्य जो।
चक्रवर्ति के नेत्रविषय से अधिक वो।।
दूरदर्शिता ऋद्धि 'मेरुभूती' धरें।
तीर्थंकर के चरणकमल में नति करें।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीमेरुभूतिगणधरगुरुनमितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

रोहिणी प्रभृति महाविद्यायें, पाँच शतक मानी हैं।
लघु विद्या अंगुष्ठप्रसेना प्रभृति सप्तशत ही हैं।।
दशम पूर्व पढ़ने पर च्युत नहिं दशपूर्वित्व कहाते।
गुरु 'सर्वयश' ऋषभेश्वर के गुणयश को नित गाते।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वयशगणधरगुरुपूजितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब पढ़कर श्रुतकेवलि हों।
ऋद्धि चतुर्दशपूर्वि धरें नित 'सर्वयज्ञ' गणधर वो।।
ऋषभदेव के समवसरण में धर्मध्यान के ध्यानी।
उनको उनके गुरु को पूजूँ बनूँ आत्म श्रद्धानी।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वयज्ञगणधरगुरुवंदितचरणारविंदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभ्र भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण चिन्ह स्वपन हों।
आठ निमित्तों से सब के शुभ अशुभ बताते मुनि जो।।
वे अष्टांगनिमित्त ऋद्धिधर 'सर्वगुप्त' गणधर गुरु।
ऋषभदेव की भक्ती में रत नमूँ नमूँ मैं रुचिधर।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वगुप्तगणधरगुरुवंदितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औत्पत्तिक पारिणामिक विनयिक कही कर्मजा बुद्धी।
प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि चउविधधर गणधर गुरु बनते भी।।
नाम 'सर्वप्रिय' ऋषभदेव के शिष्य सर्वजग त्राता।
जजूँ तीर्थंकर चरणकमल को पाऊँ निजसुख साता।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वप्रियगणधरगुरुनमितपादाम्बुजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उपदेश बिना कर्मों के, उपशम से तप बल से।
जो प्रत्येक बुद्धि ऋद्धी है, ऋषियों के ही प्रगटे।।

'सर्वदेव' गणधर गुरुवर इस ऋद्धि सहित सुखकारी।
उनके गुरु ऋषभेश्वर को मैं, पूजूँ भवदुखहारी।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वदेवगणधरगुरुपूजितांघ्रिकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब परमत को सुरपति को भी जो कर सकें निरुत्तर।
इन वादित्वऋद्धियुत गणधर को वंदूँ अंजलिकर।।
'सर्वविजय' से वंदित जिनवर चरणकमल शिर नाऊँ।
गणधरगुरु को तीर्थंकर को जजत आत्मसुख पाऊँ।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वविजयगणधरगुरुसेवितपादपंकजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणू बराबर छिद्रों में भी, जो ऋषि घुस कर बैठें।
चक्रवर्ति का कटक बना दें अद्भुत विक्रिय करके।।
ऐसे अणिमा ऋद्धि विभूषित 'विजयगुप्त' गणधर को।
नमूँ इन्हों के गुरु तीर्थंकर जजूँ स्वात्मसुख झट हो।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयगुप्तगणधरगुरुपूजितपादाम्बुजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु बराबर तनु कर सकते महिमाऋद्धि धरें जो।
विक्रिय ऋद्धी के बल से गुरु पर उपकार करें वो।।
'विजयमित्र' गणधर गुरु इन सब ऋद्धि समन्वित माने।
उनको उनके गुरु को पूजत कर्म कालिमा हाने।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयमित्रगणधरगुरुचुंबितपादारविंदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघिमा ऋद्धि सहित ऋषि वायू सम हल्का तनु कर सकते।
जन जन के उपकार हेतु ही, ऋद्धि प्रयोगें रुचि से।।
'श्रीविजयिल' गणधर गुरु ऐसे उनके चरण नमूँ मैं।
श्रीऋषभेश्वर को नित पूजूँ आतम सौख्य भरूँ मैं।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीविजयिलगणधरगुरुवंदितांघ्रियुगलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपराजित' गणधर प्रभु जग में सदा विजयशाली थे।
अधिक भारयुत वज्रसदृश तनु तप बल से धर सकते।।
गरिमा ऋद्धि सहित को वंदूँ तपमहिमा की गरिमा।
वंदूँ ऋषभदेव तीर्थंकर पाऊँ तप की महिमा।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीअपराजितगणधरगुरुवंदितपादारविंदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमि पर बैठे ही बैठे, सूर्य चंद्र छू सकते।
अंगुलि से ही मेरुशिखर, छूकर मस्तक से नमते।।
प्राप्तिनाम विक्रिया सहित 'वसुमित्र' गणाधिप वंदूँ।
तीर्थंकर श्रीआदिनाथ के शिष्यों को अभिनंदूँ।।35।।

ॐ ह्रीं श्रीवसुमित्रगणधरगुरुनमितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू पर भी जलसम अवगाहे जल में भू सम चलते।
इस प्राकाम्यविक्रिया बल से अद्भुत महिमा धरते।।
'विश्वसेन' गणधर को वंदूँ नाना ऋद्धि सहित जो।
आदिनाथ के चरणकमल के भ्रमर भक्ति तत्पर वो।।36।।

ॐ ह्रीं श्रीविश्वसेनगणधरगुरुचुंबितचरणांबुजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

जग में प्रभुता वृद्धि यह ईशित्व कहावे।
'साधुषेण' के सिद्ध सब जन से यश पावें।।
उन गणधर से पूज्य ऋषभदेव तीर्थंकर।
जजूँ भक्ति से नित्य पाऊँ सौख्य निरन्तर।।37।।

ॐ ह्रीं श्रीसाधुषेणगणधरगुरुअर्चितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन वश में होय, ऋद्धि वशित्व कहावे।
'सत्यदेव' गणदेव, नाना ऋद्धि धरावें।।

इनसे पूजित पाद, ऋषभदेव भगवंता।
करूँ निरन्तर जाप, पाऊँ सौख्य अनंता।।38।।

ॐ ह्रीं श्रीसत्यदेवगणधरगुरुपूजितांघ्रियुगलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके बल से शैल, शिला आदि के मधि से।
वृक्ष आदि में छेद, किये बिना ही चलते।।
विक्रिय अप्रतिघात, 'देवसत्य' गुण धरते।
ऋषभदेव के पास, रहें द्विदश गण धरते।।39।।

ॐ ह्रीं श्रीदेवसत्यगणधरगुरुवंदितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से साधु, हों अदृश्य नहिं दिखते।
विक्रिय अंतर्धान, तप बल से ही उपजे।।
'सत्यगुप्त' गणनाथ, बहुविध ऋद्धी धारी।
उन गुरु आदिनाथ, जजूँ सर्वहितकारी।।40।।

ॐ ह्रीं श्रीसत्यगुप्तगणधरगुरुवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकहि साथ अनेक-रूप बना सकते जो।
कामरूप यह ऋद्धि, तप बल से प्रगटे जो।।
'सत्यमित्र' गणनाथ ऋषभदेव गुण गाते।
नमूँ नमाकर माथ, तीर्थंकर गुण गाके।।41।।

ॐ ह्रीं श्रीसत्यमित्रगणधरगुरुनमितपादपंकजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से साधु, गगन गमन कर सकते।
धरें गगनगामित्व, 'निर्मल' मुनि तपबल से।।
इनके गुरु वृषभेश, उनको नित्य जजूँ मैं।
रोग, शोक, संक्लेश, सब दुःख दूर करूँ मैं।।42।।

ॐ ह्रीं श्रीनिर्मलगणधरगुरुवंदितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में चलते जंतु-घात वहाँ नहिं होवे।
जलचारण यह ऋद्धि, तपश्चरण से होवे।।
'श्रीविनीत' गणधार, नमूँ, नमूँ चित लाके।
ऋषभदेव को माथ, नाऊँ अर्घ्य चढ़ाके।।43।।

ॐ ह्रीं श्रीविनीतगणधरगुरुवंदितचरणाम्बुजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भू उपरि, चलते अधर गगन में।
जंघाचारण ऋद्धि, धरते समवसरण में।।
'संवर' गणधर देव, उनके गुरु आदीश्वर।
जजत करूँ दुखछेव, पाऊँ सुख क्षेमंकर।।44।।

ॐ ह्रीं श्रीसंवरगणधरगुरुनमितांघ्रिकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पत्ते अरु फूल, उन पर चरण धरें भी।
चारणकिरिया ऋद्धि, जीवघात नहिं हो भी।।
'मुनीगुप्त' गणनाथ, वंदूँ व्याधि नशाऊँ।
नमूँ नमाकर माथ, ऋषभदेव गुण गाऊँ।।45।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिगुप्तगणधरगुरुवंदितचरणाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पर चलें, बाधा रंच न होवे।
धूयें पर भी चले, पग स्खलित न होवें।।
'मुनीदत्त' गणनाथ, अग्निधूम चारण युत।
आदीश्वर के शिष्य, नमूँ नमूँ मैं शिरनत।।46।।

ॐ ह्रीं श्रीअग्निदत्तगणधरगुरुपूजितांघ्रिकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्कायिक बध टाल, मेघों पर चल सकते।
जलधारा पर चलें, चारणऋषि बन करके।।

'मुनीयज्ञ' गणदेव, ऋषभदेव को नमते।
हम पूजें कर सेव, नाम मंत्र जप जपके।।47।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनियज्ञगणधरगुरुनमितांघ्रिपंकजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मकड़ी के तंतु, पर हल्के पग धरते।
बाधा करें न रंच, चारण ऋद्धी धरते।।
'मुनीदेव' गणनाथ, नमूँ नमूँ नित शिरनत।
जजूँ तीर्थकर नाथ, पाऊँ जिनगुणसंपत्।।48।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिदेवगणधरगुरुवंदितपादाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

जो सूर्य चंद्र ग्रह नखत तारका, किरणों का अवलंबन लें।
बहुतेक योजनों गमन करें, ज्योतिश्चारण क्रिय ऋद्धी लें।।
गुरु 'गुप्तियज्ञ' गणधर बनकर, संपूर्ण ऋद्धि के स्वामी थे।
श्री आदिनाथ के चरण नमें, जो त्रिभुवन अंतर्यामी थे।।49।।

ॐ ह्रीं श्रीगुप्तियज्ञगणधरगुरुवंदितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से मुनि वायु पंक्ति, के आश्रय से नभ में चलते।
स्खलन रहित पग धर धरके, बहुते कोशों तक चल सकते।।
यह वायुचारणा क्रिया ऋद्धि, 'श्रीमित्रयज्ञ' गणधर धरते।
उनके गुरु ऋषभदेव को नित, पूजत ही रोग शोक नशते।।50।।

ॐ ह्रीं श्रीमित्रयज्ञगणधरगुरुवंदितपादाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ऋद्धी के हैं सात भेद, उनमें हि उग्र तप पहला है।
एकेक उपवास अधिक जीवन भर बढ़ता रहता है।।
गणदेव 'स्वयंभू' ने बहुविध, ऋद्धी से आत्मविकास किया।
श्री ऋषभदेव को ध्या ध्याकर, निज केवलज्ञान प्रकाश लिया।।51।।

ॐ ह्रीं श्रीस्वयंभूगणधरगुरुवंदितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदिक उपवास करें, जब ऋद्धि दीप्तमय हो जाती।
आहार न हो बल तेज बढ़े, नहिं होती उन्हें भूख व्याधी।।
यह इस ऋद्धी का ही प्रभाव, तनु में बल माँस रुधिर वृद्धी।
'भगदेव' गणीश्वर वृषभेश्वर, को पूजत मिलती सब सिद्धी।।52।।

ॐ ह्रीं श्रीभगदेवगणधरगुरुनमितांघ्रिपंकजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से आहार ग्रहें, वह तपे लोह पर जल सदृश।
नीहार न हो मल मूत्र शुक्र, आदिक धातू नहिं बने विविध।।
बस शक्ति बढ़े तप बढ़े सदा, ''भगदत्त'' गणीश्वर को प्रणमूँ।
श्री ऋषभदेव को नित्य जजूँ, भव भव के कर्म कलंक वमूँ।।53।।

ॐ ह्रीं श्रीभगदत्तगणधरगुरुवंदितचरणाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अणिमादिक चारण आदिक, नाना ऋद्धी से युक्त रहें।
मंदरपंक्ती सिंहनिष्क्रीड़ित, आदिक उत्तम उपवास गहें।।
वो चार ज्ञानधारी ऋषिवर, ही महातपो ऋद्धी धारें।
'भगफल्गू' गणधर के गुरुवर, श्री ऋषभदेव भव से तारें।।54।।

ॐ ह्रीं श्रीभगफल्गुगणधरगुरुवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदिक बारह विध के, तप उग्र उग्र जो करते हैं।
ज्वर आदिक से पीड़ित हो भी, आतापनादि तप धरते हैं।।
'श्रीगुप्तफल्गु' तप ऋद्धिसहित, गणधर गुरु विघ्न विनायक हैं।
उनके गुरु ऋषभदेव जिनवर, पूजत सुख संपति दायक हैं।।55।।

ॐ ह्रीं श्रीगुप्तफल्गुगणधरगुरुवंदितपादाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि घोर पराक्रम ऋद्धी से, अतिशायी शक्ती पाते हैं।
त्रिभुवन संहार करण जलधी, शोषण में समरथ होते हैं।।

यद्यपि ये कार्य नहीं करते, जगबन्धू 'मित्रफल्गू' गणधर।
उनके गुरु ऋषभदेव जिनवर, मैं पूजूँ भवभय पातकहर।।56।।

ॐ ह्रीं श्रीमित्रफल्गुगणधरगुरुनमितांघ्रिपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अघोर यानी पूर्णशांत, महाव्रत समिती गुप्ती पालें।
वे व्रतमय ब्रह्मा में चरते, अघोर ब्रह्मचर्या पालें।।
इन ऋद्धिसहित 'श्रीप्रजापति' गणधर की भक्ती करने से।
वध रोग कलह दुर्भिक्ष वैर, नशते भगवन् की भक्ती से।।57।।

ॐ ह्रीं श्रीप्रजापतिगणधरगुरुवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्वादशांग अंतर्मुहूर्त, में चिंतन करने में समरथ।
जो मनोबली ऋद्धी धारें, वे शुक्ल ध्यान में हों समरथ।।
'श्रीसर्वसंग' गणधर गुरुवर, इन ऋद्धि सहित भवि सुखदाता।
उनके गुरु श्री ऋषभदेव जिनवर, को पूजत मिले सर्व साता।।58।।

ॐ ह्रीं श्रीसर्वसंगगणधरगुरुनमितांघ्रिपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत द्वादशांग उच्चारण कर पढ़ते नहिं कंठ थके उनका।
वह वचनबली ऋद्धी प्रगटे, वे मेटें जग की सर्व व्यथा।।
'श्रीवरुण' गणी को नित प्रणमूँ, उनके गुरु ऋषभदेव वंदूँ।
श्रुतज्ञान पूर्ण करने हेतू, गणधर जिनवर को नित्य जजूँ।।59।।

ॐ ह्रीं श्रीवरुणगणधरगुरुपूजितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन को भी अंगुलि ऊपर, जो उठा सकें वो कायबली।
नाना विध आसन कायक्लेश, करने से हो यह ऋद्धि भली।।
'धनपालक' गणधर को प्रणमूँ, सब ऋद्धि सिद्धि सुख के दाता।
उनके गुरु ऋषभदेव को नित, मैं पूजूँ मिले सौख्य साता।।60।।

ॐ ह्रीं श्रीधनपालकगणधरगुरुवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्धड़ी छंद

औषधि ऋद्धी के आठ भेद, आमर्शौषधि यह ऋद्धि एक।
'मघवान' गणी यह ऋद्धि धरें, इन गुरु को वंदत पाप हरें।।61।।

ॐ ह्रीं श्रीमघवानगणधरगुरुपूजितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्ष्वेलौषधि ऋद्धी धरते, वे सर्वरोग संकट हरते।
गुरु 'तेजोराशी' गणधर थे, उन गुरु ऋषभेश्वर को जजते।।62।।

ॐ ह्रीं श्रीतेजोराशिगणधरगुरुसेवितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु जल्लौषधि ऋद्धी धरंत, 'महावीर' नाम गणधर महंत।
उनके गुरु पूजूँ आदिनाथ, भवदधि डूबत को देयं हाथ।।63।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरगणधरगुरुवंदितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मलौषधी धरते महान्, गणईश 'महारथ' भाग्यवान्।
श्री ऋषभदेव के शिष्य मान्य, पूजत ही पावें स्वात्म साम्य।।64।।

ॐ ह्रीं श्रीमहारथगणधरदेवनमितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि विप्रुष औषधि ऋद्धि धार, सब के दुख दारिद करें छार।
उनके गुरु ऋषभेश्वर महान्, जो 'विशालाक्ष' गणधर प्रधान।।65।।

ॐ ह्रीं श्रीविशालाक्षगणधरगुरुवंदितांघ्रिकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसे स्पर्शित नीर वायु, सब रोग हरे करते चिरायु।
सर्वौषधि धरते 'महाबाल', उनके गुरु पूजूँ जगत्पाल।।66।।

ॐ ह्रीं श्रीमहाबालगणधरगुरुसेवितपादपंकजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे कटु या विष व्याप्त अन्न, बस वचन मात्र से निर्विषान्न।
मुखनिर्विष युत 'शुचिसाल' साधु, उनके गुरु को पूजूँ अबाध।।67।।

ॐ ह्रीं श्रीशुचिसालगणधरगुरुवंदितपादाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रोग विषादि समेत जीव, अवलोकन से हों स्वस्थ जीव।
दृष्टीनिर्विषयुत 'श्रीवज्र' साधु, उन गुरु को जजते स्वात्मस्वादु।।68।।

ॐ ह्रीं श्रीवज्रगणधरगुरुवंदितचरणाम्बुजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीविष ऋद्धी जो धरंत, दुरआशिष से मरते तुरंत।
श्री वज्रसार' न करें प्रयोग, उन गुरु के नमते मिटे शोक।।69।।

ॐ ह्रीं श्रीवज्रसारगणधरगुरुचुंबितचरणारविंदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टीविषयुत गणि 'चन्द्रचूल' करुणासागर जग के नुकूल।
उनके गुरु ऋषभेश्वर जिनिंद, मैं जजूँ बनूँ अतिशय अनिंद्य।।70।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रचूलगणधरगुरुवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर में आया रूखा अहार, पयवत् परिणमता स्वाद धार।
श्री 'जयकुमार' गणधर नमंत, उन गुरु को पूजत सुख अनंत।।71।।

ॐ ह्रीं श्रीजयकुमारगणधरगुरुवंदितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर में आया रुक्षादि अन्न, तप से बन जाता मधुर अन्न।
'महारस' गणधर के गुरु जिनेश, मैं पूजूँ पाऊँ सुख हमेश।।72।

ॐ ह्रीं श्रीमहारसगणधरगुरुवंदितचरणाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्रग्विणी छंद

अमृतास्रावि विष वस्तु अमृत करें।
उन वचन दुःखहर कर्ण अमृत भरें।।

'कच्छ' गणधर उन्हीं के नमूँ पाद को।
शिष्य जिनके उन्हें भी जजूँ भाव सों।।73।।

ॐ ह्रीं श्रीकच्छगणधरगुरुवंदितपादाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्ततल में रखा रुक्ष अन्नादि भी।
दिव्य वच भी अमृतसम करें तुष्टि ही।।
जो 'महाकच्छ' गणधर उन्हों के प्रभू।
मैं जजूँ भक्ति से पाऊँ आनन्द भू।।74।।

ॐ ह्रीं श्रीमहाकच्छगणधरगुरुसेवितपादपद्माय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नमि' महासाधु गणधर बने नाथ के।
ऋद्धि अक्षीण भोजन मिली त्याग से।।
चक्रवर्ती कटक जीम लेवे भले।
ना घटे पाद अर्चूं सदा अर्घ्य ले।।75।।

ॐ ह्रीं श्रीनमिगणधरगुरुपूजितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू चतुष्कोण हो चार ही धनुष भी।
देव नर भी असंख्ये वहाँ तिष्ठहीं।।
नाम अक्षीण आलय महाऋद्धि से।
नाथ के शिष्य 'विनमी' जजूँ भक्ति से।।76।।

ॐ ह्रीं श्रीविनमिगणधरगुरुवंदितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

'श्रीबल' गणी ऋषभेष के, सब ऋद्धियों के नाथ हैं।
सम्पूर्ण गुण रत्नों भरें फिर भी न कुछ उन पास है।।
जिनदेव के चरणाब्ज षट्पद आत्मसुख में मग्न हैं।
उनको उन्हों के नाथ को पूजत मिले सुख कंद है।।77।।

ॐ ह्रीं श्रीगणधरगुरुचुंबितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अतिबल' गणी ऋषभेश जिन के समवसृति में शोभते।
अठरह सहस शीलों, गुणों से आत्मसुख को पोषते।।
प्रभु भक्ति में लवलीन हो निज आत्म का चिंतन करें।
गणधर गणों से वंद्य जिनवर जजत भव भंजन करें।।78।।

ॐ ह्रीं श्रीअतिबलगणधरगुरुवंदितचरणकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीभद्रबल' चउज्ञानधारी ऋद्धियों से पूर्ण हैं।
उत्तर गुणों से राजते यमदुःख करते चूर्ण हैं।।
ऋषभेश के पदपंकजों की नित्य करते वंदना।
गणधर गुरु को आदिप्रभु को पूजते दुख रंच ना।।79।।

ॐ ह्रीं श्रीभद्रबलगणधरगुरुवंदितचरणाब्जाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदी' गणाधिप नाथ की दिव्यध्वनि सुन मोदते।
द्वादश गणों को द्वादशांगी में सतत संबोधते।।
निज शुद्ध परमानंदमय ज्ञानाब्धि में अवगाहते।
फिर भी जिनेश्वर चरण वंदे हम उन्हें शिर नावते।।80।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदिगणधरगुरुवंदितपादपंकजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर 'महाभागी' जिनेश्वर पादपंकज ध्यावते।
बहु पुण्य संपादन करें फिर पाप पुण्य नशावते।।
निज में सुपरमाल्हाद अमृत पान कर शिव पावते।
उनके गुरु वृषभेश को हम पूजते अति चाव से।।81।।

ॐ ह्रीं श्रीमहाभागिगणधरगुरुसेवितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीनंदिमित्र' गणेश नित आदीश का वंदन करें।
चौरासी लक्षोत्तर गुणों से पूर्ण भव खण्डन करें।।

संपूर्ण ऋद्धि समेत फिर भी नग्नमुद्रा धारते।
उनको जजूँ जिन को नमूँ फिर तिरूँ भक्तीनाव से।।82।।

ॐ ह्रीं श्रीनंदिमित्रगणधरगुरुपूजितांघ्रिकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीकामदेव' गणीश नित तीर्थेश की भक्ती करें।
निज भक्त को तारें भवोदधि से स्वयं गुण से तिरें।।
उनके चरण को वंद कर वृषभेश की पूजन करूँ।
निज साम्य अमृत को पिऊँ यमपाश का छेदन करूँ।।83।।

ॐ ह्रीं श्रीकामदेवगणधरगुरुनमितपादकमलाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनुपम' गणीश्वर सर्व उपमारहित अनुपम गुण धरें।
संपूर्ण लोक अलोक में निज कीर्ति बल्ली विस्तरें।।
सब ऋद्धि सिद्धि समेत फिर भी आदिजिन के भक्त थे।
हम भी जजें गणधरगुरु जिनराज को अति भक्ति से।।84।।

ॐ ह्रीं श्रीअनुपमगणधरगुरुवंदितपादपंकेरुहाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद–पूर्णार्घ्य

श्री ऋषभदेव के चौरासी गणधर जिनमुद्रा धारी थे।
चौरासि हजार महामुनि के स्वामी अनवधि गुणधारी थे।।
श्रीऋषभसेन आदिक गणपति श्रीऋषभदेव की भक्ति करें।
गणधरगुरु नमि तीर्थंकर को पूजत निज आतम पुष्ट करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभसेनादि-अनुपमपर्यंतचतुरशीतिगणधरदेववंदितचरणाम्बुजाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

–त्रिभंगी छंद–

जय जय श्री गणधर, धर्मधुरंधर, जिनवर दिव्यध्वनी धारें।
द्वादश अंगों में, अंग बाह्य में, गूँथे ग्रन्थ रचें सारे।।
गुरु नग्न दिगंबर, सर्व हितंकर, तीर्थंकर के शिष्य खरे।
मैं नमूँ भक्ति धर, ऋद्धि निधीश्वर, मुझ शिवपथ निर्विघ्न करें।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

मैं नमूँ मैं नमूँ नाथ गणधार को।
शील संयम गुणों के सुभंडार को।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।2।।

ऋद्धियाँ सर्व तेरे पगों के तले।
सर्व ही सिद्धियाँ आप चरणों भले।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि के तारना।।3।।

धन्य हैं धन्य हैं धन्य हैं ऋद्धियाँ।
वंदते ही फलें ये सभी सिद्धियाँ।।
मैं नमूं मैं नमूं सर्व ऋद्धीधरा।
ऋद्धियों को नमूं मैं नमूं गणधरा।।4।।

बुद्धि ऋद्धी कही हैं अठारा विधा।
विक्रिया ऋद्धियाँ हैं सुग्यारा विधा।।
है क्रियाचारणा ऋद्धि नौ भेद में।
ऋद्धि तप सात विध दीप्त तप आदि में।।5।।

ऋद्धि बल तीन विध शक्तिवर्धन करें।
औषधी आठ विध स्वास्थ्य वर्धन करें।।
ऋद्धि रस षट्विधा क्षीर अमृत स्रवे।
ऋद्धि अक्षीण दो भेद अक्षय धरें।।6।।

आठ विध ये महा ऋद्धि चौंसठ विधा।
भेद संख्यात होते सु अंतर्गता।।
बुद्धि ऋद्धी जजें बुद्धि अतिशय धरें।
विक्रिया पूजते विक्रिया बहु करें।।7।।

चारणी ऋद्धि आकाशगामी करे।
पुष्प जल पर चलें जीव भी ना मरें।।
दीप्ततप आदि ऋद्धी धरें जो मुनी।
कांति आहार बिन भी रहे उन घनी।।8।।

तप्ततप से कभी भी न नीहार हों।
शक्ति ऐसी जगत् सौख्य करतार जो।।
क्षीरस्रावी मधुस्रावि अमृतस्रवी।
इन वचो भी बने क्षीर अमृतस्रवी।।9।।

औषधी ऋद्धि से रुग्ण नीरोग हों।
साधु तनवायु से विषरहित स्वस्थ हों।।
ऋद्धि अक्षीण से अन्न अक्षय करें।
पूजते साधु को पुण्य अक्षय भरें।।10।।

बारहों अंग पूर्वों कि रचना करी।
आज तक भी वही सार[1] में है भरी।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।11।।

गणधरों के बिना दिव्यध्वनि ना खिरे।
पद उन्हें जो प्रभू पास दीक्षा धरें।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।12।।

गणधरों का सुमाहात्म्य मुनि गावते।
कीर्ति गाके कोई पार ना पावते।।

1. अंगपूर्व के अंश-अंश के साररूप में आज जैन ग्रंथ हैं।

नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।13।।

धन्य मैं धन्य मैं धन्य मैं हो गया।
धन्य जीवन सफल आज मुझ हो गया।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।14।।

आप गणइंद्र की भक्ति शोकापहा[1]।
आप की भक्ति ही सर्वसौख्यावहा[2]।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।15।।

पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
'ज्ञानमति' पूर्ण हो सुख असाधारणा।।
नाथ तेरे बिना कोई ना आपना।
शीघ्र संसार वाराशि से तारना।।16।।

–दोहा–

चौबीसों तीर्थेश के, गणधर गुण आधार।
नमूँ नमूँ उनके चरण, मिले स्वात्मनिधिसार।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरस्य वृषभसेनादिचतुरशीतिगणधरचरणेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

1. शोकनाशिनी 2. सुख देने वाली।

पूजा नं.-3

सर्वसाधु पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

जो साधु तीर्थंकर समवसृति में सदा ही तिष्ठते।
वे सात भेदों में रहें निज मुक्तिकांता प्रीति तें।।
ऋषि पूर्वधर शिक्षक अवधिज्ञानी प्रभू केवलि वहां।
विक्रियाधारी विपुलमतिवादी उन्हें पूजूँ यहाँ।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–नाराच छंद

साधु चित्त के समान स्वच्छ नीर लाइये।
साधु चर्ण धार देय पाप पंक क्षालिये।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कांति के समान पीत गंध लाइये।
साधु चर्ण चर्चते समस्त ताप नाशिये।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्ररश्मि के समान धौतशालि लाइये।
चर्ण के समीप पुंज देत सौख्य पाइये।।

प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुगंधि पुष्प थाल में भरें।
कामदेव के जयी मुनीन्द्र पाद में धरें।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरिका इमर्तियाँ सुवर्ण थाल में भरें।
भूख व्याधि नाश हेतु आप अर्चना करें।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप में कपूर ज्योति को जलाइये।
साधुवृंद पूजते सुज्ञान ज्योति पाइये।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध अति सुगंध धूप खेय अग्नि में।
अष्ट कर्म भस्म होत आप भक्ति रंग में।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब आम संतरा बदाम थाल में भरे।
पूजते ही आप चर्ण मुक्तिअंगना वरें।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध आदि से सुवर्ण पुष्प मेलिया।
सुख अनंत हेतु आप पाद में समर्पिया।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि आपको स्वयं वरे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सर्वऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गुरुपद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख हेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(7 अर्घ्य)

-सोरठा-

द्विविध मोक्षपथ मूल, अट्ठाइस हैं मूलगुण।
साध करें अनुकूल, अतः साधु कहलावते।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल –वंदों दिगम्बर गुरुचरण.....

श्री ऋषभ जिनके पूर्वधर, सब पूर्व ज्ञानी ख्यात।
उन कही संख्या चार सहस सु सात सौ पच्चास।।
इन भक्ति से ही भव्यजन, निज लहें ज्ञान अखीर[1]।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथतीर्थंकरस्य पंचाशदधिकचतुःसहस्रसप्तशत-पूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. ज्ञान का अंत - अनंतज्ञान

श्रीऋषभ के शिक्षकमुनी, इक शतक चार हजार।
पुनरपि पचास गिने गये, इनसे खुले शिवद्वार।।
इन भक्ति से ही भव्यजन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य पंचाशदधिकचतुःसहस्रएकशतशिक्षक-ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव के ऋषि अवधिज्ञानी, नौ हजार प्रमाण।
इन पूजते भव व्याधि का हो, शीघ्र ही अवसान[1]।।
इन भक्ति से ही भव्यजन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य नवसहस्रअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव के मुनि केवली हैं बीस सहस प्रमाण।
इन भक्ति नौका जो चढ़ें वे लहें पद निर्वाण।।
इन भक्ति से ही भव्यजन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य विंशतिसहस्रकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विक्रियाधारक मुनि वहाँ छह शतक बीस हजार।
वे भव्यजन की तृप्त करते तरण तारणहार।।
इन भक्ति से ही भव्यजन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य विंशतिसहस्रषट्शतकविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विपुलमति बारह सहस अरु, सात शतक पचास।
ये मनःपर्यय ज्ञान से नित करें भुवन प्रकाश।।

1. अन्त

इन भक्ति से ही भव्यजन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य पंचाशदधिकद्वादशहस्रसप्तशतविपुलमतिज्ञानि-ऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वादी मुनी बारह सहस अरु सात शतक पचास।
ये वाद करने में कुशल नित करें धर्म प्रकाश।।
इन भक्ति से ही भव्यजन, निज लहें ज्ञान अखीर।
इन साधु को मैं हृदय धारूँ, करें भवदधि तीर।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य पंचाशदधिकद्वादशहस्रसप्तशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

समवसरण में ऋषभ के, ऋषि चौरासि हजार।
नमूँ नमूँ मैं अर्घ ले, जजूँ खुले शिवद्वार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथस्य चतुरशीतिसहस्रऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

श्री भरत स्वामी का अर्घ्य

सर्व संपत्ति धर आप अनमोल हो।
अर्घ से पूजते स्वात्म कल्लोल हो।।
आदि तीर्थेश सुत आदि चक्रेश को।
मैं जजूं भक्ति से आप भरतेश को।।1।।

ॐ ह्रीं दीक्षानंतरान्तर्मुहूर्तमध्यकेवलज्ञानप्राप्तप्रथमचक्रवर्तिश्रीभरतस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

जल चंदन तंदुल पुष्प चरू, दीपक वर धूप फलों से युत।
क्षायिक लब्धी हित ''ज्ञानमती'', यह अर्घ समर्पण करूँ सतत।।

हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं प्रथमकामदेवपदप्राप्त-श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंतवीर्य आदि 98 सिद्धपरमेष्ठियों का अर्घ्य

–दोहा–

श्री ऋषभदेव के शेष सुत, अट्ठानवें प्रमाण।
मुक्तिप्राप्त उनको जजूँ, शत शत करूँ प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवपुत्र-मुक्तिप्राप्तअनंतवीर्यादिअष्टनवतिसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

श्री ऋषभदेव के पौत्र - 923 सिद्धपरमेष्ठियों का अर्घ्य

भरतेश्वर के पुत्र भी नवसौ तेइस मान।
दीक्षा ले शिवपुर गये, जजूँ सदा धर ध्यान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवपौत्र-नवशतत्रयस्त्रिंशत्मुक्तिपदप्राप्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

इक्ष्वाकुवंशीय सिद्धपरमेष्ठी अर्घ्य

(अविच्छिन्न परंपरागतमुक्तिपदप्राप्त 14 लाख सिद्धों के अर्घ्य)

1. ॐ ह्रीं श्री भरतेश्वरसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्री अर्ककीर्तिसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं श्री स्मितयशःसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं श्री बलसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं श्री सुबलसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्री महाबलसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं श्री अतिबलसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं श्री अमृतबलसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं श्री सुभद्रसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं श्री सागरसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. ॐ ह्रीं श्री भद्रसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं श्री रवितेजःसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्री शशिसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं श्री प्रभूततेजःसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं श्री तेजस्विसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं श्री तपनसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं श्री प्रतापवद्सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं श्री अतिवीर्यसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं श्री सुवीर्यसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं श्री उदितपराक्रमसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रविक्रमसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं श्री सूर्यसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं श्री इन्द्रद्युम्नसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं श्री महेन्द्रजित्सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं श्री प्रभुसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं श्री विभुसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं श्री अविध्वंससिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं श्री वीतभीसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं श्री वृषभध्वजसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं श्री गरुडांकसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं श्री मृगांकसिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

ऋषभेश्वर के इक्ष्वाकुवंश में, चौदह लाख प्रमित राजा।
निज सुत को राज्यसौंप दीक्षा, ले सिद्ध बने शिव के राजा।।
इन अविच्छिन्न सब सिद्धों को, पूर्णार्घ्य चढ़ाकर यजते हैं।
हम भी उनके समीप पहुँचें, बस यही याचना करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री युगादि-इक्ष्वाकुवंशीय-अविच्छिन्नसिद्धपदप्राप्तचतुर्दशलक्ष-सिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषभदेव के शासन में, संख्यातीते मुनि मोक्ष गये।
उन सबको प्रणमूँ बार बार, मेरे सब वांछित सिद्ध भये।।
जो सिद्धों की पूजा करते, वे इक दिन सिद्धी पायेंगे।
संसार भ्रमण के दुःखों से, छूटें भवदधि तिर जायेंगे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवशासनकालीनसंख्यातीतमुनि-मुक्तिपदप्राप्त-सिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

त्रिभंगी छंद

जय जय सब मुनिगण, भूषित गुणमणि, मूलोत्तर गुण पूर्ण भरें।
जय नग्न दिगम्बर मुक्ति वधूवर, सुरपति नरपति चरण परें।।
मैं पूजूँ तुमको, नित सुमती दो, पाप पुंज अंधेर टले।
होवे सब साता, मिटे असाता, पुण्य राशि हो ढेर भले।।1।।

–नाराच छंद–

नमूँ नमूँ मुनीश! आप पाद पद्म भक्ति से।
भवीक वृंद आप ध्याय कर्म पंक धोवते।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।2।।

अठाइसों हि मूलगुण धरें दया निधान हैं।
अठारहों सहस्र शील धारते महान हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।3।।

चुरासि लाख उत्तरी गुणों कि आप खान हैं।
समस्त योग साधते अनेक रिद्धिमान हैं।।

अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।4।।

समस्त अंगपूर्व ज्ञान सिंधु में नहावते।
निजात्म सौख्य अमृतैक पूर स्वाद पावते।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।5।।

अनेक विध तपश्चरण करो न खेद है तुम्हें।
अनंत ज्ञानदर्श वीर्य प्राप्ति कामना तुम्हें।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।6।।

सु तीन रत्न से महान आप रत्न खान हैं।
अनेक रिद्धि सिद्धि से सनाथ पुण्यवान हैं।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।7।।

परीषहादि आप से डरें न पास आवते।
तुम्हीं समर्थ काम मोह मृत्यु मल्ल मारते।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।8।।

बिहार हो जहाँ जहाँ सु आप तिष्ठते जहाँ।
सुभिक्ष क्षेम हो सदैव ईति भीति ना वहाँ।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।9।।

सुधन्य धन्य पुण्यभूमि आपसे हि तीर्थ हो।
सुरेंद्र चक्रवर्ति वंद्य भूमि भी पवित्र हो।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।10।।

जयो जयो मुनीश! आप भक्ति मोह को हरे।
जयो मुनीश! आप भक्त आत्मशक्ति को धरें।।

अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।11।।

अपूर्व मोक्षमार्ग युक्ति पाय मुक्ति को वरें।
पुनर्भवों से छूट के सु पंचमी गती धरें।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।12।।

मुनीश! आप पास आय स्वात्म तत्त्व पा लिया।
समस्त कर्म शून्य ज्ञान पुंज आत्म जानिया।।
अनाथ नाथ! भक्त की सदा सहाय कीजिये।
प्रभो! मुझे भवाब्धि से अबे निकाल लीजिये।।13।।

–दोहा–

छट्ठे गुणस्थान से, चौदहवें तक मान्य।
नमूँ नमूँ सब साधु को, मिले 'ज्ञानमति' साम्य।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य प्रमत्तादि-अयोगिगुणस्थानपर्यंतसर्वऋषिभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-4

आर्यिका पूजा

–अथ स्थापना-गीता छंद–

श्री ऋषभप्रभु के समवसृति में आर्यिकायें मान्य हैं।
गणिनी प्रथम श्रीमात ब्राह्मी सर्व में हि प्रधान हैं।।
व्रतशील गुण से मंडिता इंद्रादि से पूज्या इन्हें।
आह्वान करके पूजहूँ त्रयरत्न से युक्ता तुम्हें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–गीता छंद

गंगा नदी का नीर शीतल स्वर्ण झारी में भरूँ।
निज कर्ममल को धोवने हित मात पद धारा करूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुख-सर्वार्यिकाचरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी चंदन सुगंधित घिस कटोरी में भरूँ।
तुम पाद पंकज चर्चते भवताप की बाधा हरूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुख-सर्वार्यिकाचरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंडित शालि तंदुल धोय थाली में भरूँ।
तुम पाद सन्निध पुंज धरते सर्व दुख का क्षय करूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली केवड़ा अरविंद सुरभित पुष्प से।
तुम पाद कुसुमावलि किये यश सुरभि फैले चहुँदिशे।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक इमरती सेमई पायस पुआ पकवान से।
तुम पाद पंकज पूजते क्षुध रोग मुझ तुरतहिं नशे।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योती रजत दीपक में जला आरति करूँ।
अज्ञानतम को दूर कर निज ज्ञान की ज्योती भरूँ।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप सुगंध खेकर कर्म अरि भस्मी करूँ।
तुम पाद पंकज पूजते निज आत्म की शुद्धी करूँ।।

सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेब अनार केला आम फल को अर्पते।
निज आत्म अनुभव सुख सरस फल प्राप्त हो तुम पूजते।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज दीप धूप फलादि से।
मैं अर्घ अर्पण करूँ माता! आपको अति भक्ति से।।
सद्धर्म कन्या आर्यिकाओं की सदा पूजा करूँ।
माता चरण वंदन करूँ निज आत्म की रक्षा करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य गणिनीब्राह्मीप्रमुखसर्वार्यिकाचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

व्रत गुण मंडित मात के, चरणों में त्रय बार।
शांतीधारा मैं करूँ, होवे शांति अपार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका केवड़ा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि चरणों करूँ, करूँ स्वात्म शृंगार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

(3 अर्घ्य)

–सोरठा–

महाव्रतादी श्रेष्ठ, गुण भूषण को धारतीं।
पूजूँ भक्ति समेत, पुष्पांजलि करके यहाँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री ऋषभदेव के समवसरण में, ब्राह्मी-गणिनी मानी हैं।
श्री ऋषभदेव की पुत्री ये, साध्वी में प्रमुख बखानी हैं।।
रत्नत्रय गुणमणि से भूषित, ये शुभ्र वस्त्र को धारे हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती, हमको भवदधि से तारे है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य प्रथमगणिनीब्राह्मीमात्रे अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदरी आर्यिका मात आदि, त्रय लाख पचास हजार कही।
मूलोत्तर गुण से भूषित ये, इन्द्रादिक से भी पूज्य कहीं।।
इनकी भक्ती पूजा करके, हम त्याग धर्म को यजते हैं।
संसार जलधि से तिरने को, आर्यिका मात को नमते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रयलक्षपंचाशत्सहस्रसुन्दरी-प्रमुखार्यिकाचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ऋषभदेव के शासन में, आर्यिका मात अगणित मानी।
उनके चरणों में नित्य नमूँ, ये संयतिका पूज्य मानी।।
इनकी भक्ती पूजा करके, हम त्याग धर्म को यजते हैं।
संसार जलधि से तिरने को, आर्यिका मात को नमते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवस्य शासनकालीन सर्वार्यिका चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

लाख पचास छप्पन सहस, दो सौ तथा पचास।
समवसरण की साध्वियां, और अन्य भी खास।।
अट्ठाइसों मूलगुण, उत्तर गुण बहुतेक।
धारें सबहीं आर्यिका, नमूँ नमूँ शिर टेक।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितब्राह्मीप्रमुखपंचाशल्लक्षषट्-पंचाशत्सहस्रद्वयशतपंचाशत्आर्यिकाचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, चतुर्थ काल से लेकर भी।
इस पंचमकाल के अंतिम तक, सर्वश्री संयतिका होंगी।।

ब्राह्मी माता से सर्वश्री, माता तक जितनी संयतिका।
जो हुईं हो रहीं होवेंगी, मैं जजूँ भक्ति भवदधि नौका।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थचतुर्थकालादिपंचमकालान्त्यपर्यंतब्राह्मी-गणिनीप्रमुखप्रभृतिसर्वश्रीआर्यिकापर्यंतसर्वार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–1. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः।** (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

–त्रिभंगी छंद–

जय जय जिनश्रमणी, गुणमणि धरणी, नारि शिरोमणि सुरवंद्या।
जय रत्नत्रयधनि, परम तपस्विनि, स्वात्मचिंतवनि त्रय संध्या।।
मुनि सामाचारी, सर्व प्रकारी, पालनहारी अहर्निशी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तुम गुण गाऊँ, निजपद पाऊँ ऊर्ध्वदिशी।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।
आप सम्यक्त्व से शुद्ध निर्दोष हो।
शास्त्र के ज्ञान से पूर्ण उद्योत हो।।2।।

शुद्ध चारित्र संयम धरा आपने।
श्रेष्ठ बारह विधा तप चरा आपने।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।3।।

एक साड़ी परिग्रह रहा शेष है।
केशलुंचन करो आर्यिका वेष है।।

धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।4।।

आतपन आदि बहु योग को धारतीं।
क्रोध कामारि शत्रू सदा मारतीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।5।।

अंग ग्यारह सभी ज्ञान को धारतीं।
मात! हो आप ही ज्ञान की भारती।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।6।।

भक्तजनवत्सला धर्म की मूर्ति हो।
जो जजें आपको आश की पूर्ति हो।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।7।।

मात ब्राह्मी प्रमुख आर्यिका साध्वियाँ।
अन्य भी जो हुई हैं महासाध्वियाँ।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।8।।

चंद्र सम कीर्ति उज्ज्वल दिशा व्यापती।
सूर्य सम तेज से पाप तम नाशतीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।9।।

सिंधुसम आप गांभीर्य गुण से भरीं।
मेरु सम धैर्य भू-सम क्षमा गुण भरीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।10।।

बर्फ सम स्वच्छ शीतल वचन आपके।
श्रेष्ठ लज्जादि गुण यश कहें आपके।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।11।।

आर्यिका वेष से मुक्ति होवे नहीं।
संहनन श्रेष्ठ बिन कर्म नशते नहीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।12।।

सोलवें स्वर्ग तक इंद्र पद को लहें।
फेर नर तन धरें साधु हों शिव लहें।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।13।।

जैन सिद्धांत की मान्यता है यही।
संहनन श्रेष्ठ बिन शुक्ल ध्यानी नहीं।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।14।।

अंबिके! आपके नाम की भक्ति से।
शील सम्यक्त्व संयम पलें शक्ति से।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।15।।

आत्मगुण पूर्ति हेतू जजूँ मैं सदा।
नित्य वंदामि करके नमूँ मैं मुदा।।
धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।16।।

'ज्ञानमति' पूर्ण हो याचना एक ही।
अंब! पूरो अबे देर कीजे नहीं।।

धन्य धन्या मही आर्यिकायें जहाँ।
मैं नमूँ मैं नमूँ मात! तुमको यहाँ।।17।।

–घत्ता–

जय जय जिन साध्वी, समरस माध्वी, तुममें गुणमणि रत्न भरें।
तुम अतुलित महिमा, पुण्य सुगरिमा, हम पूजें निज सौख्य भरें।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकरस्य ब्राह्मीप्रमुखत्रयलक्षपंचा-शत्सहस्रआर्यिका-तत्शासनकालीनसर्वार्यिकाचरणेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-5

सहस्रनाम मंत्र पूजा

स्थापना –शंभु छंद

प्रभु ऋषभदेव के गुण अनंत, ऐसे ही नाम अनंते हैं।
शारद माँ कहने में अक्षम, गणधर भी नहिं कह सकते हैं।।
उनमें से कुछ कुछ नाममंत्र, लेकर हम पूजा करते हैं।
आह्वानन आदि विधी करके, निज स्वात्म संपदा भरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक-स्रग्विणी छंद

घातिया पापमल धो लिया आपने।
नीर ले मैं जजूँ स्वात्ममल धोवने।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोह अरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व संताप को नाशिया आपने।
गंध से पूजहूँ शांतिकर पाद मैं।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

आप सौख्याब्धि में आप अवगाहते।
शालि से जो जजें स्वात्मसुख पावते।।

आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामशर जीत के आप विष्णू बने।
कल्पतरु के सुमन लेय अर्चूं तुम्हें।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदना भूख की ना कभी छोड़ती।
यदि चरू से जजें शीघ्र मुख मोड़ती।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंधेर हन पूर्ण ज्योति धरें।
दीप से पूजते ज्ञान ज्योती भरें।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को खेवते कर्म ईंधन जले।
आपके पाद ही सर्व तीरथ भले।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियों के विषय छोड़ निज सुख लिया।
आपको फल चढ़ा स्वात्मरस चख लिया।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यादि से अर्घ्य सुन्दर लिया।
आपको अर्चते पाप सब क्षय किया।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

नाममंत्र को पूजहूँ, शांतीधारा देय।
सर्व सौख्य संपति मिले, आत्मसुधा बरसेय।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प बहु, सुरभित दिक् महकंत।
पुष्पांजलि अर्पण किये, आतम सुख विलसंत।।
आपके नाम मंत्राक्षरों को जजूँ।
मोहअरि नाश के मोक्ष सुख को भजूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

–सोरठा–

गुण अनंत भंडार, नाम असंख्यों धारते।
स्वात्म सौख्य कर्तार, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

'श्रीमान' आप अंतर अनंत सुख ज्ञान वीर्य दर्शन श्रीपति।
बहिरंग समवसरणादि महावैभव प्रातिहार्यमयी श्रीपति।।
इन अन्तरंग बहिरंग श्री के स्वामी प्रभु श्रीमान् बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'स्वयंभू' स्वयं हुये निज में निज ज्ञान प्रगट करके।
नहिं गुरु की तनिक अपेक्षा थी निज को गुरु स्वयं बना करके।।
निज द्वारा निज को निज में ध्या, स्वयमेव स्वयंभू आप बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।2।।

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वृषभ' धर्मघन मेघ सतत् दिव्यध्वनि वर्षा करते हैं।
'वृष' धर्म अहिंसा लक्षण से 'भा' शोभित होते रहते हैं।।
अथवा भक्तों के लिये सदा इच्छित वर्षाकर वृषभ बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभव' शं-सुख भव-हो तुमसे इससे शंभव कहलाते हो।
अथवा 'संभव' सं-समीचीन भव-जन्म धरा मुस्काते हो।।
हे संभव शांतिमूर्ति प्रभु तुम वंदन करते हम शांत बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।4।।

ॐ ह्रीं शंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शम्भू' शं-परमानंदरूप सुख देने वाले आप प्रभो।
इंद्रिय विषयों से रहित अतींद्रिय सौख्य सुधारस लीन विभो।।
परमानंदामृत पीने की शक्ती दीजे हे नाथ! हमें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।5।।

ॐ ह्रीं शंभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा से हुये 'आत्मभू' हैं आत्मा शुद्ध बुद्ध स्वभावी है।
चिच्चमत्कार लक्षण परमैक ब्रह्ममय सौख्य स्वभावी है।।
टंकोत्कीर्ण स्फटिकमणी आत्मा भु-धरा पाइ तुमने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।6।।

ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'स्वयंप्रभ' आप स्वयं, प्रकृष्ट शोभते रहते हैं।
निज प्रभा-कांति से त्रिभुवन को भी आप प्रकाशित करते हैं।।

मेरी निज आत्मप्रभा मुझको, मिल जावे गुणमणि तेज घने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।7।।
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'प्रभु' हो सबके स्वामी होने से इस जग में।
परिपूर्ण समर्थ नाथ तुम ही, भक्तों के मनरथ भरने में।।
मैं स्वयं समर्थ बनूँ निज को, पाने से सब पुरुषार्थ बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।8।।
ॐ ह्रीं प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भोक्ता' प्रभु आप सदा परमानंदसुख के अनुभव कर्ता हैं।
निज के अनंत दृग ज्ञान वीर्य सुखरूप चतुष्टय भर्ता हैं।।
निज आत्मा से उत्पन्न परम आह्लाद सौख्य हो प्राप्त हमें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।9।।
ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'विश्वभू' केवलज्ञान अपेक्षा व्याप्त विश्व में हो।
अथवा भू-मंगल करे विश्व का या वृद्धी भी करते हो।।
भू गत्यर्थक-ज्ञानार्थक है त्रैलोक्य ज्ञान है नाथ तुम्हें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।10।।
ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अपुनर्भव' नाथ पुवर्भव नहिं प्रभु जन्म मरण से छूट चुके।
अथवा भव-रुद्र विष्णु ब्रह्मा इन देवरूप नहिं हो सकते।।
अर्हत सर्वज्ञ आप भगवान् नहिं पुनर्जन्म धरते जग में।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।11।।
ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वात्मा' आप विश्व को निज सदृश गिनते विश्वात्मा हैं।
या विश्व-सुकेवल ज्ञानमयी आत्मा-स्वरूप विश्वात्मा हैं।।
त्रिभुवनस्थित प्राणीगण को, निज सदृश गिना सु दयालु बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।12।।
ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वलोकेश' विश्वके-तीनलोक के जीवों के।
प्रभु ईश-नाथ बस एक आप, नहिं अन्य कोई भी बन सकते।।
जो खुद की रक्षा कर न सके, वो जग के ईश कभी न बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।13।।
ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'विश्वतश्चक्षु' आप सब विश्व-लोक में व्याप्त हुआ।
चक्षू-केवल दर्शन प्रभु का इससे प्रभु ने सब देख लिया।।
श्रुतचक्षू से केवलचक्षू पाया जगदर्शी आप बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।14।।
ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षर' प्रभु क्षरण न होता है,नहिं चलित आप हो सकते हैं।
या अक्ष-इंद्रियों को मन को, वश में कर अक्षर बनते हैं।।
तुम नाम स्तुति करते करते, मेरा भी अक्षर नाम बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।15।।
ॐ ह्रीं अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्ववित्' ज्ञानरश्मि से विश्व माहिं सुप्रविष्ट हुये।
सब विश्व-चराचर जग जाना, अतएव विश्ववित् प्रगट हुये।।
यह आत्मा ज्ञानस्वभावी है मुझ अल्पज्ञान भी पूर्ण बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।16।।
ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वविद्येश' आपकी विद्या विश्वा-सकला है।
वह सकल विमल कैवल्य ज्ञानमय पूर्ण स्वरूप अविकला है।।
तुम गुण गा-गाकर भव्य जीव, सब विद्याओं के ईश बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।17।।
ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वयोनि' संपूर्ण पदार्थों की उत्पत्ति के कारण हो।
संपूर्ण पदार्थों के उपदेशक विश्वयोनि जग तारण हो।।

तुम नाम मंत्र जपते जपते, भाक्तिक जन तुम सम नाथ बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।18।।
ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अनश्वर' कभी नाश, नहिं हो सकता युग युग तक भी।
आत्मा के नाशक गुणघातक, कर्मों का नाश किया है भी।।
प्रभु मुझे अनश्वर पद दे दो, इस हेतु वंदना करूँ तुम्हें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।19।।
ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वदृश्वा' सो जग को इक क्षण में देख लिया।
तुम गुणस्तुति करते करते, भव्यों ने तुमको देख लिया।।
मैं भी तुमको अवलोकन कर, निज को देखूँ यह युक्ति बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।20।।
ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभु' आप विशेष करें मंगल, भवि के तारन में समरथ हैं।
निज समवसरण में प्रभू राजते लोकालोक विजानत हैं।।
निजकेवलज्ञानकिरण से लोकालोक व्याप्त कर विभू बनें।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।21।।
ॐ ह्रीं विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धाता' चहुँगति में पड़े जीव को निकाल कर मुक्तिपद में।
धर देते अथवा सर्व प्राणियों, का पालन करते जग में।।
प्रभु परम कारुणिक आप, सर्व रक्षा कर धाता स्वयं बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।22।।
ॐ ह्रीं धात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वेश' विश्व-त्रैलोक्य ईश-स्वामी त्रिभुवन के रक्षक हो।
उपदेश अहिंसामयी दिया, सबके बंधू प्रतिपालक हो।।
प्रभु धर्म आपका विश्व धर्म, भवसागर तारण सेतु बने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।23।।
ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वलोचन' त्रिभुवन, प्राणी के चक्षु समान कहें।
सबको हित का उपदेश दिया, इस कारण सबके नेत्र कहें।।
अथवा सब जग का इक क्षण में, अवलोकन करते आप घने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।24।।
ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'विश्वव्यापी' कण-कण में ज्ञान आपका व्याप रहा।
त्रिभुवन के सर्वपदार्थ आप, जाने ऐसा विज्ञान लहा।।
नहिं आत्म प्रदेशों से व्यापक, तन में ही रहें प्रदेश घने।
मैं प्रभु नामावलि को पूजूँ मेरे सब इच्छित कार्य बनें।।25।।
ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–हरिगीतिका छंद–

'विधु[1]' आप कर्म विधान करते कर्म विधि बतलावते।
निजज्ञान केवल किरण से, मोहान्धकार भगावते।।
निज ज्ञानज्योति प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मंत्र अमोघ शक्ति, उसी की चर्चा करूँ।।26।।
ॐ ह्रीं विधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'वेधा' धर्म की सृष्टी करें सुखहेतु हैं।
जिनधर्म तीर्थ चलावते, इस हेतु भवदधि सेतु हैं।।निज.।।27।।
ॐ ह्रीं वेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम 'शाश्वत' धारते, शश्वत विराजें मोक्ष में।
निज भक्त को शाश्वत परमपद, दें रहे हैं लोक में।।निज.।।28।।
ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वतोमुख' समवसृति में, चारदिश चउमुख दिखें।
या जल सदृश भवि पाप कीचड़, धोय स्वच्छ सु कर सकें।।निज.।।29।।
ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वकर्मा' कर्मभूमी, की व्यवस्था के समय।
असि मषि प्रभृति सब क्रिया, उपदेशी सभी को उस समय।।निज.।।30।।
ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. आदिपुराण में 'विधि' पाठ है।

प्रभु 'जगज्जेष्ठ' त्रिलोक में, भी ज्येष्ठ-श्रेष्ठ महान हैं।
तुमसे बड़ा नहिं और कोई, अतः सर्व प्रधान हैं।।
निज ज्ञानज्योति प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मंत्र अमोघ शक्ति, उसी की चर्चा करूँ।।31।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वमूर्ति' अनंत गुणमय देहधारी आप हैं।
या सर्व वस्तु ज्ञान दर्पण में, झलकते साफ हैं।।निज.।।32।।

ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'जिनेश्वर' भव्य, सम्यग्दृष्टि मुनिगण आदि के।
ईश्वर कहाते आप इस, हेतू जिनेश्वर सार्व के।।निज.।।33।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वदृक्' संसार की, सब वस्तु सत्तामात्र से।
अवलोकते हैं आप नित, प्रति सर्वदर्शी नाम से।।निज.।।34।।

ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वभूतेशा' तुम्हीं, सब प्राणिगण के ईश हैं।
या विश्वभू-त्रैलोक्य लक्ष्मी, ईश सब भूतेश हैं।।निज.।।35।।

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वज्योती' विश्व के लोचन जगत में ख्यात हैं।
प्रभु आप केवलज्ञान ज्योती, सर्व जग में व्याप्त है।।निज.।।36।।

ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'अनीश्वर' आप सम, नहिं अन्य ईश्वर लोक में।
प्रभु ईश सबके आप नहिं कोई, आपका प्रभु लोक में।।निज.।।37।।

ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिन' आप घाती कर्मशत्रू, जीतकर 'जिन' हो गये।
मन इंद्रियों को जीतकर, 'जिन' नाम सार्थक कर दिये।।निज.।।38।।

ॐ ह्रीं जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जिष्णु' तुम कर्मारि जीतन, का स्वभाव प्रसिद्ध है।
जयशील शासन आपका, जग में सदैव विशुद्ध है।।निज.।।39।।

ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमेयात्मा' आप में, आनन्त्य गुण अतिशय भरे।
नहिं जान सकता अन्य कोई, माप नहिं सकता खरे।।निज.।।40।।

ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वरीश' तुम्हीं मही के ईश जग में ख्यात हैं।
इस हेतु भविजन नित्य ही, तुम को नमाते माथ हैं।।निज.।।41।।

ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगत्पति' त्रैलोक्य के, स्वामी भविक त्राता तुम्हीं।
रक्षा करो सब द्वंद्व से, सुख शांति होवे आज ही।।निज.।।42।।

ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'अनंतजित्' मिथ्यात्व आदी जीत के।
प्रभु नाम सार्थक कर दिया, संसार अनंत सु जीत के।।निज.।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अचिन्त्यात्मा' तुम स्वरूप, अचिन्त्य जन मन वचन से।
नहिं चिंतवन कर सके कोई, आप आत्मा चित्त से।।निज.।।44।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'भव्यबंधु' भव्य जन के, बंधु उपकारक तुम्हीं।
जो रत्नत्रय के योग्य हैं उनके हितंकर हो तुम्हीं।।निज.।।45।।

ॐ ह्रीं भव्यबंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'अबंधन' कर्म बंधन, से रहित गुणखान हो।
सब मोहद्वय आवरण विघ्न विघात कर जग मान्य हो।।निज.।।46।।

ॐ ह्रीं अबंधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'युगादीपुरुष' चौथे काल युग की आदि में।
प्रभु तीर्थकर पहले हुये युग आदि पुरुष भरत में।।निज.।।47।।

ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मा' सुकेवल ज्ञान आदिक गुण सुवृद्धिंगत हुये।
निज शुद्ध आत्मजनित सुखामृत तृप्त ब्रह्मा तुम्हीं हुये।।
निज ज्ञानज्योति प्रगट हेतू, नाथ मैं अर्चा करूँ।
तुम नाम मंत्र अमोघ शक्ति, उसी की चर्चा करूँ।।48।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पंचब्रह्मामय' सु पांचों ज्ञानमय विख्यात हो।
या पंचपरमेष्ठी स्वरूप अनंत गुण से सार्थ हो।।निज.।।49।।

ॐ ह्रीं पंचब्रह्मामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिव' मोक्ष हो आनंदमय, हो सर्व दोष विहीन हो।
निर्वाण अक्षय शांत परम कल्याण पद में लीन हो।।निज.।।50।।

ॐ ह्रीं शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद–

प्रभु 'पर' नाम सुआप, सब जीवों को पालें।
ज्ञान आदि गुण सर्व, पूरण करने वाले।।
नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।51।।

ॐ ह्रीं पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' नाम धरंत, सबसे श्रेष्ठ तुम्हीं हो।
हित उपदेश करंत, प्रभु सर्वेश तुम्हीं हो।।नाम.।।52।।

ॐ ह्रीं परतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूक्ष्म' आप मन इंद्रिय, इनके विषय नहीं हो।
केवलज्ञान अतींद्रिय, उनके विषय सही हो।।नाम.।।53।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेष्ठी' प्रभु परम, उत्तम पद में तिष्ठो।
अर्हत सिद्धाचार्य आदि पाँचपद तिष्ठो।।नाम.।।54।।

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'सनातन' आप सदा एक से रहते।
सदा सदा विद्मान, रूप पुरातन धरते।।नाम.।।55।।

ॐ ह्रीं सनातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंज्योति' प्रभु आप, स्वयं आत्मा ज्योती।
चक्षु जगत्प्रकाश, स्वयं सूर्यमय ज्योती।।नाम.।।56।।

ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आप 'अज' नाम, जग में नहिं उत्पत्ती।
सदा जपूँ आप नाम, मिले निजातम शक्ती।।नाम.।।57।।

ॐ ह्रीं अजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अजन्मा' आप, जन्म कभी नहिं धारो।
गर्भवास नहिं आप, मेरा जन्म निवारो।।नाम.।।58।।

ॐ ह्रीं अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मयोनि' प्रभु आप, द्वादशांगमय वेदा।
इनकी उतपति आप, से होती बिन खेदा।।नाम.।।59।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अयोनिज' आप, योनी लाख चुरासी।
इनमें नहिं उत्पाद, हरो सकल दुख राशी।।नाम.।।60।।

ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मोहारीविजयीश', मोहशत्रु को जीता।
या अरि मोह के आप, विजयशील शिवनीता[1]।।नाम.।।61।।

ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु मल्ल को जीत, 'जेता' आप कहाये।
सर्व जगत में मीत[2], कर्म शत्रु जय पाये।।नाम.।।62।।

ॐ ह्रीं जेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र के ईश, श्री विहार कर जग में।
भव्यों को संबोध, 'धर्मचक्रि' त्रिभुवन में।।नाम.।।63।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'दयाध्वज' आप, दया ध्वजा फहरायी।
अथवा दया सुमार्ग, प्रगटाया सुखदायी।।

1. प्राप्त किया। 2. मित्र।

नाम मंत्र तुम पूज्य, मैं पूजूँ भक्ती से।
भविमन पंकज सूर्य, शिव पाऊँ युक्ती से।।64।।

ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तारि' प्रभु आप, कर्म शत्रु बलवंता।
उनको किया प्रशांत, पूर्ण शांत भगवंता।।नाम.।।65।।

ॐ ह्रीं प्रशान्तारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अनंतात्मा' अनंत केवलज्ञानी।
या अनंत अविनाश, अंतरहित शिवगामी।।नाम.।।66।।

ॐ ह्रीं अनंतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगी' चित्त निरोध, करके निज को ध्याया।
मन वच तन कर शुद्ध, परम समाधि लगाया।।नाम.।।67।।

ॐ ह्रीं योगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगी' मुनि के ईश, गणधर से भी अर्चित।
'योगिश्वरार्चित' गीत, तीन भुवन में चर्चित।।नाम.।।68।।

ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'ब्रह्मवित्' आप, ब्रह्म-आत्म को जाना।
उसका अनुभव-स्वाद, कर लीना शिव थाना।।नाम.।।69।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' आत्मतत्त्व के ज्ञानी।
ज्ञान दया का मर्म, जान हुये निज ज्ञानी।।नाम.।।70।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मोद्याविद्' आप, ब्रह्म विद्या के वेत्ता।
आत्म विद्या के नाथ, त्रिभुवन के गुरु नेता।।नाम.।।71।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'यतीश्वर' आप, यतियों के ईश्वर हो।
रत्नत्रय में यत्न करें यती उन गुरु हो।।नाम.।।72।।

ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुद्ध' आप रागादि, भाव कर्ममल रहिता।
फटिकमणी सम नाथ, करो मुझे मल रहिता।।नाम.।।73।।

ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्ध' आप संपूर्ण, वस्तु जानते ज्ञानी।
केवलज्ञान सुबुद्धि, पायी अंतर्यामी।।नाम.।।74।।

ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रबुद्धात्मा' आप, सदा आपकी आत्मा।
शुद्ध ज्ञान से जगमगती सर्व गुणात्मा।।नाम.।।75।।

ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई–

नाम 'सिद्धार्थ' धरें जगसिद्धा।
सर्व प्रयोजन हुये सुसिद्धा।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ।
परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।76।।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सिद्धशासन' तुम जग में।
शासन सर्व हितंकर सच में।।मैं.।।77।।

ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्ध' निजगुणमणि नंते।
प्राप्त किया, शिवगामी संते।।मैं.।।78।।

ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सिद्धांतविद्' सर्वप्रकाशी।
द्वादशांग जानो, निज भासी।।मै.।।79।।

ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्येय' आप, मुनिगण आराध्या।
योगिध्यान के ध्येय सुसाध्या।।मै.।।80।।

ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धसाध्य' प्रभु के सब कार्या।
सिद्ध हो चुके हैं, निरबाध्या।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ।
परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।81।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगद्धित' जग हितकर्ता।
सबके लिये 'पथ्य' सुखभर्ता।।मैं.।।82।।

ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहिष्णु' गुण क्षमा धरे हो।
सहनशील हो सौख्य भरे हो।।मै.।।83।।

ॐ ह्रीं सहिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अच्युत' निज स्वभाव से च्युत ना।
ज्ञानादिकगुण युत परमात्मा।।मैं.।।84।।

ॐ ह्रीं अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अनंत' अंतक से रहिता।
गुण अनंत सुख आदिक सहिता।।मैं.।।85।।

ॐ ह्रीं अनंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभविष्णू' बहु प्रभावशाली।
शक्ती अनंती समरथशाली।।मैं.।।86।।

ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'भवोद्भव' भव सब श्रेष्ठा।
पंचविद्या संसार विनष्टा।।मैं.।।87।।

ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रभूष्णु' सब शक्तीशाली।
इंद्रादिक के प्रभु गुणमाली।।मैं.।।88।।

ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजर' वृद्ध नहिं होते कबहूँ।
सर्व दुःख नाशो मुझ अबहूँ।।मैं.।।89।।

ॐ ह्रीं अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अजर्य[1]' नाम के धारी।
तुम गुण जीर्ण न हों अविकारी।।मैं.।।90।।

ॐ ह्रीं अजर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भ्राजिष्णू' ज्ञानादि गुणों से।
अतिशय दीप्तमान् निज सुख से।।मैं.।।91।।

ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश्वर' केवलज्ञानमयी जों
बुद्धी उसके ईश्वर प्रभु हो।।मैं.।।92।।

ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अव्यय' व्यय नहिं नाथ तुम्हारा।
शिवपद प्राप्त किया सुखकारा।।मै.।।93।।

ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेंधन को अग्निसमाना।
'विभावसु' तमहर रवि माना।।मैं.।।94।।

ॐ ह्रीं विभावसवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनि उत्पन्न जगत में नहिं हों।
'असंभूष्णू' मुझ जन्म विलय हो।।मै.।।95।।

ॐ ह्रीं असंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंभूष्णु' स्वयमेव हुये हो।
सिद्ध अवस्था प्राप्त किये हो।।मै.।।96।।

ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुरातन' बहु प्राचीना।
द्रव्यदृष्टि से आदि विहीना।।मैं.।।97।।

ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. टीकाकार ने 'अयज्यः' पाठ माना है।

'परमात्मा' अतिशय उत्कृष्टा।
परम ज्ञानसुख गुणमणि निष्ठा।।
मैं प्रभु नाममंत्र को जपहूँ।
परमानंदमय निजसुख भजहूँ।।98।।

ॐ ह्रीं परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमोत्कृष्ट ज्योतिमय ज्ञानी।
'परंज्योति' गुणमणि रजधानी।।मै.।।99।।

ॐ ह्रीं परंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन जगत् के परमेश्वर हो।
'त्रिजगत्परमेश्वर' प्रभु तुम हो।।मै.।।100।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

'श्रीमान' नाम से लेकर के, 'त्रिजगत्परमेश्वर' तक नामा।
सौ नाम आपके सार्थक हैं, इंद्रों से स्तुत गुणधामा।।
इन नाममंत्र को जप जप के, बस 'सिद्ध' नाम इक पा जाऊँ।
प्रभु तुम सम शुद्ध अवस्था हो, नहिं बार बार जग में आऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-दोहा-

जन्म मरण व्याधी महा, उसके नाशन हेतु।
आप भिषग्वर विश्व में, नमूँ नमूँ शिव हेतु।।1।।

-पंच चामर छंद-

जयो जिनेश! आप ही अनंत ज्ञान पुंज हो।
जयो जिनेश! आप ही अनंत दर्शकुंज हो।।

जयो जिनेश! आप ही अनंत वीर्यवान् हो।
जयो जिनेश! आप ही अनंत सौख्यधाम हो।।2।।
स्वयंवरा अनंत ऋद्धियाँ स्वयं तुम्हें वरें।
हितंकरा अनंत सिद्धियाँ स्वयं चरण पड़ें।।
शुभंकरा ध्वनी अनंत भव्य को सुखी करें।
प्रियंकरा सभी असंख्य भव्य को सुखी करें।।3।।
गणेश आपको नमें गुणानुवाद गाय के।
मुनीश आपको जपें अनूप रूप ध्याय के।।
सुरेश आपको जजें त्रिलोक पूज्य मान के।
नरेश आपको भजें त्रिकालविज्ञ जान के।।4।।
हितोपदेश आपका समूल मोह को हरे।
प्रभो! विहार आपका समस्त शोक को हरे।।
जिनेन्द्र! भक्ति आपकी अपूर्वशक्ति को भरे।
जिसेक शक्ति के प्रताप मृत्यु मल्ल भी डरे।।5।।
प्रभो! अपूर्व शक्ति से करूँ त्रिकाल वंदना।
प्रभो! अपूर्व शक्ति हेतु मैं करूँ उपासना।।
प्रभो! मुझे स्वभक्त जान के संभाल लीजिये।
प्रभो! स्वयं के तीन रत्न दे खुशाल कीजिये।।6।।

-दोहा-

निजानंद पीयूष रस, निर्झरणी निर्मग्न।
'ज्ञानमती' सुख शासता, दे मुझ करो प्रसन्न।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीमदादिशतनाममंत्रेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-6

अथ स्थापना –गीताछंद

जो पंच कल्याणकपती, शत इन्द्र गण से वंद्य हैं।
जिनदेव जिनेंद्र जिनेश जिनवर, नाम से अभिनंद्य हैं।।
वे दिव्य देशना दे करके सब भाषा के अधिपती बने।
उनका आह्वानन कर पूजें, हम स्वपर ज्ञान के धनी बने।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –अडिल्लछंद

पद्माकर को नीर कमल वासित सुरभि।
जिनपद धारा देय लहूँ आतम सुरभि।।
ऋषभेश्वर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध ले जिन पद चर्चूं भाव से।
रोग शोक भय ताप हरूँ शुभ भाव से।।
श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती तंदुल सौगंधित ले लिये।
पुँज धरा तुम आगे नित ध्याऊँ हिये।।

श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुरभित सुमनों को लायके।
कामजयी जिनपद को पूजूँ आयके।।
श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस फेनी बरफी मोदक ले लिया।
परमामृत से तृप्त जिनेश्वरं अर्चिया।।
श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीपक की ज्योति सर्वदिश तुम हरे।
जिनपद पूजत भेदज्ञान ज्योती भरे।।
श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागुरू वरधूप अग्नि में खेवते।
कर्मजलें सब अशुभ नाथपद सेवते।।
श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता द्राक्ष बदाम चिरौंजी लायके।
मोक्ष महाफल हेतु जजूँ गुण गायके।।
श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध आदिक ले अर्घ्य बनायके।
पूजूँ भक्ति समेत हर्ष उर लायके।।
श्रीतीर्थंकर नाम जजूँ मन लायके।
समकित निधि ले हर्षूं निज गुण पायके।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

जिनवर चरणसरोज को, जल धारा से नित्य।
पूजत ही शांती मिले, चउसंघ में भी इत्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-दोहा-

गुणीजनों में गुण रहें, बिन आश्रय न वसंत।
गुणयुत नामों को यजत, गुणी स्वयं पूजंत।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चाल-हे दीनबंधु.....

हे नाथ 'दिव्यभाषापति' आप कहाये।
अठरा महाभाषा व लघू सात सौ गाये।।
तुम नाम मंत्र पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी।।101।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'दिव्य' तुम हो, अतिशय सुरूप से।
नर सुर से अधिक सुंदर तन आपका दिपे।।तुम.।।102।।

ॐ ह्रीं दिव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पूतवाक्' आपकी वाणी पवित्र है।
सब दोष से विवर्जित अतिशय विशुद्ध है।।तुम.।।103।।

ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'पूतशासन' तुम मत पवित्र है।
वह पूर्व अपर के विरोध दोष रहित है।।तुम.।।104।।

ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूतात्मा' प्रभु आपकी आत्मा पवित्र है।
अरु आप भव्यजीव को करते पवित्र हैं।।तुम.।।105।।

ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'परमज्योति' आप ज्योतिपुंज हैं।
उत्कृष्ट ज्ञानज्योति रूप तेजपुंज हैं।।तुम.।।106।।

ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'धर्माध्यक्ष' चरित के अधीश हो।
दशधर्म के अध्यक्ष ज्ञान के अधीश हो।।तुम.।।107।।

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रियजयी दमी मुनी के ईश आप हैं।
हे नाथ 'दमीश्वर' प्रसिद्ध मुक्तिनाथ हैं।।तुम.।।108।।

ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार मोक्ष संपदा लक्ष्मी के पती हों
हे नाथ आप 'श्रीपति' मुक्ती के पती हो।।तुम.।।109।।

ॐ ह्रीं श्रीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भगवान्' आप ज्ञान व ऐश्वर्य पूर्ण हो।
सुरपूज्य आठ प्रातिहार्य विभव पूर्ण हो।।तुम.।।110।।

ॐ ह्रीं भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हंत' इंद्र आदि से पूजा को प्राप्त हो।
[1]अरि रज रहस्य चार कर्म रहित आप हो।।तुम.।।111।।

ॐ ह्रीं अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. अरि- मोहकर्म, रज-ज्ञानवरण, दर्शनावरण कर्म/ रहस्य-अंतराय कर्म।

हे नाथ 'अरज' आप कर्मधूलि हीन हो।
ज्ञानावरण व दर्शनावरण विहीन हो।।
तुम नाम मंत्र पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी।।112।।

ॐ ह्रीं अरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'विरज' आप कर्मरज विहीन हो।
भव्यों की कर्मधूलि नाश में प्रवीण हो।।तुम.।।113।।

ॐ ह्रीं विरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'शुचि' ब्रह्मचर्य से पवित्र हो।
निज शुद्ध आत्म तीर्थ स्नान से पवित्र हो।।तुम.।।114।।

ॐ ह्रीं शुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'तीर्थकृत्' भवोदधि से भव्य तारते।
श्रुत द्वादशांग तीर्थ के कर्ता बखानते।।तुम.।।115।।

ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण मोह आवरण व विघ्न[1] नाशिया।
कैवल्य पाय 'केवली' हो मुनि भाषिया।।तुम.।।116।।

ॐ ह्रीं केवलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ईशान' आप अनंत शक्ति से समर्थ हो।
अहमिंद्र आदि के भि ईश जग प्रसिद्ध हो।।तुम.।।117।।

ॐ ह्रीं ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूजार्ह' पांचविधा अर्चना के योग्य हो।
मह कल्पतरु ऐन्द्रध्वज आदि पूज्य हो।।तुम.।।118।।

ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म मल कलंक धोय शुद्ध आत्मा।
हे नाथ 'स्नातक' सुज्ञान चंद्रपूर्णिमा[2]।।तुम.।।119।।

ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अन्तराय कर्म। 2. पूर्णज्ञान सहित हैं।

हे नाथ 'अमल' देह मलादि विहीन हो।
नैर्मल्य आप राग आदि दोष क्षीण हो।।तुम.।।120।।

ॐ ह्रीं अमलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतदीप्ति' नाथ ज्ञानदीप्ति धारते।
निजदेह दीप्ति से समस्त ध्वांत वारते।।तुम.।।121।।

ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पांच विधे ज्ञान से 'ज्ञानात्मा' कहे।
कैवल्यज्ञानदेहमयी आत्मा कहे।।तुम.।।122।।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'स्वयंबुद्ध' स्वयं ही प्रबुद्ध हो।
गुरु की सहाय बिन समस्त ज्ञान युक्त हो।।तुम.।।123।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रजापति' त्रिलोक जीव रक्षते पती।
संपूर्ण प्रजा को सदा पालें प्रजापती।।तुम.।।124।।

ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'मुक्त' कर्म बंधनादि मुक्त हों
संपूर्ण दोष से विमुक्त भ्रमण मुक्त हो।।तुम.।।125।।

ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल–नंदीश्वर पूजा

प्रभु 'शक्त' नाम है आप, परिषह सहन किया।
तुम भक्ति करे निष्पाप, इससे शरण लिया।।
तुम नाम मंत्र की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे।।126।।

ॐ ह्रीं शक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निराबाध' उपसर्ग, बाधा विरहित हो।
निज भक्तों को सुख स्वर्ग, देते शिवप्रद हो।।

तुम नाम मंत्र की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे।।127।।

ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निष्कल' देह विमुक्त, काल कला हीना।
विज्ञान कलागुण युक्त, कवलाहार बिना।।तुम.।।128।।

ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेश्वर' त्रिभुवन ईश, भविजन के त्राता।
मैं जजूँ नमाकर शीश, पाऊँ सुख साता।।तुम.।।129।।

ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'निरंजन' आप, कर्मांजन शून्या।
सब द्रव्यभाव नोकर्म, विरहित सुख पूर्णा।।तुम.।।130।।

ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगज्योति' जिनराज, केवलज्ञान लहा।
सब लोक अलोक प्रकाश, अनुपम ज्योतिमहा।।तुम.।।131।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'निरुक्तोक्ती' य, सार्थक वचन धरो।
सब पूर्वापर अविरोध, हित उपदेश करो।।तुम.।।132।।

ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'निरामय' आप, व्याधिविवर्जित हो।
पूजत ही स्वास्थ्य सुलाभ, भविजन हर्षित हो।।तुम.।।133।।

ॐ ह्रीं निरामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचलस्थिति' हे जिननाथ, तुम थल अचल कहा।
हो अचल आत्म थल वास, पूजूँ हरस महा।।तुम.।।134।।

ॐ ह्रीं अचलस्थितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षोभ्य' नाथ नहिं क्षोभ, तुममें कभी हुआ।
सब मिटे चित्त का क्षोभ, ये ही विनय किया।।तुम.।।135।।

ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कूटस्थ' कूट-लोकाग्र, ऊपर तिष्ठे हो।
करिये मुझ मन एकाग्र, ईप्सित देते हो।।तुम.।।136।।

ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ आप 'स्थाणु', गमनागमन नहीं।
है लोकशिखर विश्राम, काल अनंत सही।।तुम.।।137।।

ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षय' क्षय नहिं होय, काल अनंते भी।
या इंद्रिय सुख नहिं कोय आप अतीन्द्रिय भी।।तुम.।।138।।

ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'अग्रणी' आप, जग में मुख्य सही।
ले जाते तुम लोकाग्र, भवि को सौख्य मही।।तुम.।।139।।

ॐ ह्रीं अग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'ग्रामणी' आप, जग में भव्यों को।
करवाते मुक्ती प्राप्त, निज सुख दो मुझको।।तुम.।।140।।

ॐ ह्रीं ग्रामण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भविजन को हितपथ माहिं, ले जाते 'नेता'।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ाय, शिवपथ के नेता।।तुम.।।141।।

ॐ ह्रीं नेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु द्वादशांगमय शास्त्र, रचना करते हो।
इसलिये 'प्रणेता' आप, हित उपदिशते हो।।तुम.।।142।।

ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु न्यायशास्त्र उपदेश, करते आप सदा।
तुम 'न्यायशास्त्रवित्' नाम कहते इंद्र मुद्रा।।तुम.।।143।।

ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित धर्मामृत उपदेश, देते गुरु 'शास्ता'।
हित अनुशास्ता परमेश, देवो मुझ साता।।तुम.।।144।।

ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धर्मपती' तुम नाम, धर्माधीश्वर हो।
दश धर्मों के तुम धाम, शिवप्रद ईश्वर हो।।
तुम नाम मंत्र की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे।।145।।

ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चउविध[1] धर्मसमेत, धर्म्य कहाते हो।
रत्नत्रय[2] जीवदयादि[3], वस्तुस्वभाव[4] कहो।।तुम.।।146।।

ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आत्मा धर्मस्वरूप, शिवफल प्राप्त किया।
'धर्मात्मा' नाम अनूप, सुरपति आन दिया।।तुम.।।147।।

ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धर्मतीर्थकृत' आप, धर्म सुतीर्थ किया।
सम्यक् चारितमय तीर्थ, का उपदेश दिया।।तुम.।।148।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वृषध्वज' आप प्रसिद्ध, धर्मध्वजा धारो।
तुम वृषभ चिन्ह से सिद्ध, पाप सु परिहारो।।तुम.।।149।।

ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृष-धर्म अहिंसारूप, उसके स्वामी हो।
हो 'वृषाधीश' निज रूप, अंतर्यामी हो।।तुम.।।150।।

ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चामर छंद–

नाथ 'वृषकेतु' आप धर्म की ध्वजा धरो।
जैन धर्म की ध्वजा त्रिलोक में भि फरहरो।।
आप नाममंत्र की सदा करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंचना।।151।।

ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. क्षमादि धर्म। 2. रत्नत्रय धर्म। 3. जीव दया धर्म। 4. वस्तु स्वभाव धर्म।

कर्म शत्रु नाश हेतु धर्मशास्त्र धारते।
नाथ! 'वृषायुध' अनंत जन्म को निवारते।।आप.।।152।।

ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'वृष' नाम धारि धर्मरूप विश्व में।
धर्ममय पियूष वृष्टि कारि मेघ भव्य में।।आप.।।153।।

ॐ ह्रीं वृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वृषपती' दयामयी सुधर्म के पती।
आप शर्ण पाय भव्य लेय पंचमी गती।।आप.।।154।।

ॐ ह्रीं वृषपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'भतृ' आप भव्य जीव पोषते सदा।
दुःख से निकाल श्रेष्ठ सौख्य में धरें सदा।।आप.।।155।।

ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वृषभांक', बैल चिन्ह आपका कहा।
श्रेष्ठ धर्म चिन्ह से समस्त को सुखी किया।।आप.।।156।।

ॐ ह्रीं वृषभांकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वृषोद्भव' सुआप धर्म को जनम दिया।
धर्म से हि तीर्थनाथ होय जन्म धारिया।।आप.।।157।।

ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'हिरण्यनाभि' स्वर्ण रूप नाभि धारते।
आप गर्भ पूर्व इन्द्र स्वर्णवृष्टि कारते।।आप.।।158।।

ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूत आतमा' जिनेश! सत्यरूप आतमा।
आप पाद शीश नाय होउं अंतरातमा।।आप.।।159।।

ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूभृत् प्रभो! समस्त भव्यजीव पोषते।
आप शर्ण आय साधु सर्व कर्म धोवते।।आप.।।160।।

ॐ ह्रीं भूभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूत भावनो' सुआप भावना सुउत्तमा।
हाथ जोड़ शीश नाय भव्य जांय मुक्ति मा।।
आप नाममंत्र की सदा करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंच ना।।161।।

ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रभव' आप मुक्ति प्राप्ति हेतु भव्य को।
आप जन्म है प्रशंस सौख्य हेतु विश्व को।।आप.।।162।।

ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विभव' भव विमुक्त भव्य भव विनाशते।
भव विशिष्ट पाय धर्म-चक्र को चलावते।।आप.।।163।।

ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'भास्वान्' आप ज्ञानदीप्ति रूप हो।
आत्म को प्रकाश्य भव्य को प्रकाश हेतु हो।।आप.।।164।।

ॐ ह्रीं भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'भव' उत्पत्ति व्यय व ध्रौव्य रूप हो।
भव्य चित्त मांहि होय पापपंक धोत हो।।आप.।।165।।

ॐ ह्रीं भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भाव' आप चित्स्वरूप स्वात्म में हि लीन हो।
साधुवृन्द के हृदय निलीन दुःख हीन हो।।आप.।।166।।

ॐ ह्रीं भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'भवांतको' चतुर्गती भवों कु नाशिया।
भव्य के अनंतभव क्षणेक में विनाशिया।।आप.।।167।।

ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो! 'हिरण्यगर्भ' गर्भ पूर्व स्वर्ण वर्षते।
आपके पिता कि जीत ना किसी से हो सके।।आप.।।168।।

ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्री गरभ' सुआप अंतरंग नंतसंपदा।
श्री सु आदि देवियों ने मात सेव की मुदा।।आप.।।169।।

ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो! 'प्रभूतविभव' आपका विभव महान है।
तीन लोक साम्राज्य पाय सुख निधान हैं।।आप.।।170।।

ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अभव' आप जन्म ना धरें कभी यहां।
आप पाद सेय भव्य जन्म नाशते यहाँ।।आप.।।171।।

ॐ ह्रीं अभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्वयंप्रभु' आप ही स्वयं समर्थ हैं।
सर्व कर्म नाश हेतु आप पूर्ण दक्ष हैं।।आप.।।172।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रभूतात्मा' सुआप आतमा यहाँ।
ज्ञान से समस्त लोक व्यापता सुखावहा[1]।।आप.।।173।।

ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूतनाथ' सर्वजीव के हि आप नाथ हो।
आप भक्ति से मुनीशवृंद भी सनाथ हों।।आप.।।174।।

ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जगत्प्रभु' त्रिलोक स्वामि हो समर्थ हो।
सर्व सौख्यदान हेतु आप पूर्ण दक्ष हो।।आप.।।175।।

ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद–

'सर्वादि' सर्व-जग आदी। तुमसे सृष्टी उत्पादी।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।176।।

ॐ ह्रीं सर्वादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सुख को देने वाला।

हे नाथ! 'सर्वदृक्' तुम हो। सब वस्तु देखते प्रभु हो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।177।।
ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सार्व' सभी को पालें। सबका हित करने वाले।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।178।।
ॐ ह्रीं सार्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वज्ञ' सर्व जग जानो। त्रैलोक्य त्रिकालिक जानो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।179।।
ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'सर्वदर्शन' हो। सब कुमतों के मर्दक हो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।180।।
ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वात्मा' तुम अंतर में। सब वस्तु झलकती क्षण में।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।181।।
ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वलोकेशा'। तिहुंलोक अलोक अधीशा।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।182।।
ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वविद्' मानें। इक क्षण में सबको जानें।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।183।।
ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सर्वलोकजित्' तुम हो। पणविध संसार विजित् हो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।184।।
ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगति' मोक्षगति सुंदर। कैवल्यज्ञान उत्तम धर।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।185।।
ॐ ह्रीं सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' अतिशायि प्रसिद्धा। सब भावश्रुतों के धर्ता।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।186।।
ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत्' सब अरज सुना है। भव्यों हित मार्ग भणा है।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।187।।
ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप वचन उत्तम हैं। अतएव 'सुवाक्' प्रथम हैं।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।188।।
ॐ ह्रीं सुवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सूरि' सभी के गुरु हो। सब विद्याओं के धुरि हो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।189।।
ॐ ह्रीं सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञानी। तुमसे प्रकटी जिनवाणी।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।190।।
ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्रुत' त्रिभुवन विख्याता। श्रुत बिना चराचर ज्ञाता।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।191।।
ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वतःपाद' तम घाती। तुम ज्ञान किरण जग व्यापी।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।192।।
ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' सिरताजो। तुम लोक शिखर पर राजो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।193।।
ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुचिश्रवा' तुम कर्णा। भवि वचन सुनें दें शर्णा।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।194।।
ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'सहस्रशीर्षा' हो। आनन्त्य सुखी कीर्ता हो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।195।।

ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेत्रज्ञ' क्षेत्र-आत्मा को। जाना सब पर आत्मा को।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।196।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्राक्ष' जग मानें। आनन्त्य पदार्थ सुजानें।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।197।।

ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्रपात्' जगव्यापा। तुम बल अनंत जगख्याता।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।198।।

ॐ ह्रीं सहस्रपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूत भव्यभवद्भर्ता' हो। त्रैकालिक सुख कर्ता हो।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।199।।

ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविद्यामहेश्वर' तुम ही। सब विद्या के ईश्वर ही।
तुम नाममंत्र मैं पूजूँ, सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।200।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

दिवभाषापति से लेकर, सुविश्वविद्यामाहेश्वर तक।
सौ नाम मंत्र तुम जपने से, शतखंड खंड हो जावें अघ।।
मैं अतिशय भक्ती श्रद्धा से, तुम नाम मंत्र को नित पूजूँ।
नित आतम अमृतरस पीकर, सब जन्म मरण दुख से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–1. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः।** (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-दोहा-

पूरब भव में आपने, सोलहकारण भाय।
तीर्थंकर पद पाय के, तीर्थ चलाया आय।।1।।

-रोला छंद-

दर्शविशुद्धि प्रधान, नित्य प्रती प्रभु पाके।
अष्ट अंग से शुद्ध, दोष पचीस हटाके।।
मन वच काय समेत, विनय भावना भायी।
मुक्ति महल का द्वार, खोल दिया सुखदायी।।2।।
व्रत शीलों में आप, नहिं अतिचार लगाया।
संतत ज्ञानाभ्यास, करके निजसुख पाया।।
भव तन भोग विरक्त, मन संवेग बढ़ाया।
शक्ती के अनुसार, चउविध दान रचाया।।3।।
बारह विध तप धार, आतम शक्ति बढ़ाई।
धर्म शुक्ल से सिद्ध, साधु समाधि कराई।।
दशविध मुनि की नित्य, वैयावृत्य किया था।
सर्व शक्ति से पूर्ण, बहु उपकार किया था।।4।।
श्री अर्हंत जिनेश, भक्ति हृदय में धरके।
सूरि परम परमेश, गुणस्तवन उचरते।।
उपाध्याय गुरूदेव, शिवपथ के उपदेष्टा।
प्रवचन भक्ति समेत, गुणगण भजा हमेशा।।5।।
षट् आवश्यक नित्य, करके दोष नशाया।
हानि रहित परिपूर्ण, निज कर्त्तव्य निभाया।।
मार्ग प्रभावन पाय, धर्म महत्त्व बढ़ाया।
प्रवचन में वात्सल्य, कर निज गुण प्रगटाया।।6।।
सोलह कारण साध, पंच कल्याणक पाया।
दिव्यध्वनी से नित्य, धर्म सुतीर्थ चलाया।।

भव्य अनंतानंत, भव से पार किया है।
मुक्तिरमा को पाय, शिवपुर धाम लिया है।।7।।
मैं पूजूँ नित आप, प्रणमूं भक्ति बढ़ाऊँ।
जिस विध हो उस रीति, जिनगुण संपति पाऊँ।।
चिच्चैतन्य स्वरूप, चिन्मय ज्योति जलाऊँ।
पूर्ण 'ज्ञानमति' रूप, परम ज्योति प्रगटाऊँ।।8।।

-दोहा-

तुम प्रसाद से नाथ! अब, पूरी हो मम आश।
इसलिये तुम पद कमल, नमूँ नमूँ धर आश।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिव्यभाषापत्यादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-7

स्थापना –नरेन्द्र छंद

एक सौ सत्तर कर्मभूमि में, तीर्थंकर होते हैं।
धर्मचक्र का सफल प्रवर्तन, कर जगमल धोते हैं।।
गणधर मुनिगण सुरपति नरपति, उनकी भक्ति करे हैं।
हम यहाँ प्रभु ऋषभदेव की भी पूजन भक्ति करे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –मोतीदाम छंद

लिया है झारी में शुचिनीर, त्रिधारा दे पाऊँ भवतीर।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिया है चंदन घिस घनसार, चढ़ाऊँ चरणों में हिमसार।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले हैं तंदुल शशिसम श्वेत, मिले आतम निधि पुँज धरेत।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

खिले हैं पुष्प सुगंधित सार, करूँ पुष्पांजलि काम निवार।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुधारस सम उत्तम पकवान, चढ़ाकर लूँ समतारस पान।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा जगमग दीपक की होत, जजूँ दीपक से निज उद्योत।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधी धूप अग्नि में ज्वाल, जलाऊँ कर्म अरी तत्काल।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुसम्बी आम सरस फल लाय, चढ़ाकर लूँ समकित सुखदाय।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

लिया है अर्घ्य चढ़ाकर थाल, चढ़ाऊँ भक्ती से नत भाल।
जिनेश्वर नामावलि को आज, जजूँ मैं पाऊँ शिव साम्राज।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सतगुरू के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य दुःख अंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-सोरठा-

महापुण्य फल राशि, तीर्थंकर प्रकृति यहाँ।
मिले सर्वसुख राशि, पुष्पांजलि से पूजते।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–नरेन्द्र छंद–

समीचीन गुणसहित आप अतिशय स्थूल कहे हो।
'स्थविष्ठ' नाम के धारी त्रिभुवन पूज्य भये हो।।
प्रभु तुम नाम मंत्र को पूजत, आतम निधि को पाऊँ।
परमाल्हाद परमसुख अमृत, पीकर शिवपद पाऊँ।।201।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृद्ध आप ज्ञानादिगुणों से अतः 'स्थविर' कहाये।
मुक्तीपद में तिष्ठ रहे हो, मुनिगण शीश नमायें।।प्रभु.।।202।।

ॐ ह्रीं स्थविराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'ज्येष्ठ' तीनों लोकों में, सबसे बड़े तुम्हीं हो।
इंद्रादिक से प्रशंसनीय गुणमणि जड़े तुम्हीं हो।।प्रभु.।।203।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके अग्रगामि होने से 'प्रष्ठ' आप कहलाये।
तुम गुणमाला जपते भविजन दुख दारिद्र नशायें।।प्रभु.।।204।।

ॐ ह्रीं प्रष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र फणीन्द्र नरेन्द्र चंद्र रवि, सबको अतिशय प्रिय हो।
सब मुनीन्द्र से वंद्य 'प्रेष्ठ' प्रभु त्रिभुवन जनमन प्रिय हो।।प्रभु.।।205।।

ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुविस्तृत धीधर प्रभु 'वरिष्ठधी' मानें।
स्वपर भेद विज्ञान बुद्धि दो, जिससे भव दुख हानें।।प्रभु.।।206।।

ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अत्यंत स्थिर-नित्य आप हैं, अतएव 'स्थेष्ठ' बखानें।
शत इंद्रों के मध्य विराजें, कर्म कुलाचल हानें।।प्रभु.।।207।।

ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्वादशगण में अतिशयगुरु, आप 'गरिष्ठ' कहे हो।
भक्तों को शिवमार्ग दिखाकर कर्म कलंक दहे हो।।प्रभु.।।208।।

ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत से प्रभू आप ही रूप अनेक धरे हो।
अतः नाथ! 'बंहिष्ठ' नाम से अतिशय रूप धरे हो।।
प्रभु तुम नाम मंत्र को पूजत, आतम निधि को पाऊँ।
परमाल्हाद परमसुख अमृत, पीकर शिवपद पाऊँ।।209।।

ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबमें अतिशय प्रशस्य हो प्रभु 'श्रेष्ठ' नाम जग जाने।
सर्व दोष निरवारण करिये गुण से भरूँ खजानें।।प्रभु.।।210।।

ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सूक्ष्म मात्र योगी के ध्यान गम्य ही तुम हो।
अतः 'अणिष्ठ' नाम से पूजें, सर्व सुखाकर तुम हो।।प्रभु.।।211।।

ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी आप सर्व जगपूज्या गौरवमयी बखानी।
प्रभु 'गरिष्ठगी' इसीलिये हो तुम वाणी कल्याणी।।प्रभु.।।212।।

ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती संसार नष्ट कर आप 'विश्वमुट्' मानें।
सर्वविश्व के पालन कर्ता सुरनर मुनिगण जानें।।प्रभु.।।213।।

ॐ ह्रीं विश्वमुषे[1] नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वविश्व की करो व्यवस्था नाथ 'विश्वसृज्' तुम हो।
धर्मसृष्टि से आदि विधाता मुक्तिप्रदाता तुम हो।।प्रभु.।।214।।

ॐ ह्रीं विश्वसृजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनलोक के ईश तुम्हीं 'विश्वेट्' मुनी कहते हैं।
सुरपति नरपति फणपति तुमको निजस्वामी गिनते हैं।।प्रभु.।।215।।

ॐ ह्रीं विश्वेशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग की रक्षा करते हो अतः 'विश्वभुज्' तुम ही।
सर्व जीवगण सुतवत् पालन पोषण करते तुम ही।।प्रभु.।।216।।

ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. विश्वभृज् भी पाठ है

अखिल लोक के स्वामी तुम ही धर्मनीति सिखलाते।
अतः 'विश्वनायक' बन सबको मोक्षमार्ग दिखलाते।।प्रभु.।।217।।

ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग का विश्वास आप में अतः आप 'विश्वासी'।
तुम आशीष पा सभी प्राणिगण बने मुक्ति के वासी।।प्रभु.।।218।।

ॐ ह्रीं विश्वासिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानरूप तुम आत्मा अतः 'विश्वरूपात्मा'।
लोकपूर्ण के समय प्रदेशों से त्रिलोकमय आत्मा।।प्रभु.।।219।।

ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व-पांचविध भव को जीता, अतः 'विश्वजित्' तुम हो।
कर्म मल्ल यममल्ल विजेता विश्वविजेता तुम हो।।प्रभु.।।220।।

ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजितांतक' अतंक-यम जीता मृत्युंजयी तुम्हीं हो।
निज भक्तों को मृत्युमल्ल से सदा छुड़ाते तुम हो।।प्रभु.।।221।।

ॐ ह्रीं विजितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभव' आपका भवविशेष है शतइंद्रों से पूजित।
भव-संसार नष्टकर्ता तुम सर्व गुणों से भूषित।।प्रभु.।।222।।

ॐ ह्रीं विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभय' सर्व कांती को जीता, सात भयों से छूटे।
तुम आश्रय लेकर भविप्राणी सर्व भयों से छूटें।।प्रभु.।।223।।

ॐ ह्रीं विभयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीर' मोक्षलक्ष्मी के दाता कर्मशत्रु के विजयी।
तुम पदपंकज भक्ति करें जो बने कर्मरिपु विजयी।।प्रभु.।।224।।

ॐ ह्रीं वीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विगत शोक प्रभु तुम 'विशोक' हो, भविजन शोक हरंता।
शं-सुखरूप आप की आत्मा सौख्य अनंत धरंता।।प्रभु.।।225।।

ॐ ह्रीं विशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद–

प्रभु 'विजर' वृद्ध नहिं कभी आप, तुमही 'पुराणपूरुष' विख्यात।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।226।।
ॐ ह्रीं विजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजरन्[1]' नहिं जीरण होंय आप, परमानंद क्रीड़ा करें आप।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।227।।
ॐ ह्रीं अजरते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रागरहित हो तुम 'विराग', सब रागद्वेष को दिया त्याग।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।228।।
ॐ ह्रीं विरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत पापरहित हैं 'विरत' आप, भवसुखविरहित हो हरो पाप।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।229।।
ॐ ह्रीं विरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'असंग' परिग्रह विहीन, मेरे दुख संकट करो क्षीण।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।230।।
ॐ ह्रीं असंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विषयों से ही पृथग्भूत, अतएव 'विविक्त' तुम्हीं अनूप।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।231।।
ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विरहित मत्सर रागद्वेष, अतएव 'वीतमत्सर' जिनेश।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।232।।
ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विनेयजनताबंधु' आप, सब शिष्यों को करते सनाथ।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।233।।
ॐ ह्रीं विनेयजनताबंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. टीका की प्रति में अजरन् शब्द है। आदिपुराण में जरन् शब्द है।

'विलीनाशेषकल्मष' जिनेश, कुछ पाप पंक नहिं रहे शेष।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।234।।
ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मुक्तिरमा के साथ योग, अतएव तुम्हें कहते 'वियोग'।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।235।।
ॐ ह्रीं वियोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब योग-ध्यान जानो जिनेश, अतएव 'योगवित्' हो महेश।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।236।।
ॐ ह्रीं योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब त्रिभुवन को जाना महान्, 'विद्वान्' तुम्हीं हो ज्ञानवान्।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।237।।
ॐ ह्रीं विदुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु धर्मसृष्टि को करो आप, अतएव 'विधाता' हरो पाप।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।238।।
ॐ ह्रीं विधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम उत्तम चारित्रवान्, अतएव 'सुविधि' विज्ञानवान्।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।239।।
ॐ ह्रीं सुविधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम बुद्धी केवलज्ञानरूप, अतएव 'सुधी' तुम हो अनूप।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।240।।
ॐ ह्रीं सुधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पूर्ण क्षमानिधि के निधान, हो 'क्षान्तिभाक्' जग में महान।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।241।।
ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पृथिवीमूर्ति' तुम्हीं जिनेश, सर्वंसह मेरे हरो क्लेश।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।242।।
ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शांतिभाक्' तुम शांतरूप, मुझको भी शांती दो अनूप।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।243।।
ॐ ह्रीं शांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सलिलात्मक' प्रभु जल के समान, शीतलता करते हो महान।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।244।।
ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वायुमूर्ति' जगप्राणरूप, त्रिभुवन में व्यापी ज्ञानरूप।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।245।।
ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'असंगात्मा' महान, परिग्रहविहीन भविसुख निधान।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।246।।
ॐ ह्रीं असंगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वह्निमूर्ति' अग्नी समान, कर्मेधन भस्म किया महान।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।247।।
ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'अधर्मधक्' पाप क्षीण, सब भस्म अधर्म किया प्रवीण।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।248।।
ॐ ह्रीं अधर्मदहे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों का कर दिया होम, अतएव 'सुयज्वा[1]' शांत सौम्य।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।249।।
ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यजमानात्मा' निज का स्वभाव, आराधन करते तज विभाव।
तुम नाममंत्र मैं जपूँ आज, मुझको दे दीजे मुक्तिराज।।250।।
ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–भुजंगप्रयात छंद–

प्रभु आप 'सुत्वा' निजानंद भरके।
निजात्मोदधी में सदा स्नान करते।।

1. टीका में 'यज्य' शब्द है।

प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ।
जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।251।।
ॐ ह्रीं सुत्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'सुत्रामपूजित' कहाये, सभी इंद्र पूजें तुम्हें शीश नायें।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।252।।
ॐ ह्रीं सुत्रामपूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'ऋत्विक्' किया यज्ञ भारी, जला ज्ञान अग्नी करम सर्व जारी।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।253।।
ॐ ह्रीं ऋत्विजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'यज्ञपति' यज्ञ के ईश माने, करम का किया होम जग सर्व जाने।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।254।।
ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'याज्य' हो सर्व पूजा करे हैं, सभी इंद्र मिल आप अर्चा करे हैं।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।255।।
ॐ ह्रीं याज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'यज्ञांग' माने जगत् में, नहीं आप बिन पूज्य हो कोई जग में।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।256।।
ॐ ह्रीं यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो मृत्युजित् आप 'अमृत' कहाये, तृषा रोगहर सौख्य अमृत पिलायें।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।257।।
ॐ ह्रीं अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनिज्ञान में होम दीया अशुभ को, 'हवी' आप हो सौख्य दीया सभी को।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।258।।
ॐ ह्रीं हविषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'व्योममूर्ती' करमलेप हीना, सभी लोक को ज्ञान से व्याप्त कीना।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।259।।
ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमूर्तातमा' वर्ण रस गंध हीना, सदा भक्त को सौख्य देते प्रवीणा।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।260।।
ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'निर्लेप' सब लेप हीना, करम लेप नाशा निजानंद लीना।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।261।।
ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा आप 'निर्मल' सभी मल विहीना, करम पंक धोकर महासौख्य लीना।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।262।।
ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा एक से आप रहते 'अचल' हो, अचलथान निर्वाण पाया अचल हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।263।।
ॐ ह्रीं अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सोममूर्ती' शशीवत् धवल हो, सदा शांत सुंदर प्रकाशी अमल हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।264।।
ॐ ह्रीं सोममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुसौम्यातमा' सौम्य छवि आपकी है, सभी के नयन चित्त को मोहती है।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।265।।
ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सूर्यमूर्ती' महाध्वांत नाशा, महातेज से सर्व जग को प्रकाशा।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।266।।
ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभ' तुम्हीं केवलज्ञान धारी, महातेज से भव्य अंधेर टारी।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।267।।
ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मंत्र को जानते 'मंत्रविद्' हो, महामोक्ष का मंत्र भी दे रहे हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।268।।
ॐ ह्रीं मंत्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र करते प्रभो! 'मंत्रकृत' हो, तथा चार अनुयोग शास्त्रादि कृत हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।269।।
ॐ ह्रीं मंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मंत्र से युक्त 'मंत्री' तुम्हीं हो, महाध्यान मंत्रादि देते तुम्हीं हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।270।।
ॐ ह्रीं मंत्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! मंत्र सप्ताक्षरी मूर्तिमय हो, अतः 'मंत्रमूर्ति' मुनी के विषय हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।271।।
ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतें पदारथ सभी जानते हो, महामोक्षगत हो 'अनंतग' तुम्हीं हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।272।।
ॐ ह्रीं अनंतगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वतंत्रः' स्व-आत्मा वही तंत्र-तनु है, सभी कर्म बंधन रहित स्वात्मवश हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।273।।
ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाद्वादशांगीमयी शास्त्रकृत् हो, अतः 'तंत्रकृत्' जैनसिद्धांतकृत् हो।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।274।।
ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'स्वन्त' अन्तःकरण शोभना है, तुम्हारा हि सामीप्य सुखप्रद घना है।
प्रभु नाम को मैं नमूँ नित्य पूजूँ, जगत् के सभी दुःख से शीघ्र छूटूँ।।275।।
ॐ ह्रीं स्वन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–अडिल्ल छंद–

'कृतान्तान्त' प्रभु मृत्युराज को नाशिया।
अष्टकर्म को चूर मोक्षपद पा लिया।।
नाम मंत्र मैं जपूं सर्व दुख दूर हों।
निज में परमानंदामृत सुख पूर हो।।276।

ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कृतान्तकृत्' आगम कर्ता आप हो।
दिव्यध्वनि से भावग्रंथकृत् आप हो।।नाम.।।277।।

ॐ ह्रीं कृतान्तकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृती' पुण्यफलरूप कुशल विख्यात हो।
केवलज्ञान सौख्यमय हो विद्वान हो।।नाम.।।278।।

ॐ ह्रीं कृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कृतार्थ' निज के पुरुषार्थ सफल किये।
भक्ती से भविजन कृतार्थ भी हो गये।।नाम.।।279।।

ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सत्कृत्य' इन्द्र सत्कार किया करें।
आप भली विध सर्वप्रजा पोषण करें।।नाम.।।280।।

ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कृतकृत्य' आत्मकार्य सब कर चुके।
तुम पदभक्त स्वयं कृतकृत्य बनें सबे।।नाम.।।281।।

ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कृतक्रतू' इन्द्रशत मिल पूजा करें।
तुम पूजा नहिं निष्फल निश्चित ही फले।।नाम.।।282।।

ॐ ह्रीं कृतक्रतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'नित्य' हैं काल अनंतों भी रहें
आपभक्त भी नित्य मोक्षपदवी लहें।।नाम.।।283।।

ॐ ह्रीं नित्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु जीत 'मृत्युंजय' प्रभु तुम हो गये।
तुमपद भक्त स्वयं मृत्युंजय पद लहें।।नाम.।।284।।

ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमृत्यु' मरण रहित हैं लोक में।
तुम पद आश्रय पाय भव्य मृत्यू हने।।नाम.।।285।।

ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतात्मा' अमृतवत् सुखदायि हो।
भव्य भजें निज आतम अमृतपायि हों।।
नाम मंत्र मैं जपूं सर्व दुख दूर हों।
निज में परमानंदामृत सुख पूर हो।।286।

ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अमृतोद्भव' कहलाते आप हैं।
अमृत-शिवपद में उत्पन्न सनाथ हैं।।नाम.।।287।।

ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मनिष्ठ' प्रभु शुद्ध आत्म में लीन हैं।
केवलज्ञान व मोक्ष निष्ठ भवहीन हैं।।नाम.।।288।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परंब्रह्म' उत्कृष्ट ब्रह्ममय आप हैं।
पंचम ज्ञानस्वरूप विश्व के तात[1] हैं।।नाम.।।289।।

ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मात्मा' तुम ज्ञानस्वरूपी आतमा।
केवलज्ञानगुणादि वृद्धिमय आतमा।।नाम.।।290।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ब्रह्मसंभव' आत्मा से उद्भवे।
भक्त आपसे ज्ञानरूप हों उद्भवें।।नाम.।।291।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मपति' पंचमज्ञानपती तुम्हीं।
गणधर इंद्रादिक के स्वामी हो तुम्हीं।।नाम.।।292।।

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो! 'ब्रह्मेट्' ब्रह्म के ईश हो।
ज्ञान चरित अरु मुक्ती के परमेश हो।।नाम.।।293।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. पिता।

'महाब्रह्मपदेश्वर' मुक्ती ईश्वरा।
गणधर मुनिगण सुरगण तुम वंदनपरा।।नाम.।।294।।

ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रसन्न' प्रभु प्रहसितमुख शांतीछवी।
भविजन स्वर्ग मोक्ष, सुखदायक हो तुम्हीं।।नाम.।।295।।

ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रसन्नात्मा' अति निर्मल आतमा।
भवि कषाय मल धोय बने शुद्धातमा।।नाम.।।296।।

ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानधर्मदमप्रभू' आप विख्यात हैं।
केवलज्ञान क्षमादिधर्म तप नाथ हैं।।नाम.।।297।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशमात्मा' क्रोधादि कषाय न आप में।
परम शांतप्रभु भक्त शांतिमय परिणमें।।नाम.।।298।।

ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रशान्तात्मा' प्रभु अतिशय शांत हो।
आप भक्त परिपूर्ण शांति को प्राप्त हों।।नाम.।।299।।

ॐ ह्रीं प्रशान्तात्माने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पुराणपुरुषोत्तम' सबमें श्रेष्ठ हो।
सर्व शलाका पुरुषों में भी ज्येष्ठ हो।।नाम.।।300।।

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

प्रभु स्थविष्ठ से पुराण पुरुषोत्तम तक नाम जपें जो भी।
वे शतक नाम धारें जग में, फिर जीवन्मुक्त बनें वे भी।।

मैं नाम गोत्र विघ्नादि रहित, निज शुद्ध आत्मपद पा जाऊँ।
इसलिए आप पदपद्म भक्ति, करता हूँ फिर फिर शिर नाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामभ्यः नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-दोहा-

लोकोत्तर फलप्रद तुम्हीं, कल्पवृक्ष जिनदेव।
नमूँ नमूँ तुमको सदा, करूँ भक्तिभर सेव।।1।।

-गीता छंद-

जय जय जिनेश्वर धर्म तीथेश्वर जगत् विख्यात हो।
जय जय अखिल संपत्ति के भर्ता भविकजन नाथ हो।।
लोकांत में जा राजते त्रैलोक्य के चूड़ामणि।
जय जय सकल जग में तुम्हीं हो ख्यात प्रभु चिंतामणी।।2।।

एकेन्द्रियादिक योनियों में नाथ! मैं रुलता रहा।
चारों गती में ही अनादी से प्रभो! भ्रमता रहा।।
मैं द्रव्य क्षेत्र रु काल भव अरु भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अनंतानंत काल बिता दिये।।3।।

बहुजन्म संचित पुण्य से दुर्लभ मनुष योनि मिली।
हा! बालपन में जड़ सदृश सज्ज्ञान कलिका ना खिली।।
बहुपुण्य के संयोग से प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरात्मा औ अंतरात्मा का स्वयं ही परिचय मिला।।4।।

तुम सकल परमात्मा बने जब घातिया आहत हुये।
उत्तम अतीन्द्रिय सौख्य पा प्रत्यक्ष ज्ञानी तब हुये।।

फिर शेष कर्म विनाश करके निकल परमात्मा बने।
कल-देह वर्जित निकल अकल स्वरूप शुद्धात्मा बने।।5।।

हे नाथ! बहिरात्मा दशा को छोड़ अंतर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें हो जाऊँ मैं परमातमा।।
संसार का संसरण तज त्रिभुवन शिखर पर आ बसूँ।
निज के अनंतानंत गुणमणि पाय निज में ही बसूँ।।6।।

-दोहा-

तुम प्रसाद से भक्तगण, हो जाते भगवान।
'ज्ञानमती' निज संपदा, पाकर के धनवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य स्थविष्ठादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-8

स्थापना –नरेन्द्र छंद

मोक्षमार्ग के नेता त्रिभुवन वेत्ता वर तीर्थंकर।
चिच्चैतन्य सुधारस प्यासे, भविजन को क्षेमंकर।।
उनका इत आह्वानन करके, पूजूँ मन वच तन से।
आतम अनुभव अमृत हेतू वंदूँ अंजलि करके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्यमहाशोकध्वजादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्यमहाशोकध्वजादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्यमहाशोकध्वजादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –गीता छंद

अगणित कुओं का नीर पीया, प्यास फिर भी ना बुझी।
इस हेतु जल से पूजहूँ, अब मेट दो बाधा सभी।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसिंधु में भी चाह दावानल हमें झुलसा रहा।
इस हेतु चंदन से जजूँ, अब दुःख नहिं जाता सहा।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मसुख जो सहज मेरा, खंड खंड हुआ सभी।
उसके अखंडित हेतु अक्षत, पुंज से पूजूँ अभी।।

तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मदन ने बस जगत में जन, सर्व को वश में किया।
इसके निमूलन हेतु सुरभित, सुमन तुम अर्पण किया।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में क्षुधा व्याधी सदा, औषधि न कुछ उसके लिये।
इस हेतु से उत्तम सरस व्यंजन, आप ढिग अर्पण किये।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तम अति घोर छाया, आप पर दीखे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूँ, निजज्ञान रवि प्रगटे सही।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कर्म ने मुझ संपदा को, लूट ली मुझ पास से।
इस हेतु इनको नाश करने, धूप खेऊँ चाव से।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वांछित मिले इस हेतु जग में, देव सब पूजे सदा।
पर सफल अब तक ना हुआ, इस हेतु फल तुम अर्पिता।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि में वर रत्न धरके, अर्घ्य सुंदर ले लिया।
अनमोल निज संपत्ति हेतू अर्घ्य तुम अर्पण किया।।
तीर्थंकरों के नाम जग में, सर्व सुख दातार हैं।
जो नाम मंत्रों को जपें, वे भव्य भवदधि पार हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

गंगा नदि को नीर ले, श्री जिनवर पद कंज।
त्रयधारा देते मिले, मुझे शांति सुखकंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-दोहा-

तीर्थंकर की अर्चना, भरे स्वात्म विज्ञान।
रोक शोक दुख वंचना, करके करे महान।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौपाई (15 मात्रा)–

'महाशोकध्वज' आप जिनेश। वृक्ष अशोक चिन्ह परमेश।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।301।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अशोक' शोक से हीन। आप भक्त हों शोक विहीन।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।302।।

ॐ ह्रीं अशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'क' नाम आत्म आधार। सब भक्तों को सुखदातार।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।303।।

ॐ ह्रीं काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष की सृष्टि करंत। 'स्रष्टा' नाम सुरेन्द्र यजंत।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।304।।
ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पद्मविष्टर' तुम नाम। आसन स्वर्णकमल तुम स्वामि।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।305।।
ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पद्मेश' आप विख्यात। लक्ष्मी के स्वामी हो नाथ।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।306।।
ॐ ह्रीं पद्मेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पद्मसंभूति' जिनेश। चरण कमल तल कमल हमेश।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।307।।
ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मनाभि' पंकजसम नाभि। वंदत मिटती सर्व उपाधि।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।308।।
ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनुत्तर' तुम सम अन्य। श्रेष्ठ नहीं प्रभु तुम ही धन्य।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।309।।
ॐ ह्रीं अनुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मयोनि' मात का गर्भ। पद्माकृति से तुम उत्पत्ति।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।310।।
ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्योनि' धर्ममय जगत्। उसकी उत्पति कारण जिनप।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।311।।
ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इत्य' आप की प्राप्ती हेतु। भविजन तप तपते बहुभेद।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।312।।
ॐ ह्रीं इत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्तुत्य' इन्द्र मुनि आदि। सबकी स्तुति योग्य अबाधि।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।313।।
ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'स्तुतीश्वर' कहे। स्तुति के ईश्वर ही रहें।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।314।।
ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तवनार्ह' स्तुति के योग्य। आप समान न अन्य मनोज्ञ।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।315।।
ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हृषीकेश' इंद्रिय के ईश। विजितेन्द्रिय हो सर्व अधीश।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।316।।
ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जितजेय' अनूप। जीता मोह आदि अरि भूप।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।317।।
ॐ ह्रीं जितजेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करने योग्य क्रियाये सर्व। पूर्ण किया 'कृतक्रिय' नामार्ह।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।318।।
ॐ ह्रीं कृतक्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह गण के स्वामी आप। अतः 'गणाधिप' हो निष्पाप।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।319।।
ॐ ह्रीं गणाधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजनों में तुम्ही श्रेष्ठ। अतः जगत में हो 'गणज्येष्ठ'।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।320।।
ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणना योग्य आप ही 'गण्य'। चौरासी लख गुण युत धन्य।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।321।।
ॐ ह्रीं गण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण पवित्र आप ही 'पुण्य'। सबको पावन करें सुपुण्य।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।322।।
ॐ ह्रीं पुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गण शिवपथ में ले जाव। 'गणाग्रणी' प्रभु आप कहाव।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।323।।
ॐ ह्रीं गणाग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानाद्यनंत गुण की खान। नाथ 'गुणाकर' आप महान।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।324।।
ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख चुरासी गुण की वार्धि। 'गुणाम्भोधि' हरते भव व्याधि।।
आप नाम सब सुख की खान। पूजत मिलता आत्म निधान।।325।।
ॐ ह्रीं गुणाम्भोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–राग भरतरी–

नाम मंत्र मैं नित जपूँ, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि।।
नाम मंत्र मैं नित जपूँ.....

नाथ! 'गुणज्ञ' कहावते, गुणमणि ज्ञाता आप।
सर्वदोष मुझ हान के, करो शीघ्र निष्पाप।।
नाम मंत्र मैं नित जपूँ, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि।।326।।
ॐ ह्रीं गुणज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' चौरासी लख, गुणमणि के हो नाथ।
रोग शोक दुखनाश कर, गुण से करो सनाथ।।नाम.।।327।।
ॐ ह्रीं गुणनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्व आदि गुण आदरा, 'गुणादरी' तुम नाम।
क्रोध मोह सब नाशिये, झुक झुक करूँ प्रणाम।।नाम.।।328।।
ॐ ह्रीं गुणादरिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतम आदि विभावगुण, नाश किया प्रभु आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' भये, करो मुझे निष्पाप।।नाम.।।329।।
ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक गुण हीन हो, 'निर्गुण' कहें मुनीश।
या निश्चित ज्ञानादि गुण, धरते निर्गुण ईश।।नाम.।।330।।
ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यगी' पुण्यमय, पावनवाणी आप।
मुझ वाणी पावन करो, हरो सकल भव ताप।।नाम.।।331।।
ॐ ह्रीं पुण्यगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणयुत और प्रधान हो, अतः नाम 'गुण' आप।
भव्य आपको ही गुने, हरो सकल यम ताप।।नाम.।।332।।
ॐ ह्रीं गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शरण्य' हो जगत में, शरणागत प्रतिपाल।
सब दुख मथन करो सदा, नमूँ नमूँ नत भाल।।नाम.।।333।।
ॐ ह्रीं शरण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्' प्रभु तुम वचन, भरें पुण्य भण्डार।
आतम निधि को देय के, करें मृत्यु संहार।।नाम.।।334।।
ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूत' आप पावन परम, भक्तन करो पवित्र।
अंतर आत्म उपाय से, लहूँ परमपद शीघ्र।।नाम.।।335।।
ॐ ह्रीं पूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वरेण्य' मुक्तीरमा, वरण किया स्वयमेव।
सबमें श्रेष्ठ तुम्हीं कहे, करो सकल दुख छेव।।नाम.।।336।।
ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
पुण्यसंपदा देउ मुझ, नमूँ नमूँ नत शीश।।नाम.।।337।।
ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अगण्य' गणना नहीं, माप रहित गुण आप।
मेरे अनवधि गुण मुझे, देय हरो संताप।।नाम.।।338।।

ॐ ह्रीं अगण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यधी' पावना, बुद्धी आपकी शुद्ध।
मुझ मन पावन कीजिये, होय आतमा शुद्ध।।नाम.।।339।।

ॐ ह्रीं पुण्यधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' सर्वगण हित किया, गुण अनंत युत आप।
सर्वगुणों से पूर्ण कर, हरो दोष दुख पाप।।नाम.।।340।।

ॐ ह्रीं गुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'पुण्यकृत्' आप ही, किया पुण्य हरपाप।
सब जन मन पावन किया, हो पवित्र निष्पाप।।नाम.।।341।।

ॐ ह्रीं पुण्यकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यशासन' यहाँ, तुम शासन-मत शुद्ध।
आतम अनुशासन करूँ, देवो ऐसी बुद्धि।।नाम.।।342।।

ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माराम' तुम्हीं प्रभो! धर्मोद्यान विशाल।
छाया फल दे स्वर्ग शिव, हरिये ताप दयालु।।नाम.।।343।।

ॐ ह्रीं धर्मारामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो! 'गुणग्राम' हैं, मूलोत्तर गुण युक्त।
इंद्रियगाँव उजाड़के, आप हुये जग मुक्त।।नाम.।।344।।

ॐ ह्रीं गुणग्रामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यापुण्यनिरोधका', शुद्ध आत्म में लीन।
पुण्य पाप को रोक के, भये मुक्ति अधीन।।नाम.।।345।।

ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पापापेत' तुम्हीं प्रभो! पाप रहित निष्पाप।
मेरे सब संकट हरो, पुण्य भरो हत पाप।।नाम.।।346।।

ॐ ह्रीं पापापेताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विपापात्मा' कहे, पाप हीन अतिशुद्ध।
मेरे सब अघ क्षय करो, होऊँ सिद्ध विशुद्ध।।नाम.।।347।।

ॐ ह्रीं विपापात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विपाप्मा' कर्म अघ चूर किया भगवान्।
तुम भक्ती से भव्यजन, बने सकल धनवान।।नाम.।।348।।

ॐ ह्रीं विपाप्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्ममल कल्मष धोकर शुद्ध।
प्रभो! 'वीतकल्मष' तुम्हीं मुझे करो झट शुद्ध।।नाम.।।349।।

ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'निर्द्वंद्व' हैं, द्वंद्व-कलह से मुक्त।
सर्व परिग्रह हीन हैं, करों हमें भव मुक्त।।नाम.।350।।

ॐ ह्रीं निर्द्वंद्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-वंदो दिगम्बर गुरु.....

प्रभु आप 'निर्मद' आठ विध मद रहित पूज्य महान।
तुम भक्त अतिशय स्वाभिमानी आत्म गौरववान।।
तुम नाम की अर्चा करूं मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।351।।

ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शांत' क्रोधादी कषायें नष्ट कर दी आप।
तुम पद कमल की भक्ति भी करती भविक मन शांत।।तुम.।।352।।

ॐ ह्रीं शांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मोह' प्रभु सब मोह अरु अज्ञान से भी दूर।
तुम भक्त का चारित्र दर्शन मोह करते दूर।।तुम.।।353।।

ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'निरुपद्रव' उपद्रव, उपसरग से हीन।
तुम भक्त भी जड़मूल से करते उपद्रव क्षीण।।तुम.।।354।।

ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दिव्यचक्षु नेत्रस्पंदन रहित विख्यात।
इससे कहें मुनि 'निर्निमेष' सुपाय ज्ञानविकास।।
तुम नाम की अर्चा करूं मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।355।।

ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निराहार' न आपको है कभी कवलाहार।
तुम भक्त भी आहार विरहित होंय निर्नीहार।।तुम.।।356।।

ॐ ह्रीं निराहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्क्रिय' प्रभो! सामायिकादि क्रियाओं से शून्य।
संसार की सब ही क्रियाओं से रहित सुखपूर्ण।।तुम.।।357।।

ॐ ह्रीं निष्क्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'निरुपप्लव' विघन बाधारहित भगवान।
तुम पाद अर्चन से सभी निर्विघ्न होते काम।।तुम.।।358।।

ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निष्कलंक' कलंक-अपवादादि अघ से हीन।
संपूर्ण कर्मकलंक नाशा विश्वज्ञान प्रवीण।।तुम.।।359।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निरस्तैना' सर्व एनस-पाप से हो दूर।
तुम भक्त भी मोहारि अघ नाशन करें बन शूर।।तुम.।।360।।

ॐ ह्रीं निरस्तैनसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्धूतआगस्' आप हैं अपराध अघ से हीन।
हे नाथ मुझ अपराध नाशो करो ज्ञान अधीन।।तुम.।।361।।

ॐ ह्रीं निर्धूतागसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निरास्रव' संपूर्ण आस्रव रोक संवररूप।
मुझ पाप आस्रव नाशिये हो शुद्ध आतमरूप।।तुम.।।362।।

ॐ ह्रीं निरास्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'विशाल' अनुपम शांति देते नित्य।
सबसे महान-विशाल मानें नमूँ मैं धर प्रीत्य।।तुम.।।363।।

ॐ ह्रीं विशालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विपुलज्योति' समस्त लोकालोकव्यापक ज्ञान।
तुम ज्ञानज्योति से हनें भवि मोह ध्वांत महान्।।तुम.।।364।।

ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अतुल' तुलनारहित जग में मुक्तिलक्ष्मीनाथ।
नहिं तोल सकते गुण तुम्हारे सर्व गण के नाथ।।तुम.।।365।।

ॐ ह्रीं अतुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'अचिन्त्यवैभव' विभव त्रिभुवन मान्य।
मन से न सुरपति योगिगण भी सोच सकते साम्य।।तुम.।।366।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'सुसंवृत' आप सम्यक् पूर्ण संवर युक्त।
तुम पदकमल की भक्ति से हों भव्य आस्रव मुक्त।।तुम.।।367।।

ॐ ह्रीं सुसंवृत्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगुप्तात्मा' आप आत्मा कर्मअरि से गुप्त।
तुम भक्त भी मन वचन कायिक गुप्ति से हों युक्त।।तुम.।।368।।

ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुबुध' अच्छी तरह त्रिभुवन जानते हैं आप।
मुझको निजातम तत्त्व का सुखबोध देवो आज।।तुम.।।369।।

ॐ ह्रीं सुबुधे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'सुनयतत्त्ववित्' सापेक्ष नय का मर्म।
जानों तुम्हीं बतला दिया जिन अनेकांत सुधर्म।।तुम.।।370।।

ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'एकविद्य' सुएक केवलज्ञान विद्या युक्त।
मतिश्रुत अवधि मनपर्ययी चउज्ञान विद्या मुक्त।।तुम.।।371।।

ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाविद्य' महान् केवलज्ञान विद्याधार।
अठरा महाभाषा लघु तुम सात सौ ध्वनि कार।।
तुम नाम की अर्चा करूं मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।372।।

ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनि' आप त्रिभुवन चराचर को जानते प्रत्यक्ष।
मैं आपका वंदन करूँ हो स्वात्मज्ञान प्रत्यक्ष।।तुम.।।373।।

ॐ ह्रीं मुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'परिवृढ' सब गुणों का वर्धन किया जिनराज।
तुम वंदना से सर्व मेरे गुण प्रगट हो आज।।तुम.।।374।।

ॐ ह्रीं परिवृढाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पती' प्राणीवर्ग को संसार दुख से काढ़।
रक्षा करो त्रिभुवनपती सुर नमें रुचिधर गाढ़।।तुम.।।375।।

ॐ ह्रीं पत्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–बसंततिलका छंद–

कैवल्यज्ञानमय बुद्धि धरंत 'धीश'।
मेरे सुज्ञानमय ज्योति करो मुनीश।।
हे नाथ! नाममय मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं।।376।।

ॐ ह्रीं धीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्यानिधी' स्वपर शास्त्र सुज्ञानरूपा।
भंडार आप उसके निधि है अनूपा।।हे नाथ.।।377।।

ॐ ह्रीं विद्यानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य की सकल वस्तु प्रतक्ष जानो।
'साक्षी' कहें सुरपती प्रभु ज्ञान भानू।।हे नाथ.।।378।।

ॐ ह्रीं साक्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षैक मार्ग प्रकटी करते 'विनेता'।
पादाब्ज में नित नमूँ मुझ विघ्न नाशो।।हे नाथ.।।379।।

ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यू विनाश 'विहितांतक' नाम धारा।
मेरे समस्त दुख रोष मिटाय दीजे।।हे नाथ.।।380।।

ॐ ह्रीं विहितान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा करो दुर्गती दुख से बचाते।
साधू 'पिता' कह रहे सुख के जनक हो।।हे नाथ.।।381।।

ॐ ह्रीं पित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य के गुरु कहें सबके सुत्राता।
इससे 'पितामह' तुम्हें कहते गणीशा।।हे नाथ.।।382।।

ॐ ह्रीं पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा करो नित भवोदधि दुःख से ही।
'पाता' कहें सुरपती मुझको उबारो।।हे नाथ.।।383।।

ॐ ह्रीं पात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा पवित्र कर ली निज की तुम्हीं ने।
इससे 'पवित्र' मुझको भि पवित्र कर दो।।हे नाथ.।।384।।

ॐ ह्रीं पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण भव्य जन को सुपवित्र करते।
'पावन' कहें मुनि तुम्हें मुझ पाप नाशो।।हे नाथ.।।385।।

ॐ ह्रीं पावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण भव्य तप कर प्रभू आप जैसा।
होना चहें 'गति' अतः सबको शरण भी।।हे नाथ.।।386।।

ॐ ह्रीं गतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्राता' समस्त जन रक्षक भी तुम्हीं हो।
पादाब्ज आश्रय लिया अतएव मैंने।।

हे नाथ! नाममय मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं।।387।।

ॐ ह्रीं त्रात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वैद्य आप भव रोग विनाश कर्ता।
इससे 'भिषग्वर' तुम्हीं मुझ व्याधि नाशो।।हे नाथ.।।388।।

ॐ ह्रीं भिषग्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वर्य' आप जग में अतिश्रेष्ठ माने।
मुक्तीरमा तुम वरण अभिलाष धारे।।हे नाथ.।।389।।

ॐ ह्रीं वर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छानुकूल सब वस्तू प्रदान करते।
इससे 'वरद' सुरग मोक्ष तुम्हीं प्रदाता।।हे नाथ.।।390।।

ॐ ह्रीं वरदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि से 'परम' आप त्रिलोक लक्ष्मी।
धारें अतः जन सभी तुम पास आते।।हे नाथ.।।391।।

ॐ ह्रीं परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा व अन्य जन को भि पवित्र करते।
इससे 'पुमान्' तुम ही जग के हितैषी।।हे नाथ.।।392।।

ॐ ह्रीं पुंसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'कवि' द्वादश अंग वर्णे।
सद्धर्म के कथन में अतिशायि पटुता।।हे नाथ.।।393।।

ॐ ह्रीं कवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना आदि नांत अतएव 'पुराण पुरुष'।
आत्मा पुराण पुरुषा प्रभु आपकी है।।हे नाथ.।।394।।

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि से अतिशयी प्रभु वृद्ध ही हो।
इस हेतु नाम तुम 'वर्षीयान्' पाया।।हे नाथ.।।395।।

ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुश्रेष्ठ हो 'ऋषभ' नाम धरा तुम्हीं ने।
इंद्रादि वंद्य सुरपूजित सौख्य देवो।।हे नाथ.।।396।।

ॐ ह्रीं ऋषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे देव! आप 'पुरु' हैं युग के विधाता।
संपूर्ण द्वादश गणों मधि मुख्य ही हो।।हे नाथ.।।397।।

ॐ ह्रीं पुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पत्ति है प्रतिष्ठा गुण की तुम्हीं से।
इससे तुम्हीं 'प्रतिष्ठाप्रसवादि' नामा।।हे नाथ.।।398।।

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण कार्य हित कारण 'हेतु' आप।
संपूर्ण ज्ञानमय नाथ! सुज्ञानदाता।।हे नाथ.।।399।।

ॐ ह्रीं हेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो एकमात्र गुरु सर्व त्रिलोक में भी।
अतएव आप 'भुवनैकपितामहा' हो।।हे नाथ.।।400।।

ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

प्रभु महाशोकध्वज आदि नाम सौ धारा सुरपति पूजित हो।
सौ इंद्रों से वंदित गणधर मुनिगण से वंदित संस्तुत हो।।
प्रभु सात परमस्थान हेतु मैं नित प्रति तुम गुण को गाऊँ।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको तुमपद में ही मैं रम जाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-रोला छंद-

जय जय श्री जिनदेव, तुम महिमा अतिभारी।
जय जय तुम पद सेव, करें निकट संसारी।।
जय जय मुनिगण नित्य, तुम गुण महिमा गाते।
हृदय कमल के माहिं, तुमको सहज बिठाते।।1।।

भविजन मन गृह माहिं, जब तुम वास करोगे।
उनके सब संताप, प्रभु तब क्यों न हरोगे।।
तुम तन के संस्पर्श, पवन लगे तन में जब।
अहो कौन सी व्याधि, दूर नहीं होवे तब।।2।।

सीता को जब राम, अग्नि प्रवेश कराया।
लिया आपका नाम, अग्नी नीर बनाया।।
शील माहात्म्य विकास, बहुविध कमल खिले हैं।
नाम मंत्र परसाद, जन जन हृदय मिले हैं।।3।।

वारिषेण के घात, हेतू शस्त्र चलायो।
आप नाम तत्काल, रत्नहार बनायो।।
मनोरमा जप नाम, वज्र किवाड़े खोले।
विद्युच्चर तुम नाम, जप भव बंधन तोड़े।।4।।

मनोवती ने आप, नाम जपा था जब ही।
दर्श मिला तत्काल, देवनिमित्त से तब ही।।
पूज्यपाद तुम नाम, ले निज दृष्टी पाई।
मानतुंग गुणगान, कर निज कीर्ति बढ़ाई।।5।।

बहुत भक्त तुम नाम, लेकर निज दुख चूरे।
कहूँ कहाँ तक नाम, होय कभी ना पूरे।।
मुझको भी हे नाथ! नाम मंत्र का शरणा।
नहीं शक्ति कुछ नाथ! लेश मात्र गुण वरणा।।6।।

मुझ में अगणित दोष, उन पर दृष्टि न डारो।
करो हमें संतोष, अपनो विरद निहारो।।
जब तक मुक्ति न होय, चरणों में रख लीजे।
नशे महारिपु मोह, ऐसी शक्ती दीजे।।7।।

-दोहा-

शरणागत के सर्वथा, तुम रक्षक भगवान।
'ज्ञानमती' अविचल निधी, दे मुझ करो महान।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महाशोकध्वजादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ज्ञानमती से जिनगुणसकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-9

स्थापना –गीता छंद

ऋषभेश प्रभु के नाम सार्थक गुणगणों से पूर्ण हैं।
इन्द्रादिगण गाते सदा अतएव अतिशय पूर्ण हैं।।
त्रैलोक्य वंदित उन प्रभू की मैं करूँ इत थापना।
पूजूँ अतुल गुरू भक्ति से, चाहूँ सदा हित आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –नाराच छंद

सिंधु नीर से जिनेन्द्र पाद पद्म पूजिये।
स्वात्म कर्मपंक धोय पूर्ण शुद्ध हूजिये।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनादि गंध से जिनेश चर्ण चर्चिये।
मोह ताप ध्वंस के अपूर्व शांति अर्जिये।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत स्वच्छ श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
स्वात्म सौख्य ले अखंड पाप को नशाइये।।

तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा जुही गुलाब वर्ण वर्ण के लिये।
कामदेव के जयी जिनेश चर्ण में दिये।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ियाँ इमर्तियाँ बनाय थाल में धरें।
पूर्णतृप्त आपको चढ़ाय व्याधियाँ हरें।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपवर्तिका जले समस्त ध्वांत को हरे।
पूजते तुम्हें प्रभो! अपूर्व ज्योति को करे।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंधयुक्त अग्निपात्र में जलाय हूँ।
पाप कर्म को जलाय पुण्यराशि पाय हूँ।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव संतरा अनार औ बदाम भी लिये।
मोक्ष सौख्य हेतु नाथ! आपको चढ़ा दिये।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय गंध शालि पुष्प आदि अष्ट द्रव्य ले।
तीन रत्न हेतु आप अर्घ्य से जजूँ भले।।
तीर्थनाथ नाम की सदैव अर्चना करूँ।
धर्म शुक्ल ध्यान हेतु नित्य वंदना करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

तीर्थंकर जिनदेव के चरणों में त्रय बार।
शांतीधारा मैं करूँ, होवे शांति अपार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल मल्लिका केवड़ा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि चरणों करूँ, करूँ स्वात्मशृंगार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-दोहा-

ज्ञान दर्श सुखवीर्यमय, गुण अनंत विलसंत।
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, हरूँ सकल जगफंद।।12।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–विष्णुपद छंद–

आप नाम 'श्री वृक्षलक्षणा' इंद्र सदा गावें।
दिव्य अशोक वृक्ष इक योजन मणिमय दर्शावें।।
नाममंत्र को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके।।401।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतलक्ष्मी प्रिया साथ में, आलिंगन करते।
सूक्ष्मरूप होने से भगवन् 'श्लक्ष्ण' नाम धरते।।नाम.।।402।।

ॐ ह्रीं श्लक्ष्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट महाव्याकरण कुशल हो, सर्वशास्त्रकर्ता।
प्रभू आप 'लक्षण्य' नामधर सबलक्षण भर्ता।।नाम.।।403।।

ॐ ह्रीं लक्षण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभलक्षण' श्रीवृक्ष शंख पंकज स्वस्तिक आदी।
प्रातिहार्य मंगल सुद्रव्य शुभ लक्षण सौ अठ भी।।नाम.।।404।।

ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निरक्ष' इंद्रिय से विरहित सौख्य अतीन्द्रिय हैं।
इंद्रिय निग्रहकर जो ध्याते वे निज सुखमय हैं।।नाम.।।405।।

ॐ ह्रीं निरक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पुण्डरीकाक्ष' कहाये नेत्र कमलसम हैं।
नासादृष्टि सौम्य छवि लखते नेत्र प्रफुल्लित हैं।।नाम.।।406।।

ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कल' आत्मगुणों से भगवन्! तुम परिपुष्ट हुये।
भक्तजनों का पोषण करते जो तुम शरण भये।।नाम.।।407।।

ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'पुष्करेक्षण' पंकज दल सदृश नेत्र लम्बे।
निजमन कमल खिलाने हेतू भवि तुम अवलंबे।।नाम.।।408।।

ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सिद्धिदा' स्वात्मलब्धि मुक्ती के दायक हो।
भक्तों की सब कार्यसिद्धि हित तुमही लायक हो।।नाम.।।409।।

ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सिद्धसंकल्प' सर्व संकल्प सिद्ध कीना।
भक्तों के भी सकल मनोरथ पूरे कर दीना।।नाम.।।410।।

ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धात्मा' प्रभु तुम आत्मा ने सिद्ध अवस्था ली।
सिद्ध शिला पर आप विराजे अनवधि गुणशाली।।नाम.।।411।।

ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम! 'सिद्धसाधन' शिवसाधन रत्नत्रय धारा।
जिनने आप चरण को पूजा उन्हें शीघ्र तारा।।नाम.।।412।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञेयवस्तु सब जान लिया है नहीं शेष कुछ भी।
'बुद्धबोध्य' अतएव कहाये, लिया सर्वसुख भी।।नाम.।।413।।

ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय गुण विभव प्रशंसित सब जग में प्रभु का।
'महाबोधि' अतएव आप ही हरो सर्व विपदा।।नाम.।।414।।

ॐ ह्रीं महाबोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम श्रेष्ठ अतिशायी पूजा ज्ञान लहा तुमने।
सदा गुणों से बढ़ते रहते 'वर्द्धमान' जग में।।नाम.।।415।।

ॐ ह्रीं वर्द्धमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़ी-बड़ी ऋद्धी के धारक आप 'महर्द्धिक' हो।
गणधर मुनिगण वंदित चरणा आप सौख्यपद हो।।नाम.।।416।।

ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद-चार अनुयोग ज्ञान के अंग-उपाय तुम्हीं।
अतः आप 'वेदांग' ज्ञानप्राप्ती के हेतु तुम्हीं।।नाम.।।417।।

ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद-आत्मविद्या शरीर से भिन्न आतमा है।
इसके ज्ञाता भिन्न किया तनु अतः 'वेदविद्' हैं।।नाम.।।418।।

ॐ ह्रीं वेदविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेद्य' आप ऋषिगण के द्वारा ज्ञान योग्य माने।
स्वसंवेद्य ज्ञान वो पाते जो पूजन ठाने।।नाम.।।419।।

ॐ ह्रीं वेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूप' तुम जन्में जैसे रूप दिगंबर है।
प्रकृतरूप निर्दोष आपका भविजन सुखप्रद है।।नाम.।।420।।

ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्वानों में श्रेष्ठ 'विदांवर' आप पूर्णज्ञानी।
तुमपद पंकज भक्त शीघ्र ही वरते शिवरानी।।नाम.।।421।।

ॐ ह्रीं विदांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदवेद्य' प्रभु आगम से तुम जानन योग्य कहे।
केवलज्ञान से हि या प्रभु जानन योग्य रहे।।नाम.।।422।।

ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वसंवेद्य' प्रभु स्वयं सुअनुभव गम्य आप ही है।
स्वयं स्वयं का अनुभव करके हुये केवली हैं।।नाम.।।423।।

ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'विवेद' वेदत्रय विरहित स्त्री पुरुषादी।
हो विशिष्ट विज्ञानी भगवन्! आतम सुखस्वादी।।नाम.।।424।।

ॐ ह्रीं विवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदताम्बर' प्रभु वक्तागण में सर्वश्रेष्ठ तुम ही।
सब भाषामय दिव्यध्वनी से उपदेशा तुम ही।।।।नाम.।।425।।

ॐ ह्रीं वदताम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

नाथ! 'अनादिनिधन' तुम्हीं, आदि अंत से हीन।
अतिशय लक्ष्मीयुत तुम्हीं, पूजूँ भक्ति अधीन।।426।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्त' आप सुज्ञान से, प्रगट सर्वथा मान्य।
सर्व अर्थ प्रकटित किया, जजत मिले धन धान्य।।427।।

ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्तवाक्' प्रभु तुम वचन, सर्व प्राणि को गम्य।
सभी अर्थ स्पष्ट हो, नमत जन्म हो धन्य।।428।।

ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'व्यक्तशासन' तुम्हीं, त्रिभुवन में स्पष्ट।
सब विरोधविरहित सुमत, नमूँ नमूँ अति इष्ट।।429।।

ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादिकृत्' कर्मभू, युग के कर्ता आप।
जीवन कला सिखाय दी, नमूँ हरो मुझ पाप।।430।।

ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगाधार' युग की सभी, किया व्यवस्था आप।
राजनीति अरु धर्मद्वय, किया नमूँ नित आप।।431।।

ॐ ह्रीं युगाधाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादि' तुम कर्मभू युग का कर प्रारंभ।
असि मषि आदि क्रिया कहीं, नमूँ तुम्हें तज दंभ।।432।।

ॐ ह्रीं युगादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' युग के प्रथम, आप हुये उत्पन्न।
तीर्थंकर युग के प्रथम, पूजूँ चित्त प्रसन्न।।433।।

ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज प्रभाव से इंद्रगण को भी कर अतिक्रांत।
प्रभु 'अतीन्द्रि' तुमको जजूँ, मिले सौख्य निर्भांत।।434।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अतीन्द्रिय' ज्ञानसुख, आप अतीन्द्रिय मान्य।
इंद्रिय के गोचर नहीं, नमूँ मिले सुख साम्य।।435।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' पूर्ण कैवल्यमय, बुद्धी के हो ईश।
शुद्ध बुद्धि मेरी करो जजूँ नमाकर शीश।।436।।

ॐ ह्रीं धीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम मोक्ष ऐश्वर्य का, अनुभव करते आप।
प्रभु 'महेन्द्र' तुमको नमूँ, हरो सकल संताप।।437।।

ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित दूर के, अतीन्द्रिय सुपदार्थ।
एक समय में देखते, 'अतीन्द्रियार्थदृक्' नाथ।।438।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय विरहित आप हैं आत्म सौख्य परिपूर्ण।
अतः 'अनिंद्रिय' मुनि कहे, नमत सर्व दुखचूर्ण।।439।।

ॐ ह्रीं अनिंद्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिंद्रों से पूज्य प्रभु, 'अहमिन्द्रार्च्य' महान।
अहं अहं कह संपदा, मिले जजत ही आन।।440।।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रार्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़े-बड़े सब इंद्र से, पूजित आप जिनेश।
सभी 'महेन्द्रमहित' कहें नमूँ हरो भवक्लेश।।441।।

ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध पूजासे महित, त्रिभुवन पूज्य 'महान्'।
नमूँ सदा मैं भाव से, करो स्वात्म धनवान्।।442।।

ॐ ह्रीं महते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ऊँचे उठ चुके, 'उद्भव' जगत्प्रसिद्ध।
जन्म श्रेष्ठ जग में धरा, पूजत करो समृद्ध।।443।।

ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के बीजप्रभु, 'कारण' आप प्रसिद्ध।
भविजन मुक्ती हेतु हो, नमत कार्य सब सिद्ध।।444।।

ॐ ह्रीं कारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग कि आदि में सृष्टि के 'कर्ता' आप जिनेश।
असि मषि आदिक षट् क्रिया उपदेशी परमेश।।445।।

ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसमुद्र के पार को, पहुँचे 'पारग' नाथ।
मुझको पार उतारिये, नमूँ नमूँ नत माथ।।446।।

ॐ ह्रीं पारगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-सागर सुपांचविध, इससे तारणहार।
'भवतारग' तुमको जजूँ भरो सौख्य भण्डार।।447।।

ॐ ह्रीं भवतारगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अगह्य' नहिं अन्य के अवगाहन के योग्य।
तुम गुण पार न पा सकें, पूजत सौख्य मनोज्ञ।।448।।

ॐ ह्रीं अगह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगिगम्य प्रभु अति गहन आप अलक्ष्य स्वरूप।
जजूँ 'गहन' अतिशय कठिन आप रूप चिद्रूप।।449।।

ॐ ह्रीं गहनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुह्य' योगि गोचर तुम्हीं, सर्वजनों से गुप्त।
नमूँ नमूँ मुझ मन वसो, करो मोह अरि सुप्त।।450।।

ॐ ह्रीं गुह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपजाति छंद–

'परार्ध्य' स्वामी सबमें प्रधाना।
उत्कृष्ट ऋद्धी सुख के निधाना।।
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।451।।

ॐ ह्रीं पराध्यार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'परमेश्वर' आप ही हैं।
उत्कृष्ट मुक्ती श्रीनाथ ही हैं।।पूजूँ.।।452।।

ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत ऋद्धी प्रभु आप में हैं।
अतः 'अनंतर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।453।।

ॐ ह्रीं अनंतर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमेय ऋद्धी मर्याद हीना।
अतः 'अमेयर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।454।।

ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचिन्त्य ऋद्धि नहिं सोच सकते।
अतः 'अचिन्त्यर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।455।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यद्र्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समग्रधी' ज्ञेयप्रमाण बुद्धी।
कैवल्यज्ञानी प्रभु आप ही हो।।पूजूँ.।।456।।

ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! तुम मुख्य सभी जनों में।
हो 'प्राग्र्य' इससे मैं नित्य वंदूँ।।पूजूँ.।।457।।

ॐ ह्रीं प्राग्र्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक मंगल शुभ कार्य में ही।
तुम्हें स्मरंते प्रभु 'प्राग्रहर' हो।।पूजूँ.।।458।।

ॐ ह्रीं प्राग्रहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकाग्र के सम्मुख हो रहे हो।
'अभ्यग्र' इससे मुनिनाथ कहते।।पूजूँ.।।459।।

ॐ ह्रीं अभ्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रत्यग्र' नूतन संपूर्ण जन में।
प्रभो! विलक्षण तुम ही कहाते।।पूजूँ.।।460।।

ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सभी के तुम 'अग्र्य' मानें।
मैंने शरण ली अतएव आके।।पूजूँ.।।461।।

ॐ ह्रीं अग्र्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण जन में प्रभू अग्रसर हो।
अतएव 'अग्रिम' कहते सुरेन्द्र।।पूजूँ.।।462।।

ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो ज्येष्ठ सबमें 'अग्रज' कहाते।
त्रैलोक्य में नाथ तुम्हीं बड़े हो।।पूजूँ.।।463।।

ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' घोर सुतप किया है।
बारह तपों को मुझको भि देवो।।पूजूँ.।।464।।

ॐ ह्रीं महातपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजोमयी पुण्य प्रभो! धरे हो।
'महासुतेजा' तुम तेज फैला।।पूजूँ.।।465।।

ॐ ह्रीं महातेजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महोदर्क' तुम्हें कहे हैं।
महान तप का फल श्रेष्ठ पाया।।पूजूँ.।।466।।

ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्य भारी प्रभु आपका है।
अतः 'महोदय' जग में तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।467।।

ॐ ह्रीं महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ती चहूँदिश प्रभु की सु फैली।
'महायशा' नाम कहा इसी से।।पूजूँ.।।468।।

ॐ ह्रीं महायशसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधाम' तुम्हीं कहाते।
विशाल ज्ञानी सुप्रताप धारी।।पूजूँ.।।469।।

ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासत्त्व' अपार शक्ती।
हे नाथ! मुझको निज शक्ति देवो।।पूजूँ.।।470।।

ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृती' धैर्य असीम धारी।
आपत्ति में धैर्य रहे मुझे भी।।पूजूँ.।।471।।

ॐ ह्रीं महाधृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधैर्य' त्रिलोक में भी।
क्षोभादि भय से नहिं आकुली थे।।पूजूँ.।।472।।

ॐ ह्रीं महाधैर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महावीर्य' अनंतशक्ती।
महान तेजोबल वीर्य शाली।।पूजूँ.।।473।।

ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासंपत्' सर्वसंपत्।
समोसरण में तुम पास शोभे।।पूजूँ.।।474।।

ॐ ह्रीं महासंपदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाबल' तनु शक्ति भारी।
ऐसी जगत् में नहिं अन्य के हो।।पूजूँ.।।475।।

ॐ ह्रीं महाबलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शिखरणी छंद–

'महाशक्ती' धारो त्रिभुवन गुरू आप सच में।
महा उत्साही थे बहुविध तपा आप तप भी।।
प्रभू की नामावलि नितप्रति जपूँ भावमन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूँ आत्म तन से।।476।।

ॐ ह्रीं महाशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्योती' स्वामी, अद्भुत परंज्ञानमय हो।
मुझे ज्ञानज्योति झटिति प्रभू दो पूर्ण सुख हो।।प्रभू.।।477।।

ॐ ह्रीं महाज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूती' स्वामी, विभव अतिशायी जगत में
प्रभो राजें सिंहासन मणिमय पे अधर ही।।प्रभू.।।478।।

ॐ ह्रीं महाभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की जो शोभा 'महाद्युति' नामा धरत है।
नहीं ऐसी कांती रतनमणि में भी दिखत है।।प्रभू.।।479।।

ॐ ह्रीं महाद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबुद्धी पूर्णा 'महामति' का नाम धरती।
हमें भी दे दीजे सुमति भगवन्! होय सुगती।।प्रभू.।।480।।

ॐ ह्रीं महामतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानीती' धारो सकल जन का न्याय करते।
महा दुष्कर्मों से अलग करके सौख्य भरते।।प्रभू.।।481।।

ॐ ह्रीं महानीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्षान्ती' स्वामी परम करुणा भव्य जन पे।
निकालो दुःखों से करम अरि को माफ करते।।प्रभू.।।482।।

ॐ ह्रीं महाक्षान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादय' हो स्वामी, सकल भवि प्राणी पर दया।
किया शिष्यों से भी सतत पलवायी अहिंसा।।प्रभू.।।483।।

ॐ ह्रीं महादयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाविद्वान् भगवान् शिवपद 'महाप्राज्ञ' तुम हो।
मुझे दीजे बुद्धी भवदधि तरूँ युक्ति करके।।प्रभू.।।484।।

ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभागी स्वामी सुखकर 'महाभाग' तुम हो।
महा पूजा पायी सुरपति किया भक्ति रुचि से।।प्रभू.।।485।।

ॐ ह्रीं महाभागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजानंदात्मा हो सुखमय 'महानंद' प्रभु हो।
मुझे दीजे स्वामी सकल सुखकर मोक्षपदवी।।प्रभू.।।486।।

ॐ ह्रीं महानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवि' हे स्वामिन्! सकल सुखदायी वचन हैं।
प्रभो दीजे शक्ती मुझ वचन सिद्धी प्रगट हो।।प्रभू.।।487।

ॐ ह्रीं महाकवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामह' हे स्वामिन्! सुरपति करें आप अर्चा।
महा तेजस्वी हो अखिल जनता सौख्य भरता।।प्रभू.।।488।।

ॐ ह्रीं महामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकीर्ती' स्वामी सुयश तुम व्यापा भुवन में।
प्रभू पादाम्बुज को सतत प्रणमूँ स्वात्मनिधि दो।।प्रभू.।।489।।

ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्ती' धारो अतुल छवि है आप तनु की।
सभी आधी व्याधी हरण करके स्वस्थ कर दो।।प्रभू.।।490।।

ॐ ह्रीं महाकान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! ऊँचे देही, 'महावपु' तुम ही चरम हो।
मिटा दो बाधायें विघन हरता आज जग में।।प्रभू.।।491।।

ॐ ह्रीं महावपुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसा जीवों की अभयद 'महादान' करते।
हमारी रक्षा भी झटिति प्रभु कीजे जगत् से।।प्रभू.।।492।।

ॐ ह्रीं महादानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! केवलज्ञानी युगपत् 'महाज्ञान' गुण से।
सभी लोकालोकं विशद त्रयकालिक लखत हो।।प्रभू.।।493।।

ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! एकाग्री हो शिवप्रद 'महायोग' गुण से।
स्वयं में ही साधा निजसुख महाध्यान बल से।।प्रभू.।।494।।

ॐ ह्रीं महायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों की खानी हो अतिशय 'महागुण' मुनि कहें।
गुणों को दे दीजे सकल मुझ दोषादि हन के।।प्रभू.।।495।।

ॐ ह्रीं महागुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमेरु पे तेरा न्हवन करते इंद्रगण भी।
महापूजा पायी 'महामहपति' आप जग में।।प्रभू.।।496।।

ॐ ह्रीं महामहपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरेंद्रों के द्वारा प्रभु 'प्राप्तमहाकल्याणपंचक'।
गरभ जन्मादी में उत्सव किया देवगण ने।।प्रभू.।।497।।

ॐ ह्रीं प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी के स्वामी हो अतिशय 'महाप्रभु' भुवन में।
निवारो मोहारी बहुत दुख देता जु मुझको।।प्रभू.।।498।।

ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रातीहार्याधिश' चमर छत्रादिक लहा।
शतेन्द्रों से पूजित त्रिभुवन विभव आप चरणों।।प्रभू.।।499।।

ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वर' हो स्वामी सुरपति अधीश्वर तुमहि हो।
सुभक्ती से वंदूँ झटिति शिव लक्ष्मी वरद हो।।
प्रभू की नामावलि नितप्रति जपूँ भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूँ आत्म तन से।।500।।

ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

श्री वृक्षलक्षणादिक सौ ये तुम नाममंत्र अतिशयकारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ भक्ति करूँ, पा जाऊँ जिन संपति सारी।।
बहिरात्म अवस्था छोड़ नाथ! अंतर आतम शुद्धात्म बनूँ।
तुम भक्ति युक्ति से शक्ति पाय मुक्तीपद पा जिनराज बनूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-दोहा-

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम धुनि सुन भविवृन्द नित, हरें सकल संताप।।1।।

-शंभु छंद-

जय जय त्रिभुवन पति का वैभव, अन्तर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्श ज्ञान सुख वीर्यरूप, आनन्त्य चतुष्टय निधिमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानीं।
जब गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।
यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
द्वादश योजन उत्कृष्ट कही, इक योजन हो घटते क्रम से।।

यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।
पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, जो अनुपम शोभा धारे है।।
सब बीस हजार हाथ ऊँचा, यह समवसरण अति शोभा है।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभे।।4।।
पंगू अन्धे रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महावीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तम्भ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।
इक योजन से कुछ अधिक तुँग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मनस्तम्भों की सीढ़ी पर लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।
ये अस्सी कोशों तक सचमुच, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तम्भों के चारों दिश, जल पूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अति सुन्दर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।
ये प्रभु का सन्निध पा करके, ही मान गलित कर पाते हैं।
अतएव सभी अतिशय भगवन्! तेरा ही गुरुजन गाते हैं।।
मैं भी प्रभु तुम सन्निध पाकर, संपूर्ण कषायों को नाशूँ।
प्रभु ऐसा वह दिन कब आवे, जब निज में निज को परकाशूँ।।8।।
जिननाथ! कामना पूर्ण करो, जिन चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित स्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मम मन तुम पद ध्यावें।।9।।

–दोहा –

तीर्थंकर गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य श्रीवृक्षलक्षणादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-10

स्थापना –नरेन्द्र छंद

भव्यजनों को भववारिधि से, कैसे पार करूँ मैं।
अतिकरुणा से धर्मध्यानमय भाव धरें नित मन में।।
ऐसे धार्मिक मनुज तीर्थंकर प्रकृति बंध करते हैं।
उन तीर्थंकरों को जजते ही शिव लक्ष्मी वरते है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –भुजंगप्रयात छंद

महापुण्य भंडार हो तीर्थनामी।
जजूँ नीर से मैं तुम्हें मोक्षगामी।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशांति सिंधू सभी शील पूरे।
जजूँ आपको गंध से ताप चूरें।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचित्पिंड सिंधू सभी शील पूरे।
जजूँ आपको गंध से ताप चूरें।।

प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रतीनाथ के आप ही तो विजेता।
जजूँ पुष्प से आप को मुक्ति नेता।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी दोष से शून्य हो आप ही हो।
परं तृप्ति हेतू जजूँ मैं तुम्हीं को।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परं ज्योतिधारी तुम्हें दीप से मैं।
जजूँ ज्योति अंतर जगे ज्ञान की मैं।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनिपात्र में धूप खेऊँ रुची से।
सदा सौख्य हेतू भजूँ मन शुची से।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास नींबू फलों से जजूँ मैं।
सुसर्वार्थसिद्धी फलों को भजूँ मैं।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसू द्रव्य ले अर्घ्य को नित चढ़ाऊँ।
करो पूर्ण संयम कि मैं मोक्ष पाऊँ।।
प्रभू नाम के मंत्र को नित्य वंदूँ।
महापंच परिवर्तनों को विखंडूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुनि-आदिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

सरयू नदि को नीर ले, जिनपद धार करंत।
तिहुंजग में मुझ में सदा, करो शांति भगवंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

श्वेत कमल नीले कमल, अति सुगंध कल्हार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-दोहा-

सब कर्मों के एक ही, मोह कर्म बलवान।
उसके नाशन हेतु मैं, पूजूँ भक्ति प्रधान।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–सोरठा–

'महामुनि' प्रभु आप, मुनियों में उत्तम कहे।
नाममंत्र तुम नाथ! पूजत ही सुखसंपदा।।501।।

ॐ ह्रीं महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि हो मौन धरंत, प्रभु 'महामौनी' तुम्हीं।
नाम मंत्र पूजंत, रोग शोक संकट टले।।502।।

ॐ ह्रीं महामौनिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म शुक्लद्वय ध्यान, धार 'महाध्यानी' हुये।
नाममंत्र का ध्यान, करते ही सब सुख मिले।।503।।

ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण जितेन्द्रिय आप, नाम 'महादम' धारते।
नाममंत्र तुम नाथ! पूजत आतम निधि मिले।।504।।
ॐ ह्रीं महादमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ क्षमा के ईश, नाम 'महाक्षम' सुर कहें।
नाममंत्र नत शीश, पूजूं मैं अतिभाव से।।505।।
ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस सुशील, 'महाशील' तुम नाम है।
पूरण हो गुण शील, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।506।।
ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप अग्नी में आप, कर्मेंधन को होमिया[1]**।**
'महायज्ञ' तुम नाथ, पूजूँ भक्ति बढ़ाय के।।507।।
ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पूज्य जिनेश! नाम 'महामख' धारते।
पूजूँ भक्ति समेत, नाममंत्र प्रभु सुख मिले।।508।।
ॐ ह्रीं महामखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच महाव्रत ईश, नाम 'महाव्रतपति' धरा।
जजूँ नमाकर शीश, नाममंत्र प्रभु आपके।।509।।
ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप जगपूज्य, गणधर साधू गण नमें।
मिलें स्वात्मपद पूज्य, नाममंत्र को पूजते।।510।।
ॐ ह्रीं मह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्तिधर' आप अतिशय कांतिनिधान हो।
नाममंत्र तुम जाप, करे अतुल सुखसंपदा।।511।।
ॐ ह्रीं महाकांतिधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी इष्ट, अतः 'अधिप' सुरगण कहें।
नाशो सर्व अनिष्ट, नाममंत्र तुम पूजहूँ।।512।।
ॐ ह्रीं अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. होम कर दिया।

'महामैत्रिमय' नाथ! सबसे मैत्रीभाव है।
नाममंत्र तुम जाप, त्रिभुवन को वश में करे।।513।।
ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनविध गुण के नाथ, तुम्हें 'अमेय' मुनी कहें।
पूजत बनूँ सनाथ, नाममंत्र प्रभु आपके।।514।।
ॐ ह्रीं अमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' तुम नाथ! शिव के श्रेष्ठ उपाययुत।
जजत सर्व सुखसाथ, नाममंत्र को नित जपूँ।।515।।
ॐ ह्रीं महोपायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ!'महोमय' आप, अति उत्सव अरु ज्ञानयुत।
नाममंत्र तुम जाप, सर्व उपद्रव नशाता।।516।।
ॐ ह्रीं महोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' आप, दया धर्म उपदेशिया।
नाममंत्र का जाप, करत जन्म मृत्यु टले।।517।।
ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंता' आप महान, सब पदार्थ को जानते।
जजूँ नाम गुणखान, पूर्ण ज्ञान संपति मिले।।518।।
ॐ ह्रीं मंत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व मंत्र के ईश, 'महामंत्र' तुम नाम है।
तुम्हें नमें गणधीश, नाममंत्र मैं भी जजूँ।।519।।
ॐ ह्रीं महामंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतिगण में अतिश्रेष्ठ, नाम 'महायति' आपका।
पूजत ही पद श्रेष्ठ, नाममंत्र को पूजहूँ।।520।।
ॐ ह्रीं महायतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानाद' प्रभु आप, दिव्यध्वनी गंभीर धर।
नमत बनूँ निष्पाप, नाममंत्र भी मैं जजूँ।।521।।
ॐ ह्रीं महानादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनी गंभीर, योजन तक सुनते सभी।
जजत मिले भवतीर, 'महाघोष' तुम नाम को।।522।।

ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'महेज्य' सुनाम, महती पूजा पावते।
सौ इन्द्रों से मान्य, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।523।।

ॐ ह्रीं महेज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महसांपति' प्रभु आप, सर्व तेज के ईश हो।
तुम प्रताप भवताप, हरण करे मैं पूजहूँ।।524।।

ॐ ह्रीं महसांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ को धार, नाम 'महाध्वरधर' प्रभु।
मिले सर्व सुखसार, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।525।।

ॐ ह्रीं महाध्वरधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

'धुर्य' हो मुक्ति के मार्ग में श्रेष्ठ हो।
कर्म-भू आदि में सर्व में ज्येष्ठ हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।526।।

ॐ ह्रीं धुर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महौदार्य' अतिशायि ऊदार हो।
आप निर्ग्रन्थ भी इष्ट दातार हो।।आप.।।527।।

ॐ ह्रीं महौदार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य वाक्याधिपति सु 'महिष्ठवाक्' हो।
दिव्यवाणी सुधावृष्टि कर्ता सु हो।।आप.।।528।।

ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक आलोक व्यापी 'महात्मा' तुम्हीं।
अंतरात्मा पुनः सिद्ध आत्मा तुम्हीं।।आप.।।529।।

ॐ ह्रीं महात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व तेजोमयी 'महसांधाम' हो।
आत्म के तेज से सर्व जग मान्य हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।530।।

ॐ ह्रीं महासांधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋषि में प्रमुख हो 'महर्षि' तुम्हीं।
ऋद्धि सिद्धी धरो आप सुख ही मही।।आप.।।531।।

ॐ ह्रीं महर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भव धार के आप 'महितोदया'।
तीर्थकर नाम से पूज्य धर्मोदया।।आप.।।532।।

ॐ ह्रीं महितोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महाक्लेशअंकुश' परीषहजयी।
क्लेश के नाश हेतू सुअंकुश सही।।आप.।।533।।

ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शूर' हो कर्मक्षय दक्ष हो लोक में।
नाथ! मेरे हरो कर्म आनंद हो।।आप.।।534।।

ॐ ह्रीं शूराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाभूतपति' गणधराधीश हो।
नाथ! रक्षा करो आप जगदीश हो।।आप.।।535।।

ॐ ह्रीं महाभूतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपही हो 'गुरु' धर्म उपदेश दो।
तीन जग में तुम्हीं श्रेष्ठ हो सौख्य दो।।आप.।।536।।

ॐ ह्रीं गुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महापराक्रम' के धनी।
केवलज्ञान से सर्ववस्तु भणी।।आप.।।537।।

ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनंत' आपका अंत ना हो कभी।
नाथ! दीजे अनंतों गुणों को अभी।।आप.।।538।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाक्रोधरिपु' क्रोध शत्रू हना।
सर्व दोषारिनाशा सुमृत्यु हना।।आप.।।539।।

ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप इंद्रिय 'वशी' लोक तुम वश्य में।
आत्मवश मैं बनूँ चित्त को रोक के।।आप.।।540।।

ॐ ह्रीं वशिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! हो 'महाभवाब्धिसंतारि' भी।
आप संसार सागर तरा तारते।।आप.।।541।।

ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही 'महामोहाद्रिसूदन' कहे।
मोह पर्वत सुभेदा सुज्ञाता बनें।।आप.।।542।

ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'महागुणाकर' लोक में।
रत्नत्रय की खनी भव्य पूजें तुम्हें।।आप.।।543।।

ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्त' हो सर्वपरिषह उपद्रव सहा।
आपकी भक्ति से हो क्षमा गुण महा।।आप.।।544।।

ॐ ह्रीं क्षान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'महायोगिश्वर' गणधरादी पती।
योगियों में धुरंधर जगत के पती।।आप.।।545।।

ॐ ह्रीं महायोगिश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शमी' शांत परिणाम से विश्व में।
पूर्ण शांती मिले पूजहूँ नाथ! मैं।।

आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।546।।

ॐ ह्रीं शमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाध्यानपति' शुक्लध्यानीश हो।
शुक्ल परिणाम हों नाथ! वरदान दो।।आप.।।547।।

ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यातमहाधर्म' सब जीव रक्षा करी।
शुभ अहिंसामयी धर्म के हो धुरी।।आप.।।548।।

ॐ ह्रीं ध्यातमहाधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाव्रत' प्रभो! पाँच व्रत श्रेष्ठ धर।
पूर्ण होवें महाव्रत बनूँ मुक्तिवर।।आप.।।549।।

ॐ ह्रीं महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'महाकर्म अरिहा' महावीर हो।
कर्म अरि को हना आप अरिहंत हो।।आप.।।550।।

ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सुन्दरी छंद–

निज स्वरूप विदित 'आत्मज्ञ' हो।
सब चराचर लोक सुविज्ञ हो।।
जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।551।।

ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व देवन मधि 'महादेव' हो।
सुर असुर पूजित महादेव हो।।जजतहूँ.।।552।।

ॐ ह्रीं महादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत समरथवान 'महेशिता'।
सकल ऐश्वर धारि जिनेशिता।।जजतहूँ.।।553।।

ॐ ह्रीं महेशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरवक्लेशापह' दुख नाशिये।
सकल ज्ञान सुधामय साजिये।।जजतहूँ.।।554।।

ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज हितंकर 'साधु' कहावते।
स्वपर हित साधन बतलावते।।जजतहूँ.।।555।।

ॐ ह्रीं साधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरबदोषहरा' जिन आप हो।
सकल गुणरत्नाकर नाथ हो।।जजतहूँ.।।556।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हर' तुम्हीं सब पाप विनाशते।
प्रभु अनंतसुखाकर आप ही।।जजतहूँ.।।557।।

ॐ ह्रीं हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'असंख्येय' प्रभु आप ही।
गिन नहीं सकते गुण साधु भी।।जजतहूँ.।।558।।

ॐ ह्रीं असंख्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रमेयात्मा' जिन आप हो।
अनवधी शक्तीधर नाथ हो।।जजतहूँ.।।559।।

ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'शमात्मा' शांतस्वरूप हो।
सकल कर्मक्षयी शिवभूप हो।।जजतहूँ.।।560।।

ॐ ह्रीं शमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगट 'प्रशमाकर' शमखानि हों
जगत शांतिसुधा बरसावते।।जजतहूँ.।।561।।

ॐ ह्रीं प्रशमाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरवयोगीश्वर' मुनि ईश हो।
गणधरादि नमावत शीश को।।

जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।562।।

ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन में तुम ईश! 'अचिन्त्य' हो।
नहिं किसी जन के मन चिन्त्य हो।।जजतहूँ.।।563।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'श्रुतात्मा' सब श्रुतरूप हो।
सकल भाव श्रुतांबुधि चन्द्र हो।।जजतहूँ.।।564।।

ॐ ह्रीं श्रुतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जानत 'विष्टरश्रव' कहे।
धरम अमृतवृष्टि करो सदा।।जजतहूँ.।।565।।

ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश किया मन 'दान्तात्मा' प्रभो।
सुतप क्लेश सहा जिन आपने।।जजतहूँ.।।566।।

ॐ ह्रीं दान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'दमतीरथईश' हो।
सकल इन्द्रियनिग्रह तीर्थ हो।।जजतहूँ.।।567।।

ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल ध्यात सु 'योगात्मा' तुम्हीं।
शुकल योगधरा जिन आपने।।जजतहूँ.।।568।।

ॐ ह्रीं योगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा तुम 'ज्ञानसुसर्वगा'।
जगत व्याप्त किया निज ज्ञान से।।जजतहूँ.।।569।।

ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रधान' तुम्हीं त्रय लोक में।
प्रमुख हो निज आतम ध्यान से।।

जजतहूँ तुम नाम सुमंत्र को।
सकल सौख्य लहूँ हन कर्म को।।570।।

ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमहि 'आत्मा' ज्ञान स्वरूप हो।
सकल लोक अलोक सुजानते।।जजतहूँ.।।571।।

ॐ ह्रीं आत्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रकृति' हो तिहुँलोक हितैषि हो।
प्रकृतिरूप धरम उपदेशि हो।।जजतहूँ.।।572।।

ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम' हो सबमें उत्कृष्ट हो।
परम लक्ष्मीयुत जिनश्रेष्ठ हो।।जजतहूँ.।।573।।

ॐ ह्रीं परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत 'परमोदय' जिननाथ हो।
परम वैभव से तुम ख्यात हो।।जजतहूँ.।।574।।

ॐ ह्रीं परमोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्रक्षीणाबंध' जिनेश हो।
सकल कर्म विहीन तुम्हीं कहे।।जजतहूँ.।।575।।

ॐ ह्रीं प्रक्षीणबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–मोतीदाम छंद–

प्रभो! तुम 'कामारी' जग सिद्ध।
किया तुम काम महाअरि विद्ध।।
जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।576।।

ॐ ह्रीं कामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'क्षेमकृता' अभिराम।
जगत् कल्याण किया सुखधाम।।

जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।577।।

ॐ ह्रीं क्षेमकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'क्षेमसुशासन' सिद्ध।
किया मंगल उपदेश समृद्ध।।जजूँ.।।578।।

ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणव' तुमही ओंकार स्वरूप।
सभी मंत्रों मधि शक्तिस्वरूप।।जजूँ.।।579।।

ॐ ह्रीं प्रणवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणय' सबका तुम्ही में प्रेम।
नहीं तुम बिन होता सुख क्षेम।।जजूँ.।।580।।

ॐ ह्रीं प्रणयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'प्राण' जगत् के त्राण।
दिया सब ही को जीवन दान।।जजूँ.।।581।।

ॐ ह्रीं प्राणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'प्राणद' बलदातार।
सभी जन रक्षक नाथ उदार।।जजूँ.।।582।।

ॐ ह्रीं प्राणदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणतेश्वर' भव्यन ईश।
नमें तुमको उनके प्रभु ईश।।जजूँ.।।583।।

ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रणाम' तुम्हीं जग ज्ञान धरंत।
तुम्हें भवि प्रा होते भगवंत।।जजूँ.।।584।।

ॐ ह्रीं प्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रणिधी' निधियों के स्वामि।
अनंत गुणाकर अंतर्यामि।।

जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।585।।

ॐ ह्रीं प्रणिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं प्रभु 'दक्ष' समर्थ सदैव।
करो मुझ कर्म अरी का छेव।।जजूँ.।।586।।

ॐ ह्रीं दक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दक्षिण' हो सर्व प्रवीण।
सरल अतिशायि महागुणलीन।।जजूँ.।।587।।

ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'अध्वर्यु' सुयज्ञ करंत।
महा शिवमार्ग दिया भगवंत।।जजूँ.।।588।।

ॐ ह्रीं अध्वर्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अध्वर' शिवपथ दर्शंत।
सदा ऋजु ही परिणाम धरंत।।जजूँ.।।589।।

ॐ ह्रीं अध्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमही 'आनंद' अनूप।
मुझे सुखदेव सदा सुखरूप।।जजूँ.।।590।।

ॐ ह्रीं आनन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा सबको आनंद करंत।
तुम्हीं प्रभु 'नंदन' नाम धरंत।।जजूँ.।।591।।

ॐ ह्रीं नंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'नन्द' समृद्धि निधान।
सदा करते तुम ज्ञान सुदान।।जजूँ.।।592।।

ॐ ह्रीं नन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'वंद्य' सुरासुर पूज्य।
सभी वंदन करते अनुकूल्य ।।

जजूँ तुम नाम महा गुणखान।
भजूँ निज धाम अनन्त महान्।।593।।

ॐ ह्रीं वंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनिंद्य' तुम्हीं सब दोष विहीन।
अनंत गुणों के पुंज प्रवीण।।जजूँ.।।594।।

ॐ ह्रीं अनिंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अभिनंदन' जग आनंद।
प्रशंसित हो त्रिभुवन में वंद्य।।जजूँ.।।595।।

ॐ ह्रीं अभिनंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'कामह' काम हनंत।
विषयविषमूर्च्छित को सुखकंद।।जजूँ.।।596।।

ॐ ह्रीं कामघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो तुम 'कामद' हो जग इष्ट।
सभी अभिलाष करो तुम सिद्ध।।जजूँ.।।597।।

ॐ ह्रीं कामदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोहर 'काम्य' सभी जन इष्ट।
तुम्हें नित चाहत साधु गणीश।।जजूँ.।।598।।

ॐ ह्रीं काम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोरथ पूरण 'कामसुधेनु'।
करो मुझ वांछित पूर्ण जिनेन्द्र।।जजूँ.।।599।।

ॐ ह्रीं कामधेनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अरिंजय' आप करम अरि जीत।
हरो मुझ कर्म तुम्हीं जगमीत।।जजूँ.।।600।।

ॐ ह्रीं अरिंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

प्रभु महामुनी से ले करके, सौ नाम तुम्हारे जग पूजें।
जो भक्ति वंदना नित्य करें, वो भव भव के दुख से छूटें।।

मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके मेरी भव भव की व्याधि हरो।
प्रभु सात परमस्थान देय, जिनगुण संपत्ती पूर्ण करो।।6।।

ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–1. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**

2. **ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः।** (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)

(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-दोहा-

परम चिदंबर चित्पुरुष, चिच्चिंतामणि देव।
गाऊँ तुम गुणमालिका, करूँ सतत तुम सेव।।1।।

-रोला छंद-

जय जय श्री जिनदेव, विषय कषाय विजेता।
जय जय तुम पद सेव करते श्रुत के वेत्ता।।
प्रभु तुमने छह द्रव्य, गुणपर्याय समेता।
दिव्यज्ञान से देख, बतलाते शिवनेता।।2।।

जीव तत्त्व हैं तीन, भेद कहे शुभ कामा।
बहिरातम अंतर आतम औ परमात्मा।।
प्रभु मैं दीन अनाथ, मैं दुखिया संसारी।
जन्म मरण के दुःख, मैं भरता अतिभारी।।3।।

मेरा होवे जन्म, मेरा ही मरणा हो।
मुझ में इष्ट वियोग, आदिक दुख भरना हो।।
मेरे धन जन मित्र, ये परिवार घनेरे।
मैं इनका प्रतिपाल, ये सब हैं नित मेरे।।4।।

यह बहिरात्म स्वरूप, दर्शन मोह जनित है।
इसके वश हे नाथ! मैं दुख सहा अधिक है।।

निश्चय से मैं एक चिच्चैतन्य स्वरूपी।
परमानंद स्वरूप अविचल अमल अरूपी।।5।।

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, सिद्ध स्वरूप हमारा।
कर्मकलंक विहीन, सकल जगत् से न्यारा।।
ये वर्णादिक रूप, पुद्गल के गुण मानें।
रागादिक भी भाव, औपाधिक ही मानें।।6।।

क्षायोपशमिक सुज्ञान, वे भी कर्म जनित हैं।
परम शुद्ध चिद्भाव, मेरा ज्ञान अमित है।।
मैं भगवान स्वरूप, जनम मरण विरहित हूँ।
चिन्मय ज्योति स्वरूप, केवलज्ञान सहित हूँ।।7।।

टंकोत्कीर्ण सुएक, ज्ञायक भाव हमारा।
सब प्रदेश में व्याप्त, सब कुछ जानन हारा।।
यद्यपि मैं व्यवहार, नय से कर्म सहित हूँ।
जनम मरण दुख पूर्ण, नाना व्याधि सहित हूँ।।8।।

फिर भी निश्चय नीति, तत्त्व स्वरूप प्रकाशे।
नय व्यवहार सदैव, धर्म तीर्थ को भाषे।।
दोनों नय सापेक्ष, वस्तु स्वरूप बतावें।
सम्यग्दृष्टी जीव, द्वय नय आश्रय पावें।।9।।

अवरित सम्यग्दृष्टि, जघन्य अंतर आत्मा।
पंचम से ग्यारंत, मध्यम अंतर आत्मा।।
बारहवें गुणस्थान, मुनिवर क्षीणकषायी।
उत्तम अंतर आत्म, जड़ से मोह नशायी।।10।।

श्री अर्हंत जिनेन्द्र, कहें सकल परमात्मा।
नित्य निरंजन सिद्ध, रहें निकल परमात्मा।।
इस विध जीव सुतत्त्व, बाकी पाँच अजीवा।
पुद्गल धर्म अधर्म, नभ औ काल सदीवा।।11।।

करिए कृपा जिनेन्द्र! बहिरात्मत्व तजूँ मैं।
अंतर आतम होय, पद परमात्म भजूँ मैं।।
जब तक निज पद नाहिं, तब तक भक्ति तुम्हारी।
अचल रहे हे नाथ! कभी न होऊँ दुखारी।।12।।

-घत्ता-

श्री जिनपद प्रीती, अविचलरीती, जो जन मन वच तन करहीं।
सो 'ज्ञानमती' से, स्वगुणरती से, निजगुण संपत्ती वरहीं।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य महामुन्यादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-11

स्थापना –गीता छंद

जो गणधरों से वंद्य हैं बारह सभा के नाथ हैं।
निज भक्त को संसार में करते सदैव सनाथ हैं।।
उन तीर्थंकर जिनदेव को मैं आज पूजूँ भाव से।
निज आत्म निधि की प्राप्ति हो अतएव थापूँ चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

चाल –नंदीश्वर पूजा.....

यमुना नदि का शुचिनीर, झारी पूर्ण भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, तुम पद धार करूँ।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सार, गंध सुगंध करे।
चर्चूं जिनपद सुखकार, मन की तपन हरे।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम अक्षत लाय, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज अक्षयपद को पाय, यहाँ न आऊँ मैं।।

तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला मचकुंद गुलाब, चुन चुन के लाऊँ।
अर्पूं जिनवर चरणाब्ज, निजसुखयश पाऊँ।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं लड्डू मोतीचूर, थाली भर लाऊँ।
हो क्षुधा वेदना दूर, अर्पत सुख पाऊँ।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय दीपक की ज्योति, जग अंधेर हरे।
मुझ मोहतिमिर हर ज्योति, ज्ञानउद्योत करे।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेऊँ अगनी में।
उड़ती दशदिश में धूम्र, फैले यश जग में।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंगूर अनार, श्रीफल भर थाली।
अर्पूं जिन आगे सार, मनरथ नहिं खाली।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ्य बनाय उसमें रत्न मिला।
जिन आगे नित्य चढ़ाय, पाऊँ सिद्ध शिला।।
तीर्थंकर देव महान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवरण झारी में भरूँ, गंगा नदि को नीर।
शांती धारा मैं करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला बकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-दोहा-

परमानंद पियूष घन, वर्षा करें जिनंद।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सर्वसुखकंद।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–भुजंगी छंद–

'असंस्कृतसुसंस्कार' नामा तुम्हीं।
बिना संस्कारे सुसंस्कृत तुम्हीं।।
जजूँ नाम मंत्रावली भक्ति से।
पिऊँ आत्म पीयूष भी युक्ति से।।601।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्राकृत' तुम्हीं तो स्वभावीक हो।
धरा अष्टमें वर्ष व्रत देश को।।जजूँ.।।602।।

ॐ ह्रीं अप्राकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'वैकृतांतकृत' आप ही।
विकारादि दोषा विनाशा तुम्हीं।।जजूँ.।।603।।

ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अंतकृत' दुःख को नाशिया।
जनम मृत्यु का भी समापन किया।।जजूँ.।।604।।

ॐ ह्रीं अंतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'कांतगू' श्रेष्ठ वाणी धरो।
मुझे हो वचोसिद्धि ऐसा करो।।जजूँ.।।605।।

ॐ ह्रीं कांतगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महारम्य सुंदर प्रभो! 'कांत' हों।
त्रिलोकीपती साधु में मान्य हो।।जजूँ.।।606।।

ॐ ह्रीं कांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'चिंतामणी' रत्न हो।
सभी इच्छती वस्तु देते सदा।।जजूँ.।।607।।

ॐ ह्रीं चिंतामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभीष्टद' अभीप्सित लहें भक्त ही।
मुझे दीजिये नाथ! मुक्ती मही।।जजूँ.।।608।।

ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

न जीते गये हो 'अजित' आप हो।
प्रभो! मोह जीतूँ यही शक्ति दो ।।जजूँ.।।609।।

ॐ ह्रीं अजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जितकामअरि' लोक में।
विषय काम क्रोधादि जीता तुम्हीं।।जजूँ.।।610।।

ॐ ह्रीं जितकामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमित' माप होता नहीं आपका।
अनंते गुणों की खनी आप हो।।जजूँ.।।611।।

ॐ ह्रीं अमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितशासना' धर्म अनुपम कहा।
मुझे आप सम नाथ कीजे अबे।।जजूँ.।।612।।

ॐ ह्रीं अमितशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्रोध' हो आप शांती सुधा।
महा शांति से क्रोध जीता सभी।।जजूँ.।।613।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितामित्र' कोई न शत्रु रहा।
प्रभो! आप ही सर्वप्रिय लोक में।।जजूँ.।।614।।

ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितक्लेश' सब क्लेश जीता तुम्हीं।
सभी क्लेश मेरे निवारो अबे।।जजूँ.।।615।।

ॐ ह्रीं जितक्लेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितांतक' प्रभो! मृत्यु को नाशियां।
समाधी मिले अंत में भी मुझे।।जजूँ.।।616।।

ॐ ह्रीं जितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जिनेन्द्र' हो विश्व में
तुम्हीं श्रेष्ठ हो कर्मजयि साधु में।।जजूँ.।।।617।।

ॐ ह्रीं जिनेंद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो आप ही 'परमआनंद' हो।
मुझे आत्म आनंद दीजे अबे।।जजूँ.।।618।।

ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'मुनींद्र' हो लोक में।
मुनीनाथ मानें नमें साधु भी ।।जजूँ.।।619।।

ॐ ह्रीं मुनींद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'दुंदुभीस्वन' ध्वनी आपकी।
सुगंभीर दुंदभि सदृश ही खिरे।।जजूँ.।।620।।

ॐ ह्रीं दुंदुभिस्वनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेन्द्रासुवंद्या' प्रभो आपही।
सभी इंद्र से वंद्य हो पूज्य हो।।जजूँ.।।621।।

ॐ ह्रीं महेन्द्रवंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'योगीन्द्र' हो विश्व में।
सभी ध्यानियों में तुम्हीं श्रेष्ठ हो।।जजूँ.।।622।।

ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'यतीन्द्रा' मुनी साधु में।
सदा श्रेष्ठ मानें गणाधीश में।।जजूँ.।।623।।

ॐ ह्रीं यतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'नाभिनन्दन' तुम्हीं मान्य हो।
नृपति नाभि के पुत्र विख्यात हो।।जजूँ.।।624।।

ॐ ह्रीं नाभिनंदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'नाभेय' हो पूज्य हो।
महानाभिराजा से उत्पन्न हो।।जजूँ.।।625।।

ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नाराच छंद–

जिनेन्द्र! आप 'नाभिजा' शतेंद्रवृन्द पूज्य हो।
त्रिलोक में महान् हो सभासरोज सूर्य हो।।
मुनीन्द्र आप नाममंत्र ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम मैं।।626।।

ॐ ह्रीं नाभिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अजात' हो जिनेश! जन्मशून्य आप सिद्ध हो।
मुझे प्रभो! भवाब्धि से निकालिये समर्थ हो।।मुनीन्द्र.।।627।।

ॐ ह्रीं अजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'सुव्रत' आप श्रेष्ठ संयमादि धारियो।
महाव्रतादि पूर्ण कीजिये मुझे सुतारियो।।मुनीन्द्र.।।628।।

ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'मनू' समस्त कर्मभूमि को सुथापिया।
कुलंकरों से जन्म लेय तीर्थ चक्र धारिया।।मुनीन्द्र.।।629।।

ॐ ह्रीं मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'उत्तमा' त्रिलोक में महान श्रेष्ठ हो।
मुनीशवृन्द पूज्य हो असंख्य जीव ज्येष्ठ हो।।मुनीन्द्र.।।630।।

ॐ ह्रीं उत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभेद्य' हो किन्हीं जनों से छेद भेद योग्य ना।
समस्त जन्म मृत्यु रोग नाश के सुखी घना।।मुनीन्द्र.।।631।।

ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनत्ययो' न नाश हो अनंत काल आपका।
मुझे सुखी सदा करो न अंत हो सुज्ञान का।।मुनीन्द्र.।।632।।

ॐ ह्रीं अनत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनाशवान्' भोजनादि से विहीन आप हैं।
महान तप किया प्रभो समस्त वीश्वास्य हैं।।मुनीन्द्र.।।633।।

ॐ ह्रीं अनाश्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अधीक' उत्कृष्ट आत्मा तुम्हीं कहे।
सुपाय वास्तवीक सौख्य को अधिक तुम्हीं रहें।।मुनीन्द्र.।।634।।

ॐ ह्रीं अधिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक के गुरु 'अधीगुरु' तुम्ही महान हो।
नमाय माथ को सदा सुआप को प्रणाम हो।।मुनीन्द्र.।।635।।

ॐ ह्रीं अधिगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' सुवाणि आपकी अतीव शोभना कही।
अनंत दुख से निकाल मोक्ष में धरे वही।।मुनीन्द्र.।।636।।

ॐ ह्रीं सुगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुमेधसा' महान् बुद्धि से सुकेवली भये।
प्रभो! अपूर्व ज्ञान दो अनंत गुण मिले भये।।मुनीन्द्र.।।637।।

ॐ ह्रीं सुमेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पराक्रमी समस्त कर्म नाशहेतु शूर हो।
अतेव 'विक्रमी' कहावते अपूर्व सूर्य हो।।मुनीन्द्र.।।638।।
ॐ ह्रीं विक्रमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक 'स्वामि' हो समस्त भव्य जीव पालते।
अनंत धाम में धरो भवाब्धि से निकालते।।मुनीन्द्र.।।639।।
ॐ ह्रीं स्वामिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुरादिधर्ष' कोई ना अनादरादि कर सके।
प्रभो! तुम्हीं समस्त भव्य बन्धु हो जगत् विषे।।मुनीन्द्र.।।640।।
ॐ ह्रीं दुराधर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'निरुत्सुको' तुम्हीं समस्त आश शून्य हो।
सुमुक्तिवल्लभा विषे हि औत्सुक्य पूर्ण हो।।मुनीन्द्र.।।641।।
ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विशिष्ट' आप ही विशेष रूप श्रेष्ठ विश्व में।
गणीन्द्र शीश नावते न फेर विश्व में भ्रमें।।मुनीन्द्र.।।642।।
ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'शिष्टभुक्' तुम्हीं सुसाधुलोक पालते।
अनिष्ट को निकाल सत्य ज्ञान आप धारते।।मुनीन्द्र.।।643।।
ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'शिष्ट' श्रेष्ठ आचरण तुम्हीं धरा यहाँ।
अशेष मोहशत्रु नाश के अनिष्ट को दहा।।मुनीन्द्र.।।644।।
ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! 'प्रत्ययो' प्रतीति योग्य आप एक ही।
समस्त ज्ञानरूप हो पुनीत पुण्यरुप ही।।मुनीन्द्र.।।645।।
ॐ ह्रीं प्रत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरम्य 'कामनो' प्रभो! त्रिलोक चित्तहारि हो।
न आपके समान रूप इंद्र नेत्रहारि हो।।मुनीन्द्र.।।646।।
ॐ ह्रीं कामनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनघ' जिनेश! पापहीन पुण्य के निधान हो।
अनंत जीवराशि आपको नमें प्रमाण हो।।मुनीन्द्र.।।647।।
ॐ ह्रीं अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'क्षेमि' सर्वक्षेम युक्त आप विश्व में।
समस्त रोग शोक दुःख मेट दो तुम्हें नमें।।मुनीन्द्र।।648।।
ॐ ह्रीं क्षेमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'क्षेमंकरो' त्रिलोक क्षेमकारि हो।
दरिद्र दुःख मेट सौख्य दो सदैव भारि हो।।मुनीन्द्र.।।649।।
ॐ ह्रीं क्षेमंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'अक्षयो' तुम्हीं सदैव क्षय विहीन हो।
मुझे अखंडधाम दो सदा स्वयं अधीन जो।।मुनीन्द्र.।।650।।
ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–श्री छंद–

'क्षेमधरमपति' क्षेम करो हो, सर्व अमंगल दोष हरो हो।
आप सुनाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके।।651।।
ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'क्षमी' सुसहिष्णु कहे हो।
श्रेष्ठ क्षमा उपदेश रहे हो।।आप.।।652।।
ॐ ह्रीं क्षमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जिनेश! 'अग्राह्य' कहाते।
अल्प सुज्ञानी जान न पाते।।आप.।।653।।
ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञान निग्राह्य' प्रभो! जग में हों।
ज्ञान स्वसंविद से ग्रह ही हो।।आप.।।654।।
ॐ ह्रीं ज्ञाननिग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानसुगम्य' सुध्यान करें जो, नाथ तभी तुम जान सके वो।।
आप सुनाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके।।655।।
ॐ ह्रीं ज्ञानगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'निरुत्तर' आप कहे हो।
सर्व जगत् उत्कृष्ट भये हो।आप.।।656।।
ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'सुकृती' तुम पुण्य धरन्ता।
पुण्य करें जन भक्ति करन्ता।।आप.।।657।।
ॐ ह्रीं सुकृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धातु' तुम्हीं सब शब्द जनंता।
चिन्मय धातु तनू भगवंता।।आप.।।658।।
ॐ ह्रीं धातवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'इज्यार्ह' कहाये।
इन्द्र मुनी गण पूज्य सुगायें।।आप.।।659।।
ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'सुनय' सहपेक्ष नयों से।
सत्य सुधर्म कहा अति नीके।।आप.।।660।।
ॐ ह्रीं सुनयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीसुनिवास' तुम्हीं प्रभु माने।
सम्पति धाम तुम्हें मुनि जाने।।आप.।।661।।
ॐ ह्रीं श्रीसुनिवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'चतुरानन' ब्रह्मा।
दीख रहे मुख चार सभा मा।।आप.।।662।।
ॐ ह्रीं चतुराननाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' तुमको सुर पेखें।
नाथ! समोसृति में तुम देखें।।आप.।।663।।
ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'चतुरास्य' तुम्हें भवि वंदे, जन्म जरा मृति तीनहिं खंडे।।
आप सुनाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके।।654।।
ॐ ह्रीं चतुरास्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'चतुर्मुख' चौमुख धर्ता।
द्वादश गण जनता मन हर्ता।आप.।।665।।
ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यात्मा' प्रभु सत्य स्वरूपी।
दिव्यध्वनी मय वाक्य निरूपी।।आप.।।666।।
ॐ ह्रीं सत्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यविज्ञान' प्रभो! तुम ही हो।
केवलज्ञान लिये चिन्मय हो।।आप.।।667।।
ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुवाक्' प्रभो सत भंगी।
वाक्यसुधा तुम गंगतरंगी।।आप.।।668।।
ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुशासन' नाथ तुम्हारा।
भव्य जनों हित एक सहारा।।आप.।।669।।
ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्याशिष्' शुभ आशिस् देते।
सर्व अमंगल भी हर लेते।।आप.।।670।।
ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यसुसन्धान' सुविभु नामा।
सत्य प्रतिज्ञ तुम्हें सुर माना।।आप.।।671।।
ॐ ह्रीं सत्यसंधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्य' प्रभो! तुम सत्पथदर्शी।
भव्य जनों हित वाक्य प्रदर्शी।।आप.।।672।।
ॐ ह्रीं सत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सत्यपरायण' नाथ! हितैषी, तीन जगत के हित उपदेशी।।
आप सुनाम जजूँ मन लाके, सर्व अमंगल दूर भगाके।।673।।

ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थेयान्' प्रभु नित स्थिर हो,
नाथ! मुझे स्थिर धाम दिला दो।।आप.।।674।।

ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थवीयान्' प्रभु आप बड़े हो।
सर्व गणी गण में भि बड़े हो।।आप.।।675।।

ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–तोटक छंद–

प्रभु 'नेदिययान' निज भक्तन के।
अति सन्निधि हो मन में बसते।।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।676।।

ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'दवीयान्' पाप हना।
निज आत्म सुधारस पीय घना।।तुम.।।677।।

ॐ ह्रीं दवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'दूरसुदर्शन' हो तुम ही।
अणुरूप नहीं मुनि के मन ही।।तुम.।।678।।

ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाथ! 'अणोरणियान्' कह्यो।
अति सूक्ष्म योगि सुगोचर हो।।तुम.।।679।।

ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनणू' तुम ज्ञान शरीर कहे।
अणु-पुद्गल नाहिं महान् कहें।।तुम.।।680।।

ॐ ह्रीं अनणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुरुराद्यगरीयस' के जग में।
गुरुओं मधि श्रेष्ठ गुरु प्रभु हैं।।तुम.।।681।।

ॐ ह्रीं गरीयसामाद्यगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदयोग' सदा तुम योग धरा।
सब योगि सदा तुम ध्यान धरा।।तुम.।।682।।

ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदभोग' सुपुष्प सदा बरसें।
सुर दुंदुभि आदि करें हरसें।।तुम.।।683।।

ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सद्तृप्त' सदाप्रभु तृप्त रहो।
क्षुध प्यास नहीं प्रभु तुष्ट रहो।।तुम.।।684।।

ॐ ह्रीं सदातृप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सदाशिव' हो जग में।
नहिं कर्म कलंक छुआ तुमने।।तुम.।।685।।

ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सदागति' ज्ञानमयी।
गति पंचम मोक्ष लिया तुमही।।तुम.।।686।।

ॐ ह्रीं सदागतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदसौख्य' सदा प्रभु सौख्य लह्यो।
सब सात असात सुखादि हर्यो।।तुम.।।687।।

ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सदाविद्य' हो जग में।
शुचि केवलज्ञान धरो निज में।।तुम.।।688।।

ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ! 'सदोदय' आप रहें।
नित उदितरूप रवि आप कहें।।तुम.।।689।।

ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वनि उत्तमनाथ! 'सुघोष' तुम्हीं।
इक योजन जीव सुनें सबहीं।।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।690।।

ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुमुख' सुंदर मुख हो।
विकसंत कमल मंदस्मित हो।।तुम.।।691।।

ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सौम्य' तुम्हीं शशि सुंदर हो।
तुम गावत गीत पुरंदर हो।।तुम.।।692।।

ॐ ह्रीं सौम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुखदं' सब जीव शुभंकर हो।
सुखदायि जिनेश्वर आपहि हो।।तुम.।।693।।

ॐ ह्रीं सुखदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुहितं' प्रभु सर्वहितंकर हो।
मुझको निज दास करो शिव हो।।तुम.।।694।।

ॐ ह्रीं सुहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुहृत्' सबके मितु हो।
मुझ चित्त बसों सब ही वश हों।।तुम.।।695।।

ॐ ह्रीं सुहृदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुगुप्त' सुरक्षित हो।
तुम भक्त सभी अरि रक्षित हों।।तुम.।।696।।

ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गुप्तिभृता' त्रयगुप्ति धरी।
तुम भक्ति किया मुझ धन्य घरी।।तुम.।।697।।

ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गोप्ता' रक्षक हो जग के।
मुझ पे अब नाथ कृपा कर दे।।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।698।।

ॐ ह्रीं गोप्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकअध्यक्ष' त्रिलोकपती।
मुझ व्याधि उपाधि हरो जलदी।।तुम.।।699।।

ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'दमेश्वर' हो नित ही।
सब इंद्रिय जीत अतीन्द्रिय ही।।तुम.।।700।।

ॐ ह्रीं दमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

प्रभु असंस्कृतादि से लेकर सौ नाम पढ़े जो भव्य सदा।
सब भूत पिशाच उपद्रव भी नश जांय सभी नशती विपदा।।
ज्वर कुष्ठ भंगदर कामल आदिक रोग सभी नशते क्षण में।
पूर्णार्घ चढ़ाकर वंदत हूँ प्रभु आप बसो नित मुझ मन में।।7।।

ॐ ह्रीं असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-दोहा-

तीन लोक में श्रेष्ठतम, जिनवर विभव प्रधान।
प्रातिहार्य की संपदा, तीर्थंकर पहिचान।।1।।

-पंचचामर-छंद-

अशोक वृक्ष रत्नकाय चित्रवर्ण का धरे।
हरितमणी की पत्तियाँ हवा लगे हि थरहरें।।
नवीन कोपलों समेत राग को स्वयं धरे।
तथापि भक्त के समस्त राग भाव को हरे।।2।।

सुपूर्णचन्द्र के समान तीन छत्र शोभते।
अनेक मोतियों समेत भव्य चित्त मोहते।।
जिनेन्द्र के त्रिलोक ऐश्वर्य को बतावते।
भवाग्नि ताप भव्य जीव का सभी नशावते।।3।।

अनेक रत्न के समूह युक्त सिंह पीठ है।
सफेद सुस्फटीकरत्न से बना प्रसिद्ध है।।
अपूर्व पद्म पे अधर जिनेंद्र देव राजते।
नमो नमो पदारविंद सर्व पाप नाशते।।4।।

प्रगाढ़ भक्ति से समस्त भव्य मोद से भरे।
स्वहस्त जोड़ आपके सभी तरफ रहें घिरे।।
सुधा झरी ध्वनी सुने स्वकर्म कालिमा हरें।
शनैः शनैः निजात्म ध्याय सिद्धि कन्यका वरें।।5।।

विषय कषाय शून्य नाथ पाद शर्ण आइये।
अनंत जन्म के समस्त कर्म को नशाइये।।
इतीव सूचना करंत देव दुंदुभी बजे।
सुभव्यजीव कर्ण से सुने प्रमोद को भजें।।6।।

अनेक देव भक्ति से सुपुष्प वृष्टि को करें।
समस्त पुष्प वृंत को अधो किये धरा गिरे।।
खिले खिले सुवर्ण पुष्प हर्ष को बढ़ावते।
सुदेख देख भक्त वृंद, पुण्य को बढ़ावते।।7।।

प्रभासुचक्र नाथ आप ज्योतिपुंज रूप हैं।
अनेक सूर्य कोटि की प्रभा हरे अनूप हैं।।

सुभव्य को सदैव सात भव दिखावता रहे।
जिनेंद्र का अपूर्व तेज नित्य पावता रहे।।8।।

सुकुंद पुष्प के समान श्वेत चामरों लिये।
सुयक्षदेव ढोरते अतुल्य भक्ति को लिये।।
चंवर सदैव ऊर्ध्व जाय भव्य सूचना करें।
जिनेंद्र भक्त नित्य एक ऊर्ध्व ही गती धरें।।9।।

सुआठ प्रतिहार्य औ अनंत विभव धारते।
स्वभक्त को भवाब्धि से तुरन्त आप तारते।।
सुनी सुकीर्ति आपकी इसीलिए खड़ा यहाँ।
बस एक आश पूरिये न आवना हो फिर यहाँ।।10।।

-दोहा-

स्वात्म सौख्य पीयूष रस, निर्झरणी वच आप।
'ज्ञानमती' सुख पूरिये, मिटे सकल संताप।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-12

-स्थापना –शंभु छंद-

त्रिभुवन के ज्ञाता मोक्षमार्ग के नेता तीर्थंकर होते।
ये कर्मभूमिभृत् के भेत्ता, सब राग द्वेष विरहित होते।।
सर्वज्ञ वीतरागी हित के उपदेशी प्रभु त्रिभुवन गुरू हैं।
आह्वानन कर मैं नित पूजूँ, ये सर्व हितंकर जिनवर हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक-नाराच छंद-

श्री जिनेंद्र की ध्वनी समान स्वच्छ नीर है।
तीन धार देत ही मिले भवाब्धि तीर है।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ के प्रतापसम सुगंध गंध सार है।
चर्ण में चढ़ावते मिले समस्त सार है।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत शालिनाथ कीर्ति के समान श्वेत है।
पूर्ण सौख्य हेतु पुंज शोभते विशेष है।।

आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद केतकी गुलाब गंध से भरे खिले।
आप पादपद्म अर्च ज्ञान कौमुदी खिले।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट मालपूप आदि स्वर्ण थाल में भरें।
स्वात्म सौख्य हेतु नाथ आप पास में धरें।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप लेय के जिनेश आरती करूँ।
मोहध्वांत को निवार, ज्ञानभारती वरूँ।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत चंदनादि धूप अग्निपात्र में जले।
अष्ट कर्म नष्ट हेतु आत्म स्वच्छता मिले।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम दाडिमादि थाल में भरायके।
मुक्ति अंगना वरूँ सु आप को चढ़ाय के।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य में मिलाय रत्न अर्घ्य को लिया।
भेद औ अभेद तीन रत्न हेतु अर्चिया।।
आप नाम मंत्र को जजूँ स्वभक्ति धार के।
आप ही स्व भक्त को भवाब्धि से उबारते।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

जिनपद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख हेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-सोरठा-

समवसरण प्रभु आप, त्रिभुवन की लक्ष्मी धरे।
पूजूँ तुम चरणाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चाल–पूजों पूजों श्री.....

'बृहद्वृहस्पति' प्रभु नाम है। सुरपति के गुरु सरनाम हैं।
पूजते ही मिले मोक्षधाम है। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।701।।

ॐ ह्रीं बृहद्वृहस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वाग्मी' तुम्हीं त्रिभुवन में। शुभवचन द्वादशों गण में।
पूजते पाप नश जाय क्षण में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।

आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।702।।

ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वाचस्पती' आप जग में। वचनों के स्वामी सहज में।
नाम लेते मिले शांति मन में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।703।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाम 'उदारधी' है। ज्ञानदान का मूल वही है।
पूजते आप सुख ही मही हैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।704।।

ॐ ह्रीं उदारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'मनीषी' कहाये। केवलज्ञान सद्बुद्धि पाये।
शत इंद्र सदा गुण गायें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।705।।

ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपको ही 'धिषण' साधु कहते। सर्वज्ञानैक बुद्धी धरते।
भक्त पूजत स्वपर ज्ञान लहते। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।706।।

ॐ ह्रीं धिषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धीमान्' त्रैलोक्य में हैं। ज्ञान पंचम धरें श्रेष्ठ ही हैं।
भक्त भी स्वात्म ज्ञानी बने हैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।707।।

ॐ ह्रीं धीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शेमुषीश' आप ही हैं। सर्व ही ज्ञान के नाथ ही हैं।
दीजिये अब मुझे सुमती है। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।708।।

ॐ ह्रीं शेमुषीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'गिरांपति' जग में। सर्वभाषामयी ध्वनि भवि में।
हो सत्य महाव्रत मुझमें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।709।।

ॐ ह्रीं गिरांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'नैकरूप' मुनिगण में। विष्णु ब्रह्म महेश्वर सच में।
भक्त नाशें करमरिपु क्षण में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।710।।

ॐ ह्रीं नैकरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'नयोत्तुंग' मानें। सब नयों में श्रेष्ठ बखानें।
मन अनेकांत सरधाने। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।711।।

ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' तुम्हीं त्रिभुवन में। गुण बहुते धरें प्रभु निज में।
गुणपूर्व भरूँ मैं निज में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।712।।

ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'नैकधर्मकृत्' तुम हो। बहुधर्म वस्तु के कह हो।
निजधर्म अनंत मुझे हों। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।713।।

ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अविज्ञेय' ही हो। जन जानन योग्य नहीं हो।
मुझ आत्म स्वभाव प्रगट हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।714।।

ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अप्रतर्क्यात्मा' । न तर्कादि गोचर महात्मा।
मुझे कीजे तुरत अंतरात्मा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।715।।

ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'कृतज्ञ' कहे हो। सभी कृत्य तुम्हीं जानते हो।
नाथ! मुझमें यही गुण प्रगट हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।716।।

ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतलक्षण'आप भुवन में। वस्तु लक्षण कहते हो ध्वनि में।
मैं धारूँ सुलक्षण हृदय में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।717।।

ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्ञानगर्भ' तुम ही हो। सब ज्ञेय सुज्ञान मही हो।
मेरा भी ज्ञान सही हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।718।।

ॐ ह्रीं 'ज्ञानगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'दयागर्भ' त्रिभुवन में। तुम दयासिंधु भविजन में।
मैं धरूँ दया निजपर में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।719।।

ॐ ह्रीं दयागर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'रत्नगर्भ' मुनि नाथा। रत्नवर्षे पंचदश मासा।
मैं नमूँ नमाकर माथा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।720।।

ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्रभास्वर' ही हो। त्रैलोक्य प्रकाशि रवी हो।
मुझ हृदय ज्ञान ज्योति हो।सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।721।।

ॐ ह्रीं प्रभास्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पद्मगर्भ' तुम सच में। रहे कमलाकार गरभ में।
लहूँ गर्भ प्रभो! तुम सम मैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।722।।

ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगद्गर्भ' तुम भासें। तुम ज्ञान में जग प्रतिभासे।
हो ज्ञान मेरा तम नाशे। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।723।।

ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हेमगर्भ' तुम ही हो। गर्भ बसत स्वर्णमय भू हो।
मुझ रोग शोक हर तुम हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें. ।।724।।

ॐ ह्रीं हेमगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुदर्शन' मानें। तुम दर्शन सुखकर जानें।
पूजत सब संकट हानें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें.।।725।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–प्रहरनकलिका छंद–

प्रभु तुम 'लक्ष्मीवन्' भुवि गुरु हो।
अन्तर बहि संपद धर जिन हो।।
तुम जजत सुनाम सकल सुख हो।
दुख दरिद्र विनाश, अतुलनिधि हो।।726।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिदशाध्यक्ष' सुर गणपति हो।
त्रिभुवन धर भानु अतुल रवि हो।।तुम.।।727।।

ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अतुल 'दृढ़ीयन्' इस जग में।
नहिं तुम सम हों दृढ़ मुनि जग में।।तुम.।।728।।

ॐ ह्रीं दृढीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब त्रिभुवन ईश तुमहि 'इन' हो।
मुझ सब अघ नाशत सुखप्रद हो।।तुम.।।729।।

ॐ ह्रीं इनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समरथयुत 'ईशित' तुमहि कहे।
मुझ अहित निवारण तुम पद हैं।।तुम.।।730।।

ॐ ह्रीं ईशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'मनोहर' त्रिभुवन में।
हरि हर परब्रह्म न तुम सम हैं।।तुम.।।731।।

ॐ ह्रीं मनोहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु सुभग 'मनोज्ञांग' अतिशय ही।
भवि जपत तुम्हें दुख विनशत ही।।तुम.।।732।।

ॐ ह्रीं मनोज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय धृति 'धीर' भविक गण में।
तुम जपत हि पीर टरत क्षण में।।तुम.।।733।।

ॐ ह्रीं धीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय 'गंभीर शासन' जग में।
शिवपद कर धर्म शरण जग में।।तुम.।।734।।

ॐ ह्रीं गंभीरशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभय 'धरमयूप' शुभ धरम हो।
सुर सुखप्रद नाथ! मुकति गृह हो।।तुम.।।735।।

ॐ ह्रीं धर्मयूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'दयायाग' सुखप्रद हो।
सब अशुभ हरो सुअभयप्रद हो।।तुम.।।736।।

ॐ ह्रीं दयायागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद 'धर्मनेमि' जिनवर हों।
इस जग मधि आप, धरम धुरि हो।।तुम.।।737।।

ॐ ह्रीं धर्मनेमये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'मुनीश्वर' मुनिपति हो।
सब गुण मणि भूषित सुखनिधि हो।।तुम.।।738।।

ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धरमचक्रायुध' यम अरि हो।
तुम दरसन से मुझ अघ क्षय हो।।तुम.।।739।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजगुणरत 'देव' सुरगप्रद हो।
मुझ गुणमणि देव परमगति हो।।तुम.।।740।।

ॐ ह्रीं देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद 'कर्महा' अघरिपु हन हो।
समरस सुखदा शिव तियपति हो।।तुम.।।741।।

ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमहि 'धर्मघोषण' शिव भरता।
अतिशय शिव के गुणमणि करता।।तुम.।।742।।

ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'अमोघवच' जगत में।
तुम विरथ न वाक्य कबहुँ सच में।।तुम.।।743।।

ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन मधि 'अमोघाज्ञ' तुमहि हो।
निष्फल नहिं आज्ञा सुर शिर धर्‌यो।। तुम.।।744।।

ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जिनवर 'निर्मल' शुचिकर हो।
मल विरहित कर्म रहित शिव हो।।तुम.।।745।।

ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सु 'अमोघशासन' तुम हो।
नहिं निष्फल शासन कबहुंक हो।। तुम.।।746।।

ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'सुरूप' असुर सुर में।
नहिं तुम सम रूप दिखत जग में।। तुम.।।747।।

ॐ ह्रीं सुरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुभग' महाप्रभु अतिशय हो।
बहुविध शुभ ऐश्वर गुण युत हो।। तुम.।।748।।

ॐ ह्रीं सुभगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुछ पर त्याग वनन विचरें।
जिनवर तुम 'त्यागी' सुरन उचरें।। तुम.।।749।।

ॐ ह्रीं त्यागिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर जानकर शिव भये।
अनुपम प्रभु 'ज्ञातृ' शिवपद भये।। तुम.।।750।।

ॐ ह्रीं ज्ञात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–इन्द्रवज्रा–

स्वामी 'समाहित' सुसमाधि ध्यानी, प्राणी समाधान लहें तुम्हीं से।
पूजूँ सदा नाम सुमंत्र वंदूँ, मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा।।751।।

ॐ ह्रीं समाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'सुस्थित' सुख से निवासा।
मुक्तीरमा आप स्वयं वरे हैं।।पूजूँ.।।752।।

ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरोग्य आत्मा प्रभु ' स्वास्थ्यभाक्' हो।
संसार व्याधी नहिं पूर्णस्वस्था।।पूजूँ.।।753।।

ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'स्वस्थ' स्वामी भवरोग नाहीं।
आत्मस्थ हो सर्वविकार शून्या।।पूजूँ.।।754।।

ॐ ह्रीं स्वस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नीरजस्को' नहिं कर्मधूली।
मेरे प्रभो! कर्म समूल नाशो।।पूजूँ.।।755।।

ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निरूद्धव' जग में कहाते।
संपूर्ण ही उत्सव इंद्र कीने।।पूजूँ.।।756।।

ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम्हीं कर्म 'अलेप' मानें।
मेरे सभी लेप हटाय दीजे।।पूजूँ.।।757।।

ॐ ह्रीं अलेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निष्कलंकात्मन्' इन्द्र पूजें।
मैं भी सदा शीश नमाय वंदूँ।।पूजूँ.।758।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वीतरागी' गतराग द्वेषा।
रागादि मेरे मन से हटा दो।।पूजूँ.।।759।।

ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'गतस्पृह' तुम ही यहाँ पे।
इच्छा निवारी जग के गुरु हो।।पूजूँ.।।760।।

ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सु 'वश्येन्द्रिय' आप ही हो।
पाँचों हि इन्द्री वश में किया था।।पूजूँ.।।761।।

ॐ ह्रीं वश्येन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानें 'विमुक्तात्मन्' आप ही हैं।
कर्मारि बन्धन तुम काट डाले।।पूजूँ.।।762।।

ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'निःसपत्ना' नहिं शत्रु कोई।
संपूर्ण प्राणी तुम मित्र मानें।।पूजूँ.।।763।।

ॐ ह्रीं निःसपत्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता स्व इन्द्रीय 'जितेन्द्रियो हो।
जीतूं स्व इन्द्री प्रभु शक्ति देवों।।पूजूँ.।।764।।

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण शांतीश 'प्रशांत' माने।
वंदूँ तुम्हें शांति मिले मुझे भी।।पूजूँ।।765।।

ॐ ह्रीं प्रशांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आनन्तधामर्षि' ऋषी गणों में।
तेजस्विता आप अनंत धारो।।पूजूँ.।।766।।

ॐ ह्रीं अनंतधामर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी यहाँ 'मंगल' आप ही हैं।
नाशो अमंगल भवि प्राणियों के।।पूजूँ.।।767।।

ॐ ह्रीं मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापारि नाशा 'मलहा' कहाये।
सम्पूर्ण धोये मल कर्म जैसे।।पूजूँ.।।768।।

ॐ ह्रीं मलघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अनघ' पाप निमूल नाशा।
कीजे सभी पाप विनाश मेरा।।पूजूँ.।।769।।

ॐ ह्रीं अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हूये 'अनीदृक्' नहिं आप जैसा।
इन्द्रादि वन्दे रुचि से तुम्हें ही।।पूजूँ.।।770।।

ॐ ह्रीं अनीदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'उपमाभुत' इन्द्र भी तो।
दें आप की तो उपमा तुम्हीं से।।पूजूँ.।।771।।

ॐ ह्रीं उपमाभूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव्य भाग्योदय हेतु स्वामी।
'दिष्टी' कहाते जग में इसी से ।।पूजूँ.।।772।।

ॐ ह्रीं दिष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'दैव' प्राणी शुभ भाग्य होते।
वंदूँ तुम्हें दैव समस्त नाशूँ।।पूजूँ.।।773।।

ॐ ह्रीं दैवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्यज्ञानी नभ में विहारी।
होते 'अगोचर' नहिं सर्व जानें।।पूजूँ.।।774।।

ॐ ह्रीं अगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपादि से शून्य 'अमूर्त' स्वामी।
आत्मा अमूर्तीक मिले मुझे भी।।पूजूँ.।।775।।

ॐ ह्रीं अमूर्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सुखमा छंद–

'मूर्तीमन्' की पूजा करिये, नाहीं मन में शंका धरिये।
नामावलि को पूजूँ नित ही, व्याधी तन से भागे झट ही।।776।।

ॐ ह्रीं मूर्तिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक' तुम्हें ही साधू कहते।
दूजा नहिं कोई भी तुमसे।।नामा.।।777।।

ॐ ह्रीं एकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानागुण की पूर्ती तुम में।
स्वामी तुम ही 'नैक' जगत में।।नामा.।।778।।

ॐ ह्रीं नैकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नानैकतत्त्वदृक्' तुम ही।
आत्मा तज ना देखे कुछ ही।।नामा.।।779।।

ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्यातमगम्या' हो प्रभु जी।
आत्म ग्रंथ से जाने मुनि जी।।नामा.।।780।।

ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माने 'अगम्यात्मा' तुम हो।
मिथ्यादृश ना जाने तुम को।।नामा.।।781।।

ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'योगविद्' की जो शरणे।
मुक्ती तिय को निश्चित परणे।।नामा.।।782।।

ॐ ह्रीं योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'योगिवंदित' हो जग में।
योगी जन ध्याते भी मन में।।नामा.।।783।।

ॐ ह्रीं योगिवंदिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' व्यापा त्रै जग को।
सो ही ज्ञान अपेक्षा समझो।।नामा.।।784।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' हो जग में।
तिष्ठो नित ना नाश स्वपन में।।नामा.।।785।।

ॐ ह्रीं सदाभाविने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'त्रिकालविषयार्थ' सुदृक् ही।
त्रैकालिक जाना सब कुछ ही ।।नामा.।।786।।

ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंकर' भी भव्यन सुख दो।
नाशो मुझ दोषादी दुख को।।नामा.।।787।।

ॐ ह्रीं शंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंवद' शं सौख्यंकर ही।
तीनों जग में वंदे मुनि भी।।नामा.।।788।।

ॐ ह्रीं शंवदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! चित्त अश्व का जीता।
'दांत' कहाये धर्म समेता।।नामा.।।789।।

ॐ ह्रीं दांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! दमी इंद्रियाँ दमते।
पूरी मन की इच्छा करते।।नामा.।।790।।

ॐ ह्रीं दमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' मानें तुम ही, ध्याते तुम को मृत्यू नश ही।।
नामावलि को पूजूँ नित ही, व्याधी तन से भागे झट ही।।791।।

ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अधिप' बखाने जग में।
इंद्रादिक पूजें आनंद में।।नामा.।।792।।

ॐ ह्रीं अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'परमानंद' तृपत हो।
आत्मा मुझ आनंद मगन हो।।नामा.।।793।।

ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नाथ! 'परात्मज्ञ' अतुल ही।
जाना पर को आत्मा निज भी।।नामा.।।794।।

ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'परात्पर' भी जग में।
श्रेष्ठों मधि श्रेष्ठाधिप सब में।।नामा.।।795।।

ॐ ह्रीं परात्पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगद्वल्लभ' तुम हो।
तीनों जग में मनभावन हो।।नामा.।।796।।

ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम 'अभ्यर्च्य' सुरन से।
सौ इंद्रन से साधू गण से।।नामा.।।797।।

ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगन्मंगलोदय' हो।
तीनों जग में मंगल कर हो।।नामा.।।798।।

ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' तुम हो।
सौ इंद्रन से पूज्य चरण हो।।नामा.।।799।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रीलोकाग्रशिखामणि' जिन हो।
लोक शिखर के चूड़ामणि हो।।नामा.।।800।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-शंभु छंद-

वृहद्वृहस्पति आदि नाम सौ, भक्ति भाव से नित मैं पूजूँ।
सर्व अमंगल दोष नशाकर, आधि व्याधि संकट से छूटूँ।।
भूत प्रेत डाकिनि शाकिनि भी, तुम भक्तों से दूर भगे हैं।
नित नव मंगल संपति संतति यश भाग्योदय श्रेष्ठ जगे हैं।।8।।

ॐ ह्रीं वृहद्वृहस्पत्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य-**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

चाल-हे दीनबन्धु.....

हे नाथ! आप ही तो सकल इंद्र वंद्य हैं।
इस भू पे अतः आप ही तो धन्य धन्य हैं।।
सम्पूर्ण अतिशयों के आप ही तो सद्म हैं।
इस हेतु सभी पूजते तुम पाद पद्म हैं।।1।।

प्रभु आपके माहात्म्य से असमय में बगीचे।
सब ऋतु के फूल फल से वे फूले फले दिखें।।
रज आदि दूर करती सुखद वायु चले है।
सब जीव वैर छोड़ के आपस में मिले हैं।।2।।

दर्पण के सदृश भूमि स्वच्छ रत्नमय हुई।
गंधोद की वर्षा भी मेघ देवकृत हुई।।
शाल्यादि खेत भी फलों के भार से झुके।
सब जीव भी आनन्द से तो झूम ही उठे।।3।।

शीतल पवन वायुकुमार देव चलाते।
सरवर कुँआ भी स्वच्छ जल से पूर्ण हो जाते।।
उल्कादि धूम रहित गगन स्वच्छ सही है।
जब जीवों को रोगादि की बाधायें नहीं हैं।।4।।

सर्वाण्हयक्ष शिर पे धर्मचक्र को धरें।
चारों तरफ के चक्र दिव्य रश्मियाँ धरें।।
शुभ श्रीविहार के समय तुम पाद के तले।
सुरकृत सुगंधि युक्त भी सुवरण कमल खिलें।।5।।

ये देव रचित तेरहों अतिशय महान हैं।
जो आपके अनंत गुणों में प्रधान हैं।।
कैवल्यज्ञान उदित हो जिस वृक्ष के नीचे।
वो ही अशोक वृक्ष कहाता है तभी से।।6।।

जो आपका आश्रय सदा लेते हैं भुवन में।
उनके कहो क्यों शोक रहेगा कभी मन में।।
इस हेतु से तुम पाद का आश्रय लिया मैंने।
निज 'ज्ञानमती' हेतु ही विनती किया मैंने।।7।।

-दोहा-

भक्तों के वत्सल तुम्हीं, करुणासिंधु जिनेश।
करो पूर्ण यह याचना, फेर न माँगू लेश।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य बृहद्वृहस्पत्यादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-13

स्थापना –गीता छंद

जो भव्य मुनिगण वंद्य ऋषभेश्वर चरण को वंदते।
वे निज अनंतानंत जन्मों के अघों को खंडते।।
इस हेतु से हम भक्ति श्रद्धा भाव से प्रभु को जजें।
आह्वान विधि से पूज कर निज आत्म समरस को चखें।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –नरेन्द्र छंद

नंदावापी का निर्मल जल, कंचन भृंग भराऊँ।
श्री जिनवर के चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल तंदुल ले, तुम ढिग पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निज आतमपद पाऊँ।।

श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण की लता भूमि से, सुरभित पुष्प चुनाऊँ।
जिनवर चरणकमल में अर्पूं, निज गुण यश विकसाऊँ।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुख व्याधि नशाऊँ।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञान ज्योति उद्योतन।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरु तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म को दग्ध करूँ मैं, अग्नी संग जलाऊँ।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब आम अंगूर सरस फल लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊँ।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ्य बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, तीनरत्न निज पाऊँ।।
श्री जिनवर के नाममंत्र को, जिनप्रतिमा को पूजूँ।
निज समरस सुखसुधा पान कर, चारों गति से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

पद्म सरोवर नीर से, जिनवर पद अरविंद।
त्रयधारा विधि से करूँ, हो सुख शांति अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-सोरठा-

ज्ञान चेतनारूप, परमेष्ठी चिद्रूप हैं।
पुष्पांजलि से पूज, सकल दुःख दारिद हरूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–अनुष्टुप् छंद–

स्वामी 'त्रिकालदर्शी' हो, सभी पदार्थ देखते।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।801।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'लोकेश' माने हो, तीन लोक प्रभु कहे।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।802।।

ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकधाता' तुम्हीं माने, तीनों जगत् पोषते।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।803।।

ॐ ह्रीं लोकधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'दृढव्रत' व्रतों में, स्थैर्य धारते।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।804।।

ॐ ह्रीं दृढव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकातिग' स्वामिन्! सभी जग में श्रेष्ठ हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।805।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा के योग्य हो स्वामिन्! 'पूज्य' माने सभी सदा।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।806।।

ॐ ह्रीं पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभीष्ट में पहुँचाते, 'सर्वलोकैकसारथी'।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।807।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राचीन सबमें ही हो, माने 'पुराण' आपको।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।808।।

ॐ ह्रीं पुराणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों को श्रेष्ठ आत्मा के, पाया 'पुरूष' आप हैं।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।809।।

ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व प्रथम होने से 'पूर्व' माने तुम्हीं प्रभो!।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।810।।

ॐ ह्रीं पूर्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्वादि विस्तारे, 'कृतपूर्वांग-विस्तरः'।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।811।।

ॐ ह्रीं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों में मुख्य होने से, 'आदिदेव' तुम्हीं कहे।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।812।।

ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणाद्य' प्रभो! माने, प्राचीनों में सुआदि हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।813।।

ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुदेव' तुम्हीं माने, श्रेष्ठ देव महान हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।814।।

ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के देव होने से, तुम्हीं हो 'अधिदेवता'।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।815।।

ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमुख्य' युगादी के, माने प्रधान आप हैं।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।816।।

ॐ ह्रीं युगमुख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगज्येष्ठ' कहे स्वामी, युग में सर्व श्रेष्ठ हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।817।।

ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगादी में उपदेशा, 'युगादिस्थितिदेशकः'।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।818।।

ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणवर्ण' कांती से, सुवर्ण सम हो तुम्हीं।।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।819।।

ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कल्याण' भव्यों के, हितकर्ता प्रसिद्ध हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।820।।

ॐ ह्रीं कल्याणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्य' नीरोग होने से, तत्पर मुक्ति हेतु हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।821।।

ॐ ह्रीं कल्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण हितकारी हैं, अतः 'कल्याणलक्षणः'।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।822।।

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणप्रकृती' स्वामी, हो कल्याण स्वभाव ही।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।823।।

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णवत् प्रभु दीप्तात्मा, 'दीप्रकल्याणआतमा'।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।824।।

ॐ ह्रीं दीप्रकल्याणात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विकल्मष' तुम्हीं स्वामी, कालिमाकर्म शून्य हो।
नाम मंत्र जजूँ प्रीत्या, आत्म सौख्य सुधा मिले।।825।।

ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चंपकमाला छंद–

कर्म कलंकादी निरमुक्ता, हो 'विकलंका' कर्म हरो मे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।826।।

ॐ ह्रीं विकलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह कला से हीन रहे हो ,नाथ! 'कलातीते' जग में हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।827।।

ॐ ह्रीं कलातीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'कलिलघ्न' तुम्हीं अघ हीना, पाप हमारे क्षालन कीजे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।828।।

ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कलाधर' सर्व कला से, पूर्ण तुम्हीं हो सर्व गुणों से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।829।।

ॐ ह्रीं कलाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवदेव' हो तीन जगत् में, नाथ! सुदेवों के अधिदेवा।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।830।।

ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगन्नाथा' जगस्वामी, जन्म मरण के दुःख हरोगे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।831।।

ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगद्बंधू' भवि बंधू, भव्यजनों के पूर्ण हितैषी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।832।।

ॐ ह्रीं जगद्बंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगद्विभु' तीन भुवन में, पालक हो सामर्थ्य समेता।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।833।।

ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्' हितैषी तीन जगत में, सर्वजनों को सौख्य दिया है।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।834।।

ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप कहे 'लोकज्ञ' जगत् को, जान लिया है पूर्ण तरह से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।835।।

ॐ ह्रीं लोकज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वग' तीनों लोक सभी में, व्याप्त हुये ये ज्ञान किरण से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।836।।

ॐ ह्रीं सर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जगदग्रज' ज्येष्ठ जगत में, सर्व दुखों को दूर करोगे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।837।।

ॐ ह्रीं जगदग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'चराचरगुरु' कहे हो, स्थावर त्रस के पालक भी हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।838।।

ॐ ह्रीं चराचरगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गोप्य' मुनी रक्खें मन में ही, नाथ! करो रक्षा अब मेरी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।839।।
ॐ ह्रीं गोप्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'गूढ़ात्मा' तुम आत्मा, गोचर इन्द्री के नहिं होती।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।840।।
ॐ ह्रीं गूढ़ात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़ सुगोचर' गूढ़ तुम्हीं हो, योगिजनों के गम्य तुम्हीं हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।841।।
ॐ ह्रीं गूढ़गोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'सद्योजात' कहे हो, तत्क्षण जन्में रूप रहे हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।842।।
ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रकाशात्मा' मुनि मानें, ज्ञान सुज्योती रूप बखानें।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।843।।
ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हो, अग्निप्रभा सी कांति धरे हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।844।।
ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत् 'आदित्यवरण' स्वामी, हो प्रभु तेजस्वी जग नामी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।845।।
ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण छवी 'भर्माभ' कहाये, देह दिपे भास्वत् शरमाये।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।846।।
ॐ ह्रीं भर्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रभ' शोभे कांति तुम्हारी, सूर्य शशी क्रोड़ों लजते हैं।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।847।।
ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'कनकप्रभ' स्वर्ण प्रभा सी, कांति दिखे उत्तुंग तनु हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।848।।
ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'सुवर्णवर्ण' सुर गायें, देह सुवर्णी दीप्ति धराये।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।849।।
ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो! 'रुक्माभ' कहाये, स्वर्ण छवी सी दीप्ति करो मे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।850।।
ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–मंदाक्रांता छंद–

'सूर्यकोटिसमप्रभ' विभो! क्रोड़ सूरज लजाते।
दीप्ती ऐसी तुम तनु विषे आत्मदीप्ती अनोखी।।
पूजूँ नामावलि तुम प्रभो! सर्वव्याधी निवारो।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो मोहशत्रू भगाके।।851।।
ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप्ते सोने सदृश 'तपनीयनिभ' दीप्ती धरे हो।
कर्मों का भी मल सब हटा स्वात्म निर्मल किया है।।पूजूँ.।।852।।
ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँचीदेही धर कर विभो! 'तुंग' माने गये हो।
ऊँचे भावों सहित तुमही मोक्ष प्रासाद पाया।।पूजूँ.।।853।।
ॐ ह्रीं तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभो' प्रभु तनु धरा ऊगते सूर्य कांती।
मेरी आत्मा सुवरण करो कर्म पंकील[1]धो दो।।पूजूँ.।।854।।
ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा शुद्ध्या 'अनलप्रभ' हो अग्नि कांती सदृश हो।
मेरी आत्मा निरमल करो श्रेष्ठ तप से तपाके।।पूजूँ.।।855।।
ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. कीचड़।

संध्यालाली सदृश छवि है नाथ!'संध्याभ्रबभू'।
भक्ती लाली शुभ तम रहे नाथ मेरे हृदै में।।पूजूँ.।।856।।

ॐ ह्रीं संध्याभ्रबभ्रवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा निर्मल सुवरण तनू आप 'हेमाभ' मानें।
रागादी को हृदयगृह से दूर कीजे अभी ही।।पूजूँ.।।857।।

ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तचामीकरप्रभ' तपे स्वर्ण जैसी प्रभा है।
मेरी आत्मा अतिशय धुला कर्म से मुक्त होवे।।पूजूँ.।।858।।

ॐ ह्रीं तप्तचामीकरप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्मा हो जिनवृषभ! 'निष्टप्तकनकच्छाय' हो।
कांती धारी अद्भुत महादीप्त त्रैलोक्य स्वामी।।पूजूँ.।।859।।

ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देदीप्यात्मा जिनवर 'कनत्कांचनसन्निभ' देही।
कैवल्यात्मा चमचम करे नाथ! कीजे अबे ही।।पूजूँ.।।860।।

ॐ ह्रीं कनत्कांचनसन्निभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तीकांतावर प्रभु 'हिरण्यवर्ण' इंद्रादि गायें।
दीजे शक्ती निजसम खिले चित्तपंकज सुहाये।।पूजूँ.।।861।।

ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने जैसी छवि तुमहिं 'स्वर्णाभ' साधु जनों में।
व्याधी हीना मुझ तनु बने रत्नत्रै साध लूँ मैं।।पूजूँ.।।862।।

ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को भी करत शुचि भो! 'शातकुंभनिभप्रभ' हो।
मेरी आत्मा स्वपर विद हो ज्ञानज्योति जला दो।।पूजूँ.।।863।।

ॐ ह्रीं शातकुंभनिभप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सोने सदृश तनु है आप 'द्युम्नाभ' स्वामी।
दीजे सिद्धी निजसुख मिले ना पुनर्भव कभी हो।।पूजूँ.।।864।।

ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में जैसे विकृति रहिते 'जातरूपाभ' स्वामी।
रागादी मुझ विकृति हरिये दीजिये मुक्ति लक्ष्मी।।पूजूँ.।।865।।

ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तजाम्बुनदद्युति' प्रभो! श्रेष्ठ स्वर्णिम शरीरी।
दीजे शक्ती द्विदश तप से आत्म शुद्धी करूँ मैं।।पूजूँ.।।866।।

ॐ ह्रीं तप्तजाम्बूनदद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धोये उज्ज्वल कनक से हो पाप क्षालो हमारे।
दीपे आत्मा जिनवर 'सुधौतकलधौतश्री' हो।।पूजूँ.।।867।।

ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपे देही जिनरवि 'प्रदीप्त' आप लोकाग्र राजें।
जो भी पूजें सकल दुख भी नाशते सौख्य देते।।पूजूँ.।।868।।

ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी हो 'हाटकद्युति' तनू स्वर्ण दीप्ती लजाते।
मैं भी ध्याऊँ हृदय धरके आपको शीश नाऊँ।।पूजूँ.।।869।।

ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सौ भी सुरपति जजें आप 'शिष्टेष्ट' मानें।
प्रीती से शिष्ट जन सब तुम्हें इष्ट भगवान् मानें।।पूजूँ.।।870।।

ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टी कर्ता त्रिभुवन जनों आप 'पुष्टिद' कहे हो।
स्वामिन्! पोषो दुखित मुझको पास आया इसी से।।पूजूँ.।।871।।

ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक तनुधर प्रभो! 'पुष्ट' हो सौख्यभृत् हो।
मेरी पुष्टी तुरत करिये रोग शोकादि हरके।।पूजूँ.।।872।।

ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी युगपत् तुम्हीं लोक को जानते हो।
कर्मों का मुझ तुरत क्षय हो 'स्पष्ट' स्वामी तुम्हीं से।।पूजूँ.।।873।।

ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी प्रभु की विशद अतिशै 'स्पष्टाक्षर' इसी से।
मेरी वाणी हितकर करो दिव्यवाणी बने भी।।पूजूँ.।।874।।
ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामर्थ्यात्मा प्रभु 'क्षम' तुम्हीं मोह शत्रू हना है।
शत्रू मृत्यू अति दुख दिया नाथ! नाशो इसे ही।।पूजूँ.।।875।।
ॐ ह्रीं क्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–आर्या छंद–

कर्म शत्रु को मारा, इसीलिये 'शत्रुघ्न' सुरेंद्र कहें।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।876।।
ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अप्रतिघ' तुम्हीं हो, शत्रु न कोई रहा यहाँ जग में।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।877।।
ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमोघ' हो नित ही, स्वयं सफल हो किया सफल सबको।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।878।।
ॐ ह्रीं अमोघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रशास्ता' तुम हो, सर्वोत्तम उपदेश दिया तुमने।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।879।।
ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'शासिता' तुमही, रक्षा करते सदैव भक्तों की।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।880।।
ॐ ह्रीं शासित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वभू' स्वयं जन्मे हो, मात पिता बस निमित बने सच में।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।881।।
ॐ ह्रीं स्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिनिष्ठ' प्रभु तुम हो, पूर्ण शांति को पाया पाप हना।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।882।।
ॐ ह्रीं शांतिनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'मुनिज्येष्ठ' कहाते, गणधर मुनि में बड़े तुम्हीं माने।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।883।।
ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शिवताति' जगत में, सब कल्याण परंपरा देते।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।884।।
ॐ ह्रीं शिवतातये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवप्रद' नाथ तुम्हीं हो, भविजन को सब सुख शिवसुख भी देते।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।885।।
ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिद' नाथ सभी को, शांति दिया है सुख भरपूर दिया।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।886।।
ॐ ह्रीं शांतिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'शांतिकृत्' जग में, शांति करो मुझको भी शांति करो।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।887।।
ॐ ह्रीं शांतिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'शांति' हो जग में, त्रिभुवन में भी शांति करो भगवन् ।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।888।।
ॐ ह्रीं शांतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कांतिमान्' प्रभु मानें, सर्व कांतियुत सभामध्य तेजस्वी।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।889।।
ॐ ह्रीं कांतिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामितप्रद' भगवंता, भक्तों के मनरथ पूर्ण किया है।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।890।।
ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयोनिधि' जिनराजा, भविजन के हित तुम सब सुख के दाता।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।891।।
ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिष्ठान' तुमही हो, त्रिभुवन में दयाधर्म आधारा।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।892।।
ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतिष्ठ' हो भगवन्! परकृत बिना प्रतिष्ठा के पूजित हो।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।893।।
ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रतिष्ठित' जग में, नर सुरगण में महायशस्वी हो।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।894।।
ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुस्थिर' त्रिभुवन में, अतिशय थिरता मिली तुम्हें निज में।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।895।।
ॐ ह्रीं सुस्थिराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! तुम्हीं 'स्थावर' हो, समवसरण में गमन रहित राजें।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।896।।
ॐ ह्रीं स्थावराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्थाणु' कहाये, अचल रूपधर यहीं विराजे हो।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।897।।
ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथीयान्' प्रभु मानें, अतिशय विस्तृत कहें सुरासुर भी।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।898।।
ॐ ह्रीं प्रथीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'प्रथित' तुम्हीं हो, त्रिभुवन में भी प्रसिद्ध अतिशायी।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।899।।
ॐ ह्रीं प्रथिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथु' ज्ञानादि गुणों से, गणि मुनिगण में महान हो प्रभुजी।
नाममंत्र मैं पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।900।।
ॐ ह्रीं पृथवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

प्रभु त्रिकालदर्शी से लेकर नाम शतक अतिशायी हैं।
गणधर मुनिगण चक्रवर्ति भी नाम जपें सुखदायी हैं।।
सुरपति खगपति पूजन करते वदंन कर शिर नाते हैं।
हम भी पूजें अर्घ चढ़ाकर निज समकित गुण पाते हैं।।9।।
ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-सोरठा-

नित्य निरंजनदेव, अखिल अमंगल को हरें।
नित्य करूँ मैं सेव, मेरे कर्मांजन हरें।।1।।

-सखी छंद-

जय जय जिन देव हमारे, जय जय भविजन बहु तारें।
जय मुक्तिरमापति देवा, शतइंद्र करें तुम सेवा।।2।।
मुनिवृंद तुम्हें चित धारें, भववृंद सुयश विस्तारें।
सुरनर किन्नर गुण गावें, किन्नरियाँ बीन बजावें।।3।।
भक्तीवश नृत्य करे हैं, गुण गाकर पाप हरे हैं।
विद्याधर गण बहु आवें, दर्शन कर पुण्य कमावें।।4।।
भव भव के त्रास मिटावें, यम का अस्तित्त्व हटावें।
जो जिनगुण में मन पागे, तिन देख मोह रिपुभागे।।5।।

जो प्रभु की पूज रचावें, इस जग में पूजा पावें।
जो प्रभु का ध्यान धरे हैं, उनका सब ध्यान करे हैं।।6।।

जो करते भक्ति तुम्हारी, वे भव भव में सुखियारी।
इस हेतु प्रभो तुम पासे, मन के उद्गार निकासे।।7।।

जब तक मुझ मुक्ति न होवे, तब तक सम्यक्त्व न खोवे।
तब तक जिनगुण उच्चारूँ, तब तक मैं संयम धारूँ।।8।।

तब तक हो श्रेष्ठ समाधी, नाशे जन्मादिक व्याधि।
तब तक रत्नत्रय पाऊँ, तब तक निज ध्यान लगाऊँ।।9।।

तब तक तुम ही मुझ स्वामी, भव भव में हो निष्कामी।
ये भाव हमारे पूरो, मुझ मोह शत्रु को चूरो।।10।।

-घत्ता-

जय जय चिन्मूरति, गुणमति पूरित, जय जिनवर वृषचक्रपती।
जय 'ज्ञानमती' धर, शिवलक्ष्मीवर, भविजन पावें सिद्धगती।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-14

स्थापना –शंभु छंद

पाँच भरत पण ऐरावत में चौथा काल जभी हो।
चौबीस चौबिस तीर्थंकर प्रभु जन्म धरें सुकृती हो।।
इक सौ साठ विदेह क्षेत्र में सतत तीर्थंकर होते।
इन सबका आह्वानन कर हम, भव भव कल्मष धोते।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –चामरछंद

सिंधुनीर स्वच्छ स्वर्ण भृंग में भराइये।
श्री जिनेन्द्रदेव पादपद्म में चढाइये।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध लेय नाथ पाद में चढ़ाइये।
मोहताप शांतिहेतु भक्ति को बढ़ाइये।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्ररश्मि के समान धौत शालि थाल में।
नाथ अग्र पुंज देय सर्व सौख्य हाल में।।

देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात चंपकादिपुष्प लेय पूजिये।
काममल्ल चूरके निजात्म तृप्त हूजिये।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप मोदकादि व्यंजनादि लाइये।
नाथ पाद पूज भूख व्याधि को नशाइये।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में कपूर ज्वाल आरती करूँ।
मोहध्वांत नाश स्वात्मज्ञान भारती वरूँ।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में सुगंध धूप खेवते सदा।
कर्मपुंज को जलाय पाऊँ स्वात्म संपदा।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

द्राक्ष आम औ बदाम श्रीफलादि लाइये।
स्वात्म सौख्य पान हेतु आपको चढ़ाइये।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अष्ट द्रव्य लाइये।
अर्घ्य को चढ़ाय के अखंड सौख्य पाइये।।
देव देव नाममंत्र की सदा समर्चना।
जो करेंगे सो यहाँ कभी धरेंगे जन्म ना।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सोरठा-

जिनवर पद अरविंद, जल से त्रयधारा करूँ।
पाऊँ निज गुणकंद, परम शांति अद्भुत सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
मिटे सर्व दुःख शोक, स्वात्म सुधारस पान हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (100 अर्घ्य)

-सोरठा-

सिद्धिवधू भरतार, निज में ही रमते सदा।
भुक्ति मुक्ति करतार, पुष्पांजलि से मैं जजूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शालिनी छंद–

'दिग्वासा' हो वस्त्र दिश् ही तुम्हारे।
ऐसी मुद्रा हो कभी नाथ मेरी।।
श्रद्धा से मैं पूजहूँ नाम मंत्रं।
दीजे शक्ती आत्म संपत्ति पाऊँ।।901।।

ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सुन्दर 'वातरशना' तुम्हीं हो।
धारी वायू करधनी है कटी में।।श्रद्धा.।।902।।

ॐ ह्रीं वातरशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निर्ग्रंथेश' हो बाह्य अंतः।
चौबीसों ही ग्रन्थ में मुक्त मानें।।श्रद्धा.।।903।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रंथेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी भूमी पे 'दिगम्बर' तुम्हीं हो।
धारा अम्बर दिक्मयी शील पूरे।।श्रद्धा.।।904।।

ॐ ह्रीं दिगम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्किंचन' हो नाथ सर्वस्व त्यागा।
आत्मांनतें सद्गुणों से भरी है।।श्रद्धा.।।905।।

ॐ ह्रीं निष्किंचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा त्यागी हो 'निराशंस' स्वामी।
आशा मेरी पूरिये सिद्धि पाऊँ।।श्रद्धा.।।906।।

ॐ ह्रीं निराशंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी ज्ञान ही नेत्र पाया।
स्वामी मेरे 'ज्ञानचक्षू' तुम्हीं हो।।श्रद्धा.।।907।।

ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशा मोहारी 'अमोमुह' कहाये।
स्वामी मेरे मोह रागादि नाशो।।श्रद्धा.।।908।।

ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोराशी' तेज के पुंज स्वामी।
चंदा से भी सौम्य शीतल भये हो।।श्रद्धा.।।909।।

ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंते ओजस्वी 'अनंतौज' स्वामी।
मेरी शक्ति को बढ़ा दो सभी ही।।श्रद्धा.।।910।।

ॐ ह्रीं अनंतौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'ज्ञानाब्धी' ज्ञान के सिंधु स्वामी।
स्वामी मेरे ज्ञान को पूर्ण कीजे।।श्रद्धा.।।911।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलों से भृत 'शीलसागर' तुम्हीं हो।
अठरा साहस्र शील को पूरिये भी।।श्रद्धा.।।912।।

ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तेजोमय' हो नाथ! तेजः स्वरूपी।
आत्मा तेजोरूप मेरी करो भी।।श्रद्धा.।।913।।

ॐ ह्रीं तेजोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमितज्योती' आप ज्योति अनंती।
मेरी आत्मा ज्योति से पूर दीजे।।श्रद्धा.।।914।।

ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ती' ज्योतिमय देह धारा।
मेरे घट में ज्ञान ज्योति भरीजे।।श्रद्धा.।।915।।

ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहारी हन के 'तमोपह' तुम्हीं हो।
मेरे चित्त का सर्व अज्ञान नाशो।।श्रद्धा.।।916।।

ॐ ह्रीं तमोपहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल 'जगच्चूड़ामणी' आप ही हो।
तीनों लोकों के शिखारत्न स्वामी।।श्रद्धा.।।917।।

ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देदीप्यात्मा 'दीप्त' स्वामी तुम्हीं हो।
मेरी आत्मा दीप्त कीजे गुणों से।।श्रद्धा.।।918।।

ॐ ह्रीं दीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंवान्' स्वामी सौख्य शांती तुम्हीं में।
मेरी आत्मा सौख्य से पूर्ण कीजे।।श्रद्धा.।।919।।

ॐ ह्रीं शंवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी मेरे 'विघ्नवीनायका' हो।
मेरे विघ्नों को हरो नाथ! जल्दी।।श्रद्धा.।।920।।

ॐ ह्रीं विघ्नविनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में 'कलिघ्ना' तुम्हीं हो।
मेरे कलिमल नाश के सौख्य दीजे।।श्रद्धा.।।921।।

ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे स्वामी 'कर्मशत्रुघ्न' ही हो।
दुष्कर्मों को नष्ट कीजे प्रभू जी।।श्रद्धा.।।922।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'लोकालोक प्रकाशक' जिनेशा।
देखा तीनों लोक अलोक भी तो।।श्रद्धा.।।923।।

ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जागे आत्मा में 'अनिद्रालु' स्वामी।
मेरी आत्म मोह निद्रा तजे भी।।श्रद्धा.।।924।।

ॐ ह्रीं अनिद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस नाशा हो 'अतन्द्रालु' स्वामी।
मेरी आत्मा ज्ञान से स्वस्थ होवे।श्रद्धा.।।925।।

ॐ ह्रीं अतन्द्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–लोल तरंग छंद–

जाग्रत संतत 'जागरूक' हो।
मोह कि नींद हरो तुम ध्याऊँ।।
नाम सुमंत्र जपूँ मन लावे।
आत्म सुधारस पान करूँ मैं।।926।।

ॐ ह्रीं जागरूकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रमामय' ज्ञानमयी हो।
ज्ञान गुणाधिक हो मुझ आत्मा।।नाम.।।927।।

ॐ ह्रीं प्रमामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! 'लक्ष्मीपति' जग में हो।
नंत चतुष्टय श्रीपति जिन हो।।नाम.।।928।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगज्ज्योती' कहलाये।
ज्योति भरो तम को हर लीजे।।नाम.।।929।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म दयापति 'धर्मराज' हो।
नाथ हृदे मुझ धर्म विराजे।।नाम.।।930।।

ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रजाहित' सर्व प्रजा की।
पालन रीति नृपाल सिखायी।।नाम.।।931।।

ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मुमुक्षु' कहें मुनि ज्ञानी।
इच्छुक कर्म अरी सब छूटें।।नाम.।।932।।

ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बंधमोक्षज्ञा' हो तुम स्वामी।
जानत बंध रु मोक्ष विधी को।।नाम.।।933।।

ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जिताक्ष' जिता पण इंद्री।
जीत सकें विषयों को हम भी।।नाम.।।934।।

ॐ ह्रीं जिताक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जितमन्मथ' काम विजेता।
काम अरी मुझ मार भगावो।।नाम.।।935।।

ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रशांतरसशैलुष' हो।
किया प्रदर्शन शांतिरसों का।।नाम.।।936।।

ॐ ह्रीं प्रशांतरसशैलूषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव्यनपेटकनायक' मानें।
भव्य समूह कहें तुम स्वामी।।नाम.।।937।।

ॐ ह्रीं भव्यपेटकनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म प्रधान कहा युग आदी।
'मूलसुकर्ता' आप बखाने।।नाम.।।938।।

ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पदारथ पूर्ण प्रकाशा।
नाथ! 'अखिलज्योती' सुर गाते।।नाम.।।939।।

ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'मलघ्न' सभी मल हाने।
सर्व अघों मल नाश करो मे।।नाम.।।940।।

ॐ ह्रीं मलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मूलसुकारण' मुक्ति सुपथ के।
नाथ! मुझे शिवमार्ग दिखा दो।।नाम.।।941।।

ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आप्त' यथारथ देव तुम्हीं हो।
नाथ! तपोनिधि दो सुखदाता।।नाम.।।942।।

ॐ ह्रीं आप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वागीश्वर' दिव्यधुनी के।
लोल तरंग वचोऽमृत गंगा।।नाम.।।943।।

ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'श्रेयान्' प्रभो! श्रिय दाता।
अंतर बाहिर श्री मुझको दो।।नाम.।।944।।

ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रायसउक्ति' हितंकर वाणी।
नाथ! मुझे निज रत्नत्रयी दो।।नाम.।।945।।

ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थकवाच 'निरुक्तवाक्' हो।
आप धुनी मन शांति करेगी।।नाम.।।946।।

ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रवक्ता' श्रेष्ठ वचों से।
धर्मसुधा बरसा जन तोषा।।नाम.।।947।।

ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! तुम्हीं 'वचसामिश' मानें।
धर्म वचन के ईश्वर ही हो।।नाम.।।948।।

ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मारजीता' प्रभु कामजयी हो।
सर्व मनोरथ पूर्ण करो जी।।नाम.।।949।।

ॐ ह्रीं मारजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वभाववित्' तीन जगत् को।
जान लिया मुझ ज्ञान सुधा दो।।नाम.।।950।।

ॐ ह्रीं विश्वभावविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–त्रिभंगी छंद–

हे नाथ 'सुतनु' हो, उत्तमतनु हो, अतिशय दीप्ती, धारक हो।
हन आधी व्याधी, मेट उपाधी, पूर्ण निरामय कारक हो।।
प्रभु नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।951।।

ॐ ह्रीं सुतनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु देहरहित हो, ज्ञानदेह हो, 'तनुनिर्मुक्त' कहाते हो।
तनु बंधन काटूं, अघ अरि पाटूं, भवितनुमल, को नाशे हो।।प्रभु.।।952।।

ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगत' तुम्हीं हो, अधर गमन हो, आत्मरूप में लीन रहे।
मुझ सुगति करोगे, सौख्य भरोगे, दो शक्ति शिवमार्ग लहें।।प्रभु.।।953।।

ॐ ह्रीं सुगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु'हतदुर्नय' हो, स्वयं सुनय हो, मिथ्यानय को दूर किया।
जो नहिं निरपेक्षी, नित सापेक्षी, सम्यक्नय का कथन किया।।प्रभु.।।954।।

ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'श्रीश' हो, मुक्ति ईश हो, अंतर बाहिर लक्ष्मी से।
श्री आदि देवियां, मात सेविया, तुम महिमा सुर भक्ती से।।
प्रभु नाममंत्र तुम, अतिशय उत्तम, जो जन पूजें भक्ति करें।
सब आपद टालें, संपति पालें, निज आतम में तृप्ति धरें।।955।।

ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री-लक्ष्मी सेवित, चरणकमलयुग, प्रभु 'श्रीश्रितपादाब्ज' तुम्हीं।
धन लक्ष्मी इच्छुक, भविजन अर्चत, सभी सौख्य श्री देत तुम्हीं।।
प्रभु.।।956।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'वीतभी', प्राप्त अभयधी, भविजन को निर्भीक करो।
हत जन्म मरण भय, शिवपद निर्भय, देकर मुझभय शीघ्र हरो।।
प्रभु. ।।957।।

ॐ ह्रीं वीतभिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन 'अभयंकर' जग क्षेमंकर, भव्य हितंकर आप कहे।
मेरे दुख टारो, भव निरवारो, मुझ आत्मा निज सौख्य लहे।।
प्रभु. ।।958।।

ॐ ह्रीं अभयंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उत्सन्नादोष' हो, रत्नकोश हो, सब दोषों को दूर किया।
मुझ दोष दूर हों, सौख्य पूर हो, इस आशा से शरण लिया।।
प्रभु.।।959।।

ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विघ्न विरहिते, मंगल सहिते, कर्म हते, निर्विघ्न भये।
मुझ शिवमारग में, दिन प्रतिदिन में, विघन घने, तुम जजत गये।।
प्रभु.।।960।।

ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अतिशय सुस्थिर, ज्ञान चराचर, मुनिगण 'निश्चल' तुमहिं कहें।
मुझ चित्त विमल हो, ध्यान अचल हो, पद भी निश्चल, शीघ्र लहें।।
प्रभु.।।961।।

ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमपद प्रीती, सुद्रुण नीती, हरत अनीती, प्रेम भरे।
तुम 'लोकसुवत्सल', हरत करममल, भरत महाबल, नेह धरें।।
प्रभु.।।962।।

ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'लोकोत्तर' सर्व अनुत्तर, नमत सुरासुर, भविक भजें।
जो तुमपद ध्यावें, निज सुख पावें, कर्म नशावें, सुगुण सजें।।
प्रभु.।।963।।

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकपति' हो, त्रिजग अधिप हो, भवि रक्षक हो, त्रिभुवन में।
अतिशय सुखदाता, हरत असाता, मोक्ष विधाता, मुनिगण में।।
प्रभु.।।964।।

ॐ ह्रीं लोकपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भविक नयन हो, 'लोकचक्षु' हो, जगत लखत हो, प्रतिक्षण में।
मुझ ज्ञाननेत्र दो, भ्रम तमहर दो, निज रुचि भर दो, रग रग में।।
प्रभु.।।965।।

ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'अपारधी', अनवधिबुद्धी, हरत कुबुद्धी, ज्ञानमयी।
मुझ कुमति हटा दो, सुमति बढ़ा दो, मोह मिटा दो, दुःखमयी।।
प्रभु.।।966।।

ॐ ह्रीं अपारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'धीरधी' सुस्थिर बुद्धी, अतुलित बुद्धी, महामना।
मुझ ज्ञान विमल हो, सौख्य अमल हो, जन्म सफल हो, धर्मघना।।
प्रभु.।।967।।

ॐ ह्रीं धीरधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भवदधि पारग, भवि शिवमारग, आप 'बुद्धसन्मार्ग' कहे।
पथ स्वयं चले हो, कहत भले हो, तुमसे ही, जन मार्ग लहें।।
प्रभु.।।968।।

ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'शुद्ध' हो, स्वात्मसिद्ध हो, भविजन शुद्ध, बने तुमसे।
मुझ कलिमल नाशो, आत्म प्रकाशो, मन में भासो, नमुं रुचि से।।
प्रभु.।।969।।

ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सत्यपवित्रा, वचन धरित्रा, 'सत्यसूनृतवाक्' तुम्हीं।
तुम वचन औषधी, सर्व औषधी, मेटत जामन मरण मही।।
प्रभु.।।970।।

ॐ ह्रीं सत्यसूनृतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरमसीम पे, बुद्धी पहुँचे, 'प्रज्ञापारमिता' तुम हो।
मुझ ज्ञान अल्पश्रुत, बने पूर्ण श्रुत, ज्ञान ध्यान शिव कारक हो।।
प्रभु.।।971।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राज्ञ' कहाये, मोह नशाये, सुरगण गायें, गुण नित ही।
मुझ विद्यादाता, दो सुखसाता, हरो असाता, हो सुख ही।।
प्रभु.।।972।।

ॐ ह्रीं प्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विषय विरत हो, स्वात्म निरत हो, महाव्रतिक हो, 'यति' तुमही।
इंद्रिय विषयन को, कषाय गण को, दूर करो जो, दुखद मही।।
प्रभु.।।973।।

ॐ ह्रीं यतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु!'नियमिइंद्रिय' जित पण इंद्रिय, जीत लिया हिय, जिन तुमही।
मुझ इंद्रिय मन की, जीतन शक्ती, दीजे युक्ती, नमित मही।।
प्रभु.।।974।।

ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन् ! 'भदंत' तुम, पूज्य कहें मुनि, सुरनर यतिगण, तुम वंदे।
हम तज बहिरात्मा, अंतर आत्मा, हों परमात्मा गुण मंडे।।
प्रभु.।।975।।

ॐ ह्रीं भदंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पृथ्वी छंद-

प्रभो! तुमहिं 'भद्रकृत्' सकल लोक कल्याणकृत्।
नमूँ अतुल भक्ति से त्वरित सौख्य दीजे मुझे।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।976।।

ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमहिं 'भद्र' हो सकल जीव श्रेयस् करो।
अमंगल हरो सदा अखिल विश्व मंगल करो।।जजूँ.।।977।।

ॐ ह्रीं भद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुमहिं 'कल्पवृक्ष' मन चाहि वांछा भरो।
अतः सकल भव्यजीत नित भक्ति से पूजते।।जजूँ.।।978।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वरप्रद' जिनेशा एक वरदान दे दीजियें
मिले तुरत सिद्धिधाम बस और ना चाहिये।।जजूँ.।।979।।

ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! यम नाश के 'समुन्मूलिता कर्म अरि' हो।
उखाड़ जड़मूल से करम शत्रु नाशा तुम्हीं।।जजूँ.।।980।।

ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! तुम 'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणी' लोक में।
समस्त अठ कर्म इंधन जलावते अग्नि हो।।जजूँ.।।981।।

ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त शिव कार्य में निपुण आप 'कर्मण्य' हो।
प्रभो! निमित्त आप पाय सब कार्य मेरे बनें।।जजूँ.।।982।।

ॐ ह्रीं कर्मण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त कर्मारि के हनन में सुमामर्थ्य है।
अतेव 'कर्मठ' तुम्हीं सकल कार्य में दक्ष हो।।जजूँ.।।983।।

ॐ ह्रीं कर्मठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समर्थ प्रभु आप ही सतत 'प्रांशु' सर्वोच्च भी।
समस्त अघ नाश के सकल सौख्य संपद् भरो।।जजूँ.।।984।।
ॐ ह्रीं प्रांशवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! बस आप 'हेयआदेयवीचक्षणः'।
हिताहित विचारशील तुम सा नहीं अन्य है।।जजूँ.।।985।।
ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समस्त जग जानते प्रभु 'अनंतशक्ती' तुम्हीं।
अनंत गुण पूरिये हृदय में सदा राजिये।।जजूँ.।।986।।
ॐ ह्रीं अनंतशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न छिन्न भिन्न हों कभी प्रभु सदैव 'अच्छेद्य' हो।
मुझे स्वपर ज्ञान हो स्वयम् ही स्वयंभू बनूँ।।जजूँ.।।987।।
ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'त्रिपुरारि' हो त्रिविध कर्म को नाशके।
जरा जनम मृत्यु तीन पुर नाश कीने तुम्हीं।।जजूँ.।।988।।
ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिलोचन' त्रिकालवर्ति सब वस्तु को देखते।
जिनेन्द्र! श्रुतज्ञान से विमल स्वात्म चिंतन करूँ।।जजूँ.।।989।।
ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिनेत्र' तुम जन्म से मति श्रुतावधी ज्ञानि थे।
पुनः त्रिजग देख के सकल ज्ञानधारी भये।।जजूँ.।।990।।
ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक पितु आप 'त्र्यंबक' कहें मुनीनाथ भी।
मुझे भी प्रभु पालिये निजगुणादि से पूरिये।।जजूँ.।।991।।
ॐ ह्रीं त्र्यंबकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'त्र्यक्ष' हो सतत रत्नत्रैरूप हो।
मुझे भि त्रय रत्न दो सकल लोक स्वामी बनूँ।।जजूँ.।।992।।
ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वघाति चउ नाश 'केवलज्ञानवीक्षण' बनें।
विघात घन घाति मैं सकल ज्ञान पाऊँ प्रभो।।जजूँ.।।993।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम 'समंतभद्र' सब ओर मंगलमयी।
अमंगल हरो सभी भुवन में सुमंगल करो।।जजूँ.।।।994।।
ॐ ह्रीं समंतभद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! सकल शत्रु शांतकर आप 'शांतरि' हो।
मुझे करम शत्रु शांतकर शक्ति दे दीजिये।।जजूँ.।।995।।
ॐ ह्रीं शांतारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुधर्म संस्थाप के तुमहि, 'धर्माचार्य' हो।
प्रभो सकल विश्व में सदय[1] धर्मनेता तुम्हीं।।जजूँ.।।996।।
ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयानिधि' तुम्हीं सभी जन दया के भंडार हो।
दयालु मुझपे दया अब करो दुखी जान के।।जजूँ.।।997।।
ॐ ह्रीं दयानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पदार्थ सब सूक्ष्म भी लखत 'सूक्ष्मदर्शी' प्रभो!
मुझे अतुल शक्ति दो सकल लोक अलोक[2] लूँ।।जजूँ.।।998।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वकाम अरि-जीत के प्रभु तुम्हीं 'जितानंग' हो।
अभीप्सित सुपूरिये विषय काम को नाश के।।जजूँ.।।999।।
ॐ ह्रीं जितानंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृपालु' करके कृपा सकल पाप को नाशिये।
अनंत सुख दीजिये भुवन शीश पे थापिये।।
जजूँ सतत नाम मंत्र दुख शोक दारिद्र नशे।
मिले निकल आतमा सकल ज्ञानज्योती जगे।।1000।।
ॐ ह्रीं कृपालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1.दया सहित। 2. देख लूँ।

जिनेन्द्र! भुवि 'धर्मदेशक' तुम्हीं सुधर्माब्धि हो।
मुझे स्वपर भेदज्ञानमय धर्म दीजे अबे।।जजूँ.।।1001।।
ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभंयु' शुभ युक्त हो प्रभु सुखामृताम्भोधि हो।
मुझे शुभमयी करो तुरत शुद्ध आत्मा बने।।जजूँ.।।1002।।
ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! 'सुखसाद्भूत' अनुपं सुखाधीन हो।
अनंत सुख दो मुझे गुणसमूह से पूर्ण जो।।जजूँ.।।1003।।
ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश! तुम 'पुण्यराशि' शुभ पुण्य भंडार हो।
पवित्र निज को किया मुझ पवित्र आत्मा करो।।जजूँ.।।1004।।
ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनामय' प्रभो! तुम्हें सकल व्याधि पीड़ा नहीं।
समस्त तनु रोग नाश भव व्याधि मेरी हरो।।जजूँ.।।1005।।
ॐ ह्रीं अनामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेन्द्र! तुम 'धर्मपाल' जिन धर्म को रक्षते।
अनंत जिनधर्म हे हृदय में विराजो सदा।।जजूँ.।।1006।।
ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'जगत्पाल' हो भुवन प्राणि को रक्षते।
मुझे सतत रक्षिये जगपते! मनोरक्ष हो।।जजूँ.।।1007।।
ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स0वाहा।

जिनेन्द्र! जगमध्य 'धर्मसाम्राजनायक' तुम्हीं।
सुमोक्षप्रद सार्वभौम जिनधर्म के ईश हो।।जजूँ.।।1008।।
ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-शंभु छंद-

दिग्वासादिक नाम एक सौ, आठ आपके सुरपति गाते।
नाममंत्र को मन में ध्याकर, योगीजन निज संपति पाते।।

मैं भी प्रतिक्षण नाममंत्र को, हृदय कमल में धारण कर लूँ।
प्रभु ऐसी दो शक्ती मुझको, तुम भक्ती से भवदधि तर लूँ।।10।।
ॐ ह्रीं दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनामभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य-**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

-दोहा-

घाति चतुष्टय घातकर, प्रभु तुम हुए कृतार्थ।
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....

प्रभु दर्श मोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्रमोह का विनाश आपने किया।
क्षायिक चारित्र नाम यथाख्यात को लिया।।2।।

संपूर्ण ज्ञानावरण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनन्ता।
सब लोक औ अलोक को लखते हो तुरन्ता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम कैवल्य दान जो।।
लाभांतराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंत लाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परम शुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
कुछ हीन पूर्व कोटि वर्ष तक टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदक वृष्टि शोभ हैं।।
पद के तले वर पद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्यशीत पवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अंतराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चमर तरू अशोक हैं।
सुरदुंदुभी भाचक्र दिव्य-ध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनन्त्य वीर्य हैं।
होते न कभी श्रांत आप महावीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

प्रभु आप सर्वशक्तिमान कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहाँ मैं दिया धरना।।
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये यदि मानिये अरजी।।9।।

-दोहा-

गुण समुद्र के गुण रतन, को गिन पावे पार।
मात्र अल्पमती मैं पुनः, क्या कह सकूँ अबार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य दिग्वाससादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ज्ञानमती से जिनगुणसकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-15

श्री ऋषभदेव सिद्ध भगवान पूजा

अथ स्थापना

(तर्ज–ऐ माँ तेरी सूरत....)

शिवतरु की जड़ सम्यग्दर्शन, इस बिना मोक्षफल क्या होगा।
भगवान्! तुम्हारी भक्ती से, बढ़ करके मोक्षपथ क्या होगा।।टेक.।।
भक्ती ही तो समकित, निश्चय व्यवहार द्विविध।
स्वात्मा की श्रद्धा ही, निश्चय सम्यक्त्व सहित।।
तीर्थंकर प्रभु की श्रद्धा बिन, निश्चय समकित भी क्या होगा।भग.।।1।।

जिनपूजा सामायिक, शास्त्रोक्त विधी हो यदि।
अभिषेक सहित पूजा, इस सम नहिं कुछ दूजा।।
जिनपूजा बिन सामयिक व्रत, श्रावक का व्रत भी क्या होगा।।भग.।।2।।

जिनवर का आह्वानन, मन में कर अवतारण।
वसुविध करके अर्चन, पापों का हो खंडन।।
ऋषभेश्वर की भक्ती के बिन, आत्मा परमात्मा क्या होगा।।भग.।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदश्रीऋषभदेवतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टकं-शेर छंद

सरयू नदी का नीर स्वर्णभृंग में भरूँ।
ऋषभेश पाद पद्म में त्रयधार मैं करूँ।।
हे नाथ आपके गुणों की अर्चना करूँ।
निजगुण समूह हेतु आप प्रार्थना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर को घिस चंदन सुरभि लिया।
जिननाथ चरण चर्च मैं मन को सुवासिया।।
हे नाथ आपके गुणों की अर्चना करूँ।
निजगुण समूह हेतु आप प्रार्थना करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल अखंड शालि धोय थाल में भरे।
जिन अग्रपुंज धारते अखंड सुख भरें।।हे नाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब केतकी चंपा खिले खिले।
जिनपाद में चढ़ावते सम्यक्त्व गुण मिले।।हे नाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूड़ी सोहाल मालपुआ थाल भर लिये।
जिन अग्र में चढ़ाय आत्मतृप्ति कर लिये।।हे नाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप में कपूर ज्योति को जलावते।
जिन आरती करंत मोह तम भगावते।।हे नाथ.।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धूपपात्र में सुगंध धूप खेवते।
उन पाप कर्म भस्म होय आप सेवते।।हे नाथ.।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार आम संतरा मंगा लिया।
जिन अग्र में चढ़ाय श्रेष्ठ फल को पा लिया।।

हे नाथ आपके गुणों की अर्चना करूँ।
निजगुण समूह हेतु आप प्रार्थना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ्य लेय श्रेष्ठ रत्न मिलाऊँ।
जिन अग्र में चढ़ाय चित्त कमल खिलाऊँ।।हे नाथ.।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन भारती में अति पवित्र ज्ञान जल भरा।
इसमें के कुछ बूंदों को ले मन पात्र में भरा।।
प्रभु पादकमल में अभी जलधार मैं करूँ।
निज मन पवित्र होएगा यह आश मैं धरूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनगुण कथन सुमन सुगंध वर्ण वर्ण के।
उनसे करूँ पुष्पांजलि हर्षित मना होके।।
सब आधि व्याधि दूर हों धन धान्य सुख बढ़ें।
जिन पाद अर्चना से आत्म दीप्ति भी बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (8 अर्घ्य)

दोहा

प्रभु अनंत गुण के धनी, शुद्ध सिद्ध भगवंत।
मुख्य आठ गुण को नमूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

।।अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तर्ज–आवो बच्चों तुम्हें दिखायें...

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।

जय जय आदिजिनं, जय जय आदिजिनं।
जय जय आदिजिनं, जय जय आदिजिनं।।1।।

दर्शन मोहनी है त्रयविध, चार अनंतानूबंधी।
मोहकर्म को नाश जिन्होंने, पाया क्षायिक समकित भी।।
इस गुण से अगणित गुण पाये, उन गुणमणि श्रीमान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।2।।

वर्ण स्पर्श गंध रस विरहित, शुद्ध अमूर्तिक आत्मा है।
जिनने प्रगट किया निज गुण को, वे प्रबुद्ध परमात्मा हैं।।
गुण गाथा हम गायें निशदिन, ज्योतीपुंज महान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय सम्यक्त्वगुण-सहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।4।।

ज्ञानावरण कर्म को नाशा, पूर्णज्ञान प्रगटाया है।
युगपत् तीन लोक त्रयकालिक, जान ज्ञान फल पाया है।।
शत इन्द्रों से वंद्य सदा जो, उन आदर्श महान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।5।।

चौदह गुण स्थान से विरहित, शुद्ध निरंजन आत्मा है।
जिनने निज का ध्यान किया है, वे विशुद्ध सिद्धात्मा हैं।।

मुनियों से भी वंद्य सदा हैं, उन प्रभु ज्योतिर्मान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय ज्ञानगुण-सहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।7।।

सर्व दर्शनावरण घात कर, केवल दर्शन प्रगट किया।
युगपत् तीन लोक त्रैकालिक, सब पदार्थ को देख लिया।।
जिनको गणधर गुरु भी ध्याते, उन दृष्टा भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।8।।

चौदह जीव समास सहित थे, संसारी जीवात्मा हैं।
इनसे विरहित नित्य निरंजन, शुद्ध बुद्ध परमात्मा हैं।।
योगीश्वर भी वंदन करते, सर्वदर्शि भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय दर्शनगुण-सहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।10।।

अंतराय शत्रू के विजयी, शक्ति अनंती प्रगटाई।
काल अनंतानंते तक भी, तिष्ठ रहे प्रभु श्रम नाहीं।।

हम भी करते नित उपासना, अनंत शक्तीमान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।11।।

दशों द्रव्य प्राणों से प्राणी, जन्म मरण नित करता है।
निश्चयनय से शुद्ध चेतना, प्राण एक ही धरता है।।
एक प्राण के हेतु वंदना, शुद्धचेतनावान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।12।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय वीर्यगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।13।।

सूक्ष्मत्व गुण पाया जिनने, नाम कर्म का नाश किया।
सूक्ष्म और अंतरित दूरवर्ती, पदार्थ को जान लिया।।
योगीश्वर के ध्यानगम्य जो, अचिन्त्य महिमावान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।14।।

आहारेन्द्रिय आयू श्वासोच्छ्वास वचन मन पर्याप्ती।
इनसे विरहित शुद्ध चिदात्मा, में असंख्य गुण की व्याप्ती।।
मुनि के हृदय कमल में तिष्ठें, उन गुणरत्न निधान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।15।।

ॐ ह्रीं नामकर्मविनाशकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय सूक्ष्मगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।16।।

आयु कर्म से शून्य जिन्होंने, अवगाहन गुण पाया है।
जिनमें सिद्ध अनंतानंतों, ने अवगाहन पाया है।।
भविजन कमल खिलाते हैं जो, उन अतुल्य भास्वान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।7।।

संज्ञा हैं आहार व भय, मैथुन परिग्रह संसार में।
इनसे शून्य सिद्ध परमात्मा, तृप्त ज्ञान आहार में।।
सिद्धों का वंदन जो करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।18।।

ॐ ह्रीं आयुकर्मविनाशकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय अवगाहनगुण-सहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।19।।

ऊँच नीच विध गोत्रकर्म को, ध्यान अग्नि में भस्म किया।
अगुरुलघु गुण से अनंत युग, तक निज में विश्राम किया।।
त्रिभुवन के गुरु माने हैं जो, उन अविचल गुणवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।20।।

चतुर्गती के नाना दुःखों, से जो जन अकुलाये हैं।
वे ही पूजा भक्ती करने, चरणशरण में आये हैं।।

मैं भी भक्ती करके छूटूँ, उन श्रीसिद्ध महान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।21।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय अगुरुलघुगुणसहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।22।।

सात असाता द्विविध वेदनी, ध्यान अग्नि से जला दिया।
अव्याबाध सुखामृत पीकर, निज से निज को तृप्त किया।।
भक्ति नाव से भव्य तिरें जो, उन शुद्धात्म महान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।23।।

शारीरिक मानस आगंतुक, नाना दुःख उठाये हैं।
जो इन दुःखों से विरहित हैं, शरण उन्हीं की आये हैं।।
स्वात्म सुखामृत पीने हेतू, शरण सिद्ध भगवान की।
सिद्धशिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।24।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्मविघातकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय अब्याबाधगुण-सहिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पूर्णार्घ्य

आओ हम सब करें अर्चना, ऋषभदेव भगवान की।
सिद्ध शिला पर राज रहें जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।25।।

शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर, आठ कर्म को भस्म किया।
केवलज्ञान सूर्य को पाकर, आठ गुणों को व्यक्त किया।।

सिद्धों का जो वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्ध शिला पर तिष्ठ रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।26।।

यह अपार भवसागर भव्यों, दुःखी नीर से भरा हुआ।
इसको पार करें हम सब जन, भक्ति नाव अवलम्ब लिया।।
सिद्धों का जो वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
सिद्ध शिला पर तिष्ठ रहे जो, उन अनंत गुणखान की।।
जय जय आदिजिनं-4।।27।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशकाय तथैवकर्मनाशनशक्तिप्रदाय सम्यक्त्वादिप्रमुख-अष्टसिद्धगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।**
2. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवाय नमः। (दोनों में से कोई एक मंत्र जपें)
(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से 108 या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

दोहा

भूत भावि तीर्थेश की, चौबीसी आनन्त्य।
पुरी अयोध्या में कही, नमूँ नमूँ जगवंद्य।।1।।

शेर छंद

जय जय श्रीपुरुदेव नाभिराय के नंदा।
जय जय युगादिदेवदेव प्रथम जिनंदा।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
जिनधर्म निधि पाय मैं धनवान हो गया।।1।।टेक.।।

प्रभु आपने जीने की कला सबको सिखायी।
असि मषि कृषि वाणिज्य आदिक्रिया बताई।।हे नाथ.।।2।।

ब्राह्मी व सुन्दरी को विद्याध्ययन कराया।
ब्राह्मी लिपी व गणित ज्ञान जगत ने पाया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
जिनधर्म निधि पाय मैं धनवान हो गया।।3।।

सब पुत्र को सम्पूर्ण विद्या दान दिया था।
राजा बना के राजनीति ज्ञान दिया था।।हे नाथ.।।4।।

नीलांजना के नृत्य से विरक्त हुये थे।
माता-पिता परिवार सभी त्याग दिये थे।।हे नाथ.।।5।।

रानी यशस्वती सुनंदा को भी तजा था।
सुत इक सौ एक दो सुताओं को भी तजा था।।हे नाथ.।।6।।

प्रभु सिद्ध की साक्षी से मुनिनाथ हुये थे।
इक सहस वर्ष बाद केवलज्ञानि हुये थे।।हे नाथ.।।7।।

प्रभु के समवसरण में थीं बारह सभा बनीं।
जिसमें असंख्य भव्य सुन रहे थे जिनध्वनी।।हे नाथ.।।8।।

श्री ऋषभसेन आदी गणधर थे चौरासी।
मुनिराज चौरासी हजार, स्वात्म विकासी।।हे नाथ.।।9।।

ब्राह्मी प्रमुख गणिनी थीं, आर्यिकाओं में प्रथम।
थीं साढ़े तीन लाख आर्यिकायें स्वच्छमन।।हे नाथ.।।10।।

त्रयलाख सु श्रावक व पाँच लाख श्राविका।
चक्री भरत सम्राट वहाँ मुख्य थे श्रोता।।हे नाथ.।।11।।

जो चार सहस नृपति दीक्षा भ्रष्ट हुये थे।
वे तुम शरण में आके शुद्ध स्वस्थ हुये थे।।हे नाथ.।।12।।

जो थे मरीचि भ्रष्ट अन्त्य तीर्थंकर हुये।
प्रभु देशना परम्परा से वीर बन गये।।हे नाथ.।।13।।

प्रभु आप ही अनंतानंत गुणों के धनी।
प्रभु लोक औ अलोक के द्रष्टा कहें मुनी।।हे नाथ.।।14।।

वर ज्ञानदर्श सौख्य वीर्य अगुरुलघु थे।
अवगाहना सूक्ष्मत्व अव्याबाध सुगुण थे।।हे नाथ.।।15।।
इन आठ गुण से आप सिद्धिनाथ कहाये।
पुनरागमन से रहित त्रिजगनाथ कहाये।।हे नाथ.।।16।।

सब अतिशयों से पूर्ण दोषशून्य ईश हो।
ब्रह्मा महेश विष्णु नमाते हैं शीश को।।हे नाथ.।।17।।

प्रभु आप कीर्ति आज सर्व ग्रन्थ गा रहे।
तुम भक्ति से समस्त इष्ट सिद्धि पा रहे।।हे नाथ.।।18।।

हे नाथ! इसी हेतु आप शरण में आया।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' हेतु माथ नमाया।।हे नाथ.।।19।।

दोहा

नाथ! आप गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

-दोहा-

तीनलोक की सम्पदा, करें हस्तगत भव्य।
तुम जयमाला कंठधर, पूरें सब कर्तव्य।।1।।

चाल-हे दीनबंधु....

जैवंत मुक्तिकन्त देवदेव हमारे।
जैवंत भक्त जन्तु भवोदधि से उबारे।।
हे नाथ! आप जन्म के छह मास ही पहले।
धनराज रत्नवृष्टि करें मातु के महले।।1।।
माता की सेव करतीं श्री आदि देवियाँ।
अद्भुत अपूर्व भाव धरें सर्व देवियाँ।।
जब आप मात गर्भ में अवतार धारते।
तब इन्द्र सपरिवार आय भक्ति भार से।।2।।
प्रभु गर्भ कल्याणक महाउत्सव विधि करें।
माता पिता की भक्ति से पूजन विधी करें।।
हे नाथ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठे।
इन्द्रासनों के कम्प से आश्चर्य हो उठे।।3।।
इन्द्रों के मुकुट आप से ही आप झुके हैं।
सुरकल्पवृक्ष हर्ष से ही फूल उठे हैं।।
वे सुरतरु स्वयमेव सुमन वृष्टि करे हैं।
तब इन्द्र आप जन्म जान हर्ष भरे हैं।।4।।
तत्काल इन्द्र सिंहपीठ से उतर पड़ें।
प्रभु को प्रणाम करके बार-बार पग पड़ें।।
भेरी करा सब देव का आह्वान करे हैं।
जन्माभिषेक करने का उत्साह भरे हैं।।5।।
सुरराज आ जिनराज को सुरशैल ले जाते।
सुरगण असंख्य मिल के, महोत्सव को मनाते।।

जब आप हो विरक्त देव सर्व आवते।
दीक्षा विधी उत्सव महामुद से मनावते।।6।।
जब घातिया को घात ज्ञान सम्पदा भरें।
तब इन्द्र आ अद्भुत समवसरण विभव करें।।
तुम दिव्य वच पियूष को पीते असंख्यजन।
क्रम से करें वे मुक्ति वल्लभा का आलिंगन।।7।।
जब आप मृत्यु जीत मुक्ति धाम में बसे।
सिद्धयंगना के साथ परमानन्द सुख चखें।।
सब इन्द्र आ निर्वाण महोत्सव मनावते।
प्रभु पंचकल्याणक पती को शीश नावते।।8।।
हे नाथ! आप कीर्ति कोटि ग्रंथ गा रहे।
इस हेतु से ही भव्य आप शरण आ रहे।।
मैं आप शरण पाय के सचमुच कृतार्थ हूँ।
बस 'ज्ञानमती' पूर्ण होने तक ही दास हूँ।।9।।

-दोहा-

पाँच कल्याणक पुण्यमय, हुए आपके नाथ।
बस एकहि कल्याण मुझ, कर दीजे हे नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकराय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद

जो भव्य ऋषभदेव का विधान यह करें।
सम्पूर्ण अमंगल व रोग शोक दुख हरें।।
अतिशायि पुण्य प्राप्त कर ईप्सित सफल करें।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' से जिनगुण सकल भरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

शंभु छंद

हे ऋषभदेव! हे वृषभनाथ! हे आदिनाथ! पुरुदेव! नमन।
ये नाम प्रसिद्ध आपके फिर भी, तुम्हीं आदि ब्रह्मा भगवन्।।
प्रभु तृतिय काल के अंत में ही, तुम जन्मे उसमें मोक्ष गये।
थी वर्ष चौरासी लाख पूर्व, आयू पहले तीर्थेश हुये।।1।।

साढ़े उनतालिश सहस्र वर्ष, कम इक कोड़ाकोड़ी सागर।
यह चौथा काल व्यतीत हुआ, अब पंचमकाल कहा दुष्कर।।
इसमें चौरासी लाख पूर्व, वर्षों को और मिलाने से।
हो गया ऋषभजिन को इतना, यह समय आज जब जन्में थे।।2।।

जब चौथे काल में तीन वर्ष, साढ़े अठ मास थे शेष बचे।
तब वीर प्रभू निर्वाण गये, अतएव वीर प्रभु शासन ये।।
जब पंचमकाल में इतना ही, अवशेष काल रह जायेगा।
तब तक जिनधर्म अविच्छिन्न, वीरागंज मुनि तक जायेगा।।3।।

श्री वीर प्रभू के शासन में, श्रीकुन्दकुन्द आचार्य हुये।
श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ, गण बलात्कार में मान्य हुये।।
इस परम्परा में चरित चक्रि, श्री शांतिसागराचार्य हुये।
इनके ही प्रथम शिष्य पट्टाधिप, वीरसागराचार्य हुये।।4।।

इनकी शिष्या मैं ज्ञानमती, आर्यिका महाव्रति गणिनी हूँ।
जिनभक्ती से बहुविध विधान, रचना करके भवहरणी हूँ।।
श्रीवीरनिर्वृति संवत् पचीस सौ, उन्निस शरद् पूर्णिमा दिन।
श्री ऋषभदेव पूजन विधान, मैं पूर्ण किया अतिशय उत्तम।।5।।

यह तीर्थ अयोध्या महातीर्थ, यहाँ ऋषभदेव जिन आलय है।
ऊँची इकतिस फुट प्रतिमा है, यहँ मंदिर भव्य सुखालय है।।
जिनमंदिर निकट वसतिका में, था वर्षायोग मेरा सुखप्रद।
त्रय चौबीसी जिन समवसरण, दो मंदिर के निर्माण सुखद।।6।।

इक दिन ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार ने, आग्रह किया यहाँ मुझसे।
श्री ऋषभदेव मण्डल विधान, रचिये आदीश्वर भक्ती से।।
मैंने भी ऋषभदेव प्रणमन, करके विधान प्रारम्भ किया।
छ्यालिस गुण अठारह दोष रहित, श्रीऋषभदेव की शरण लिया।।7।।

चौरासी गणधर गुरुओं से, वंदित जिनचरणों का वंदन।
वर सिद्ध अष्ट गुण के स्वामी, गुणमुख्य आठ से किया यजन।।
फिर वीर संवत् पच्चीस शतक, व्यालिस मांगीतुंगी गिरि पर।
ऋषभेश्वर की एक शतक आठ, फुट ऊँची जिनप्रतिमा सुंदर।।8।।

इनका है पंचकल्याण महा, मस्तकाभिषेक महिमाशाली।
इसही विधान को वृहत् किया, स्वरचित कृति से गुणमणिमाली।।
मुनिगण पूजन गणिनी आर्यिका, पूजन व सहस्रनाम पूजन।
बारह सौ उनसठ अर्घ्य हुये, पूर्णार्घ्य इक्कीस किये उत्तम।।9।।

जयमालाएं सोलह सुंदर हैं यह वृहत् विधान बना सुन्दर।
यह महापुण्यकारी अतिशयकारी होवेगा जन मनहर।।
जब तक जिनशासन इस जग में, सब भविजन मन आनंद भरे।
तब तक मुझ गणिनी ज्ञानमती, कृति भक्तों की सब सिद्धि करे।।10।।

-दोहा-

मगसिर सुदि चौदश तिथी, अर जिनवर का जन्म।
वृहत् विधान को पूर्ण कर, किया धन्य निज जन्म।।1।।

निन्यानवें करोड़ मुनि, पाया पद निर्वाण।
मांगीतुंगी क्षेत्र से, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।2।।

इक सौ आठ फुट के यहाँ, ऋषभदेव भगवान।
तीर्थंकर को नित नमूँ, मिले स्वातम स्थान।।3।।

।।इति श्री ऋषभदेववृहत्विधानं संपूर्ण।।

इति शं भूयात्

भगवान श्री ऋषभदेव की आरती

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–क्या खूब दिखती हो.....

प्रभु आरति करने से, सब आरत टलते हैं।
जनम-जनम के पाप सभी, इक क्षण में टलते हैं।
मन-मंदिर में ज्ञानज्योति के दीपक जलते हैं।।प्रभु.।।टेक.।।

श्री ऋभषदेव जब जन्में-हां-हां जन्में, कुछ क्षण को भी शांति हुई नरकों में।
स्वर्गों से इन्द्र भी आए....हां-हां आए, प्रभु जन्मोत्सव में खुशियां खूब मनाएं।।
ऐसे प्रभु की आरति से, सब आरत टलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।1।।

धन-धन्य अयोध्या नगरी-हां-हां नगरी, पन्द्रह महीने जहां हुई रतन की वृष्टी।
हुई धन्य मात मरूदेवी-हां-हां देवी, जिनकी सेवा करने आईं सुरदेवी।।
उन जिनवर के दर्शन से सब पातक टलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।2।।

सुख भोगे बनकर राजा-हां-हां राजा, वैराग्य हुआ तो राजपाट सब त्यागा।
मांगी तब पितु से आज्ञा-हां-हां आज्ञा, निज पुत्र भरत को बना अवध का राजा।।
वृषभेश्वर जिन के दर्शन से, सब सुख मिलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।3।।

इक नहीं अनेकों राजा-हां-हां राजा, 'चंदनामती' प्रभु संग बने महाराजा।
प्रभु हस्तिनागपुर पहुंचे-हां-हां पहुंचे, आहार प्रथम हुआ था श्रेयांस महल में।।
पंचाश्चर्य रतन उनके महलों में बरसते हैं।।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।4।।

तपकर कैवल्य को पाया-हां-हां पाया, तब धनपति ने समवसरण रचवाया।
फिर शिवलक्ष्मी को पाया-हां-हां पाया, कैलाशगिरि पर ऐसा ध्यान लगाया।।
दीप जला आरति करने से आरत टलते हैं।
मन मंदिर में ज्ञानज्योति.....।।प्रभु.।।5।।

श्री ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ की मंगल आरती

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे .....

आरती तीर्थ अयोध्या की-2
तीर्थंकरों की, जन्मभूमि यह, सब मिल करो आरतिया।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।टेक.।।

शाश्वत यह पुरी अयोध्या, जग में जानी जाती है।
सम्मेदशिखर के सदृश, पावन मानी जाती है।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।1।।

यूं तो इस भू पर सारे, तीर्थंकर सदा जनमते।
लेकिन इस युग में जन्में, तीर्थंकर पंच परम थे।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।2।।

श्री ऋषभ अजित अभिनंदन, सुमती अनंत जी जन्मे।
उन्नीस शेष तीर्थंकर, सब अलग-अलग ही जन्मे।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।3।।

तीरथ की पावन रज को, मस्तक पर धारण कर लो।
इसकी आरति कर अपने, कष्टों का निवारण कर लो।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।4।।

आदीश्वर की खड्गासन, प्रतिमा को नमन करें हम।
''चंदनामती'' इस शाश्वत, तीरथ को नमन करें हम।।
आरती तीर्थ अयोध्या की।।5।।

आरती ऋषभगिरि मांगीतुंगी तीर्थ की

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

आरति करो रे,
श्री ऋषभगिरि मांगीतुंगी की आरति करो रे।।टेक.।।

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी प्राचीनकाल से तीरथ है।
निन्यानवे कोटि मुनि के निर्वाण से पावन कीरत है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
निन्यानवे कोटि महामुनियों की आरति करो रे।।1।।

इस तीरथ पर जब से गणिनी ज्ञानमती के चरण पड़े।
उनकी पुण्य प्रेरणा से श्री ऋषभदेव भगवान बने।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री ऋषभगिरि के ऋषभदेव की आरति करो रे।।2।।

विश्व की सबसे बड़ी मूर्ति प्रभु ऋषभदेव की राज रही।
सूर्योदय की प्रथम किरण से प्रभु छवि स्वर्णिम भास रही।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
''चन्दनामती'' उस स्वर्णिम छवि की आरति करो रे।।3।।

भजन

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामतीी

तर्ज-देख तेरे संसार.....

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनी है आलीशान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।टेक.।।
मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में।
पर्वत के पाषाण खण्ड में।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता की प्रेरणा महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।1।।
ऋषभदेव प्रतिमा प्रगटी है।
गुरुमाता की तपशक्ती है।।
उनका गौरवमय ससंघ सानिध्य मिला है महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।2।।
इक सौ अठ फुट की यह प्रतिमा।
जिनशासन की अद्भुत गरिमा।।
यह आश्चर्य प्रथम है जग में जैनधरम की शान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।3।।
यह है आयडल ऑफ अहिंसा।
भारत की पहचान अहिंसा।।
इसे ''चन्दनामती'' हृदय से कर लो सभी प्रणाम,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।4।।
श्री रवीन्द्रकीर्ति का समर्पण।
भक्तों का अर्थाञ्जलि अर्पण।।
अमर रहेगा युग युग तक सबका तन मन धन दान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।5।।

भजन

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–सारे जग का तू सरताज .....

सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा, सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा।
सबसे ऊँची तेरी प्रतिमा, मांगीतुंगी तीर्थ की महिमा,
बढ़ गई ज्ञानमती की गरिमा।।सारे.।।
तीर्थंकर प्रथम इस धरा के हो तुम।
कर्मयुग के प्रभो आदिब्रह्मा हो तुम।।
तुमने मोक्षमार्ग बतलाया, जग को जीवनकला सिखाया,
आदिब्रह्मा तू कहलाया।।सारे.।।1।।
मांगीतुंगी में प्रतिमा तेरी बन गई।
ज्ञानमति माता की प्रेरणा मिल गई।।
दुनिया भर में सबसे ऊँची, मूरति देखो बनी अनूठी,
इनसे सुन्दर छवी न दूजी।।सारे.।।2।।
बड़ी प्रतिमा की सब ओर जयकार है।
नाभिनन्दन को मेरा नमस्कार है।।
बढ़ गई जिनशासन की कीरत, धन्य है मांगीतुंगी तीरथ,
बन गई तेरी सुंदर मूरत।।सारे.।।3।।
युग युगों तक अमर जैनशासन हुआ।
'चन्दनामती' अमर जैन आगम हुआ।।
आगम का प्रमाण दरशाया, मूर्ति सांगोपांग बनाया,
जैनीध्वज नभ में लहराया।।सारे.।।4।।

भजन

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–जब से प्रभु दर्श मिला.....

सबसे बड़ी मूर्ति का, मांगीतुंगी तीर्थ का,
दुनिया में नाम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो गया है।।टेक.।।
ऋषभदेव प्रभुजी की प्रतिमा-2।
बन गई धरा की यह गरिमा-2।।
जैन संस्कृति की धरोहर-2।
हो गई यह सचमुच मनोहर-2।।
देखो जा के पास में, भक्ति लेके साथ में,
ऋषभगिरि नाम हो गया है, मूर्ति का निर्माण हो गया है।।1।।
गणिनी माता ज्ञानमती जी-2।
प्रेरणा मिली है उन्हीं की-2।।
भक्त सभी, उसमें जुट पड़े-2।
सबके भाव दान में बढ़े-2।।
तुम भी प्रभु का ध्यान करो, मूर्ति का गुणगान करो,
सबसे बड़ा काम हो गया है, मूर्ति का निर्माण हो गया है।।2।।
प्रतिमा इक सौ, आठ फुट की है-2।
विश्व की अनमोल यह कृती है-2।।
भाव है ये ''चन्दनामती''-2।
इच्छाएं हो सबकी पूर्ती-2।।
हुई प्रतिष्ठा ठाठ से, हम सभी के साथ में,
गौरव महान हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो गया है।।3।।